सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 125, नई दिल्ली, सोमवार 14 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन बदलने के लिए लड़ना पड़ता है और आसान करने के लिए जीवन को समझना जरूरी है।

03 क्रॉम्पटन ने एमियो फ्रेश न्यूट्री ब्लेंडर लॉन्च किया

06 भारत में परिवार नियोजनः युगल-केंद्रित रणनीतियों की आवश्यकता

08 सरकारी वाहन चलाने वाली पहली महिला चालक बन गई हैं

दिल्ली से मेरठ अब सिर्फ 60 मिनट में पहुंचे सराय काले खां से जल्द रफ्तार भरेगी नमो भारत ट्रेन

संजय बाटला

देश की पहली रीजनल रैपिड रेल सेवा नमो भारत अब दिल्ली से मेरठ तक चलने के लिए तैयार है। कॉरिडोर का फिनिशिंग कार्य लगभग पूरा हो चुका है और ट्रायल रन भी सफलतापूर्वक पूर्ण किए गए हैं। सराय काले खां स्टेशन को हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से जोड़ने के लिए एफओबी का निर्माण किया जा रहा है। उम्मीद है कि जल्द ही यह सेवा शुरू हो जाएगी।

नई दिल्ली। देश की पहली रीजनल रैपिड रेल सेवा नमो भारत अब दिल्ली से मेरठ तक 82 किमी लंबे कॉरिडोर पर दौड़ने के लिए तैयार है। वर्तमान में नमो भारत ट्रेनें दिल्ली के न्यू अशोक नगर से मेरठ साउथ तक 55 किमी के खंड में 11 स्टेशनों पर परिचालित हैं।

कॉरिडोर के अपरिचालित खंड में दिल्ली में सराय काले खां और न्यू अशोक नगर के बीच 4.5 किमी का हिस्सा एवं मेरठ में मेरठ साउथ से मोदीपुरम के बीच लगभग 23 किमी का हिस्सा शामिल है। कॉरिडोर के इस हिस्से पर फिनिशिंग का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। ट्रायल रन भी सफलतापूर्वक पूर्ण किए जा चुके हैं। इसके साथ ही ट्रायल रन वाले खंड के कुछ हिस्से में सुरक्षा निरीक्षण भी पूर्ण हो गए हैं और बाकी हिस्से में निरंतर चल रहे हैं।

सराय काले खां दिल्ली-गाजियाबाद कॉरिडोर का पहला स्टेशन

सराय काले खां नमो भारत स्टेशन दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ कॉरिडोर का पहला स्टेशन है, जहां सिविल निर्माण, एस्केलेटर, लिफ्ट और प्लेटफार्म स्क्रीन डोर (पीएसडी) आदि लगाने का कार्य पहले ही पूरा किया जा चुका है। इस समय स्टेशन के पांच प्रवेश-निकास के लिए फिनिशिंग का काम तेजी से चल रहा है।

सराय काले खां नमो भारत स्टेशन को हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से निर्बाध रूप से जोड़ने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) द्वारा 280 मीटर लंबे फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) का निर्माण भी किया जा रहा है, जिसमें छह स्वचालित ट्रैवेलेटर की सुविधा प्रदान की जाएगी। इस एफओबी का सिविल निर्माण कार्य भी लगभग पूरा हो चुका है और सभी छह ट्रैवलेटर स्थापित कर दिए गए हैं। इसकी भी फिनिशिंग का कार्य चल रहा है।

स्टेशन परिचालन के लिए पूरी तरह से तैयार

मेरठ में मेरठ साउथ स्टेशन से आगे तीन और नमो भारत स्टेशन हैं- शताब्दी नगर, बेगमपुल व मोदीपुरम। शताब्दी नगर स्टेशन करीब 215 मीटर लंबा और करीब 17 मीटर ऊंचा है। ये स्टेशन परिचालन के लिए पूरी तरह से तैयार है, जहां से नमो भारत और मेरठ मेट्रो दोनों की ही सेवाएं उपलब्ध होंगी।

एनसीआरटीसी के अधिकारियों ने बताया कि कॉरिडोर और स्टेशन सभी कुछ लगभग तैयार है। अब केवल मेट्रो रेल सुरक्षा आयुक्त से एनओसी मिलने व केंद्र सरकार से हरी झंडी आने का इंतजार है। संभावना जताई जा रही है कि जुलाई के अंतिम सप्ताह में या फिर स्वतंत्रता दिवस से पहले नमो भारत पूरे ट्रैक पर दौड़ने लगेगी। मेरठ से दिल्ली तक का सफर महज एक घंटे में पूरा हो सकेगा। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस पूरे कॉरिडोर पर नमो भारत ट्रेन के परिचालन का लक्ष्य हालांकि जून 2025 था।

दिल्ली-मेरठ कॉरिडोर की लंबाई 82 किमी

कुल नमो भारत स्टेशन- 16 (जंगपुरा-मोदीपुरम), मेरठ मेट्रो स्टेशन- 13 (मेरठ साउथ-मोदी पुरम डिपो)

परिचालित खंड की लंबाई- 55 किमी.

परिचालित स्टेशन - 11 (न्यू अशोक नगर से मेरठ साउथ)

नमो भारत ट्रेन की रफ़्तार- 160 किमी प्रति घंटा

यात्रा समय- एक घंटे से कम

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

सर्व धर्म मित्र मंडल दिल्ली प्रदेश (रजिस्टर्ड) की मांग पर क्षेत्रीय विधायक का दौरा

नई दिल्ली। दिनांक 14.07.2025,(सोमवार) की प्रातः 10.15 बजे शहीद भगत सिंह कॉलोनी मैं सिंह सभा गुरुद्वारा के सामने मार्केट में प्रातः 10.15 बजे माननीय श्री कैलाश गंगवाल जी विधायक कॉलोनी का दौरा करने के लिए आ रहे है अपने अधिकारियों के साथ। स्वागत समारोह मार्केट में निश्चित किया गया है। सभी भाई बहनों से अनुरोध है कि समय पर पहुंच अपनी अपनी समस्याओं से अवगत कराए।

निवेदक : सर्व धर्म मित्र मंडल दिल्ली प्रदेश (रजिस्टर्ड) एवं कॉलोनी के सामाजिक कार्यकर्ता

नशे में धुत ऑडी ड्राइवर ने फुटपाथ पर सो रहे पांच लोगों को कुचला, बच्ची समेत दो दंपति घायल

पुलिस अधिकारियों के अनुसार यह हादसा 9 जुलाई की रात करीब 145 बजे वसंत विहार स्थित शिवा कैंप के पास हुआ। आरोपी चालक की पहचान 40 वर्षीय उत्सव शेखर के रूप में हुई है। वह दिल्ली के द्वारका इलाके का रहने वाला है। पुलिस ने उसे घटनास्थल से ही गिरफ्तार कर लिया।

नई दिल्ली। दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के वसंत विहार इलाके में बीती रात एक दर्दनाक हादसा हुआ। आरोप है कि नशे में धुत एक ऑडी चालक ने फुटपाथ पर सो रहे पांच लोगों को अपनी कार से कुचल दिया। हादसे में दो दंपति और एक आठ साल की बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। पुलिस अधिकारियों के अनुसार यह हादसा 9 जुलाई की रात करीब 1:45 बजे वसंत विहार स्थित शिवा कैंप के पास हुआ। आरोपी चालक की पहचान 40 वर्षीय उत्सव शेखर के रूप में हुई है। वह दिल्ली के द्वारका इलाके का रहने वाला है। पुलिस ने उसे घटनास्थल से ही गिरफ्तार कर लिया।

पीएम मोदी जनता को जल्द सौंपेंगे दिल्ली-दून एक्सप्रेसवे, ये है इसकी खासियत

परिवहन विशेष न्यूज

देहरादूनः देहरादून के मोहंद से दिल्ली अक्षरधाम तक बनने वाला दिल्ली देहरादून एक्सप्रेसवे अब बनकर करीब करीब तैयार हो चुका है. यह पूरा प्रोजेक्ट 210 किलोमीटर का है. जिसके लिए अनुमानित लागत 13000 करोड़ रुपए लगाई गई थी.दिल्ली देहरादून एक्सप्रेसवे तीन राज्य दिल्ली, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड को जोड़ता है. लेकिन इस एक्सप्रेसवे की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी गणेशपुर से देहरादून तक करीब 20 किलोमीटर की सड़क है. ऐसा इसलिए क्योंकि यह एरिया फॉरेस्ट के बीचों-बीच का है, जहां एक्सप्रेसवे को तैयार करना काफी चुनौतीपूर्ण रहा है.

एक्सप्रेसवे पर तेजी से चल रहा कार्यः ईटीवी भारत संवाददाता ने दिल्ली देहरादून एक्सप्रेसवे के चौथे चरण में तैयार किए जा रहे इस पैच की स्थिति का जायजा लिया. गणेशपुर से देहरादून के बीच का यह पूरा एक्सप्रेस वे 19.5 किलोमीटर का है. यहां कुछ जगह पर काम होता हुआ दिखाई दिया. इस एक्सप्रेसवे को भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा तैयार किया जा रहा है.

कार्य का लंबे समय से पूरा होने का इंतजारः वैसे तो अगले एक महीने में इसके पूरी तरह से तैयार होने की स्थिति नहीं दिखाई दे रही है, लेकिन वैकल्पिक रूप से इसके एक हिस्से को तैयार कर लिया गया है. उधर अगले दो से तीन महीने में बचे हुए काम को भी पूरा कर लिया जाएगा. खासतौर पर उत्तराखंड इस प्रोजेक्ट के पूरी तरह से तैयार होने का लंबे समय से इंतजार कर रहा है और लगातार राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों से भी इसको लेकर बातचीत की जा रही है.

प्रदेश के लिए यह प्रोजेक्ट बेहद अहम है और इसलिए इस एक्सप्रेसवे को शुरू करने के लिए NHAI से भी बातचीत की गई थी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस एक्सप्रेसवे को जल्द आम लोगों को सौंप सकते हैं. इसके लिए प्रधानमंत्री से समय लेने को लेकर निवेदन कर दिया गया है और अगले कुछ समय में इसका उद्घाटन कर दिया जाएगा.

एक्सप्रेसवे राजाजी टाइगर रिजर्व के बीच से होकर गुजरेगाः फिलहाल देहरादून से दिल्ली तक की दूरी करीब 6 से 7 घंटे की है, लेकिन इस एक्सप्रेसवे के बनने के

बाद इस दूरी को ढाई से 3 घंटे में ही पूरा कर लिया जाएगा. यानी देहरादून से दिल्ली की दूरी केवल ढाई से 3 घंटे की ही रह जाएगी. हालांकि इस एक्सप्रेसवे की एक खास बात इसका राजाजी टाइगर रिजर्व के बीचों-बीच से होकर गुजरना भी है. बड़ी बात यह है कि राजाजी के बीच से गुजरने के बाद भी एक्सप्रेसवे को इस तरह तैयार किया जा रहा है, ताकि वन्यजीवों के विचरण में किसी तरह की कोई दिक्कत ना आए. इसके लिए इस क्षेत्र में एलिवेटेड रोड तैयार की गई है. बताया गया है कि वन्यजीवों के लिए एशिया में यह सबसे बड़ा कॉरिडोर बनाया गया है. एक्सप्रेसवे के बनने के बावजूद इसमें तैयार किए गए गलियारों से वन्य जीव आसानी से जंगल में विचरण कर सकेंगे और फर्राटा भरती गाड़ियों से इन वन्य जीवों के विचरण में कोई व्यवधान नहीं होगा.

दिल्ली तक का सफर होगा आसानः यह एक्सप्रेस वे मुख्य रूप से दिल्ली, बागपत, मुजफ्फरनगर, शामली, सहारनपुर और फिर देहरादून को जोड़ेगा. वैसे तो इसमें अधिकतर जगहों पर सिक्स लेन तैयार किए गए हैं, लेकिन भविष्य की जरूरतों के लिए इसे 8 से 12 लेन तक भी बढ़ाया जा सकता है. माना जा रहा है कि भविष्य में इस एक्सप्रेसवे के आसपास रेजिडेंशियल और कमर्शियल प्रोजेक्ट्स भी तैयार किए जाएंगे. दिल्ली देहरादून एक्सप्रेसवे की शुरुआत 2021 में हुई थी और उसके बाद निरंतर इस पर काम चल रहा है. उत्तराखंड वाले क्षेत्र में चौथे चरण से काम शुरू किया गया, जिसमें एक सुरंग भी बनाई गई है. जनता के लिए इस एक्सप्रेसवे के खुलने से देश की राजधानी की दूरी प्रदेश की राजधानी से समय के अनुसार बेहद कम हो जाएगी और इससे पर्यटन बढ़ने के अलावा तमाम दूसरे व्यावसायिक और औद्योगिक अवसर भी राज्य के लिए खुल सकेंगे.

पर्यटन को मिलेगा बढ़ावाः पर्यटक स्थल के रूप में खास तौर पर देहरादून और मसूरी में पर्यटन के लिहाज से इसका बेहद ज्यादा फायदा होने की उम्मीद है. हालांकि उत्तराखंड सरकार राजधानी में भी इस एक्सप्रेसवे के लिहाज से ट्रैफिक का नया रूट प्लान भी तैयार करने पर विचार कर रही है. दिल्ली देहरादून एक्सप्रेसवे की एक नहीं बल्कि कई ऐसी खासियतें हैं, जो इसे अपने आप में अलग बनाती हैं. वन्यजीवों को देखते हुए 12 किलोमीटर लंबा एलिवेटेड कॉरिडोर इसमें तैयार किया गया है. यह एक्सप्रेसवे देहरादून तक पहुंचने के रास्ते को सुगम और कम समय वाला तो बनाएगा ही साथ ही उत्तर प्रदेश के तमाम बड़े शहरों तक भी इसके जरिए पहुंच आसान होगी।

बिहार के लोगों का इंतजार खत्म! जल्द ही कर सकेंगे मेट्रो की सवारी; पुणे से पहुंचने वाली हैं बोगियां

बिहार के लोगों के लिए अच्छी खबर है। प्रदेश में जल्द ही लोगों को मेट्रो की सवारी करने का मौका मिलेगा। पुणे से मेट्रो की तीन बोगियां पटना के लिए रवाना हो चुकी हैं जिनके 10 दिनों में पहुंचने की उम्मीद है। मंत्री जीवेश कुमार ने बताया कि अगस्त में ट्रायल रन होगा। पहले चरण में आईएसबीटी से मलाही पकड़ी तक मेट्रो चलेगी।

पटना। राजधानीवासियों के लिए मेट्रो की सवारी का इंतजार अब अंतिम चरण में है। प्रायोरिटी कॉरिडोर पर स्वतंत्रता दिवस के दिन से पटना मेट्रो का परिचालन शुरू करने के लिए जोर-शोर से काम चल रहा है। खुशखबरी यह कि पुणे से तीन ट्रकों पर मेट्रो की तीन बोगियां पटना के लिए रवाना हो चुकी है। इसकी पहली झलक सामने आ चुकी है। इसे काफी एहतियात के साथ लाया जा रहा है। ऐसे में 10 दिन में इसके पटना पहुंचने की उम्मीद है।

इस माह दौड़ेगी पहली मेट्रो ट्रेन

नगर विकास एवं आवास विभाग के मंत्री जीवेश कुमार ने कहा है कि रैक पहुंचने के बाद इसी माह ट्रॉयल किया जाएगा। अगस्त से पहली मेट्रो ट्रेन पटना में दौड़ने लगेगी। पटना मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने एक्स के अधिकृत एकाउंट पर मेट्रो रेक की तस्वीर साझा की है। इसमें कहा गया है पटनावासियों क्या आप तैयार हैं। आपका वर्षों का सपना अब पूरी होने के करीब है।

भारतमाला हाईवे के क्षतिग्रस्त होने के मामले में जांच शुरू; NHAI सदस्य वेंकटरमन ने किया स्थल निरीक्षण

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (दिल्ली) के सदस्य वेंकटरमन ने आज जिला कलेक्टर तुषार भट्ट के साथ पाटण जिले से गुजरने वाले भारतमाला हाईवे का मौके पर जाकर निरीक्षण किया। वेंकटरमन ने सांतलपुर तहसील के बकुत्रा के समीप टोल टैक्स बूथ के पास निरीक्षण कर सैम्पल लिए।

मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने हाल ही में हुई भारी वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त हुई सड़कों की जल्द से जल्द मरम्मत करने के निर्देश दिए हैं। इतना ही नहीं, पूरे राज्य में नागरिकों को सड़क सुविधा उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार ने प्रशासनिक तंत्र को विशेष कदम उठाने के निर्देश के साथ-साथ सड़कों एवं पुलों का स्थल निरीक्षण कर रिपोर्ट सौंपने के आदेश दिए हैं।

केंद्र और राज्य सरकार द्वारा भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) की सड़कों का भी मौके पर जाकर निरीक्षण कर जांच करने के आदेश दिए गए हैं। इसके अंतर्गत एनएचएआई द्वारा संचालित भारतमाला हाईवे पर राजस्थान के सांचोर से पाटण जिले के सांतलपुर तक के 135 किलोमीटर लंबे हाईवे में से 1.35 किमी का हिस्सा क्षतिग्रस्त होने के कारण आज एनएचएआई के सदस्य श्री वेंकटरमन ने सांतलपुर तहसील के बकुत्रा के निकट टोल टैक्स बूथ के पास हाईवे सड़क का स्थल निरीक्षण किया।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (दिल्ली) के सदस्य वेंकटरमन ने आज जिला कलेक्टर तुषार भट्ट के साथ पाटण जिले से गुजरने वाले भारतमाला हाईवे का मौके पर जाकर निरीक्षण किया। वेंकटरमन ने सांतलपुर तहसील के बकुत्रा के समीप टोल टैक्स बूथ के पास निरीक्षण कर सैम्पल लिए। उन्होंने कहा कि सैंपल की गुणवत्ता में किसी तरह की क्षति-कमी पाए जाने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने नागरिकों और वाहन चालकों को हो रही असुविधा के लिए खेद व्यक्त करते हुए शीघ्र ही सुविधाजनक परिवहन का आश्वासन दिया।

एनएचएआई के सदस्य वेंकटरमन ने कहा कि भारतमाला परियोजना सांचोर से सांतलपुर मार्ग पर जोन-4 के हाईवे मार्ग पर गड्ढे होने और सड़क के क्षतिग्रस्त होने की जानकारी मिलने पर स्थल निरीक्षण किया गया है। सड़क निर्माण का काम करने वाले जिम्मेदार ठेकेदार को नोटिस दे दिया गया है। सड़क के सैंपल ले लिए गए हैं, जिनकी जांच के बाद उसकी गुणवत्ता में कोई कमी पाई जाएगी, तो नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

कानपुरः सात हजार ई-रिक्शा बिना पंजीकरण दौड़ रहे सड़कों पर, अफसर बेखबर

परिवहन विशेष न्यूज

इटावा। जिला परिवहन विभाग की नींद खुलने का नाम नहीं ले रही है। जिले में 10 हजार से अधिक ई-रिक्शा फर्राटा भर रहे हैं, लेकिन इनमें से सिर्फ तीन हजार का ही पंजीकरण हुआ है। बाकी सात हजार वाहन अवैध रूप से सड़कों पर दौड़ रहे हैं, जिससे न सिर्फ यातायात व्यवस्था चरमराई है, बल्कि हर दिन जान जोखिम में डाली जा रही है।

परिवहन विभाग के आला अफसर इस गंभीर लापरवाही पर चुप हैं। शासन के सख्त निर्देश और परिवहन आयुक्त के पत्र के बावजूद अब तक हालात जस के तस हैं।

हादसे के बाद भी नहीं सुधरे हालात

बिना पंजीकरण ई-रिक्शा का न कोई रिकॉर्ड है, न चालक का प्रशिक्षण प्रमाणपत्र। जब कोई हादसा होता है, तो विभागीय अफसरों को यह तक पता नहीं होता कि ई-रिक्शा किसका था और चला कौन रहा था। ऐसे में सवाल उठता है कि जिम्मेदार अफसर आखिर कब जागेंगे।

सड़कों पर कब्जा, जाम का स्थायी कारण

जिला मुख्यालय से लेकर कस्बों तक हर सड़क पर ई-रिक्शा की मनमानी है। न कोई स्टैंड, न कोई रूट तय। शहर में कई बार रूट कोडिंग और रंग-पट्टी योजना चलाई गई, लेकिन अफसरों की लापरवाही से सारी योजनाएं कागजों तक सिमट गईं। नतीजा यह है कि हर चौराहे पर जाम, और जनता परेशान दिखती है।

एआरटीओ को नोटिस, फिर भी कार्रवाई ढीली

एआरटीओ को अवैध ई-रिक्शा पर कार्रवाई में ढिलाई के चलते अप्रैल में नोटिस थमाया गया था, लेकिन इसके बाद भी हालात में सुधार नहीं आया। जून में 200 रिक्शों पर कार्रवाई जरूर हुई, पर सात हजार में से यह संख्या सिर्फ 2.8 फीसदी बनती है। ऐसे में विभाग की इतनी सुस्त कार्रवाई से क्या व्यवस्था में सुधार आएगा।

अवैध ई-रिक्शा पर एक नजर

विषय संख्या/स्थिति
संचालित ई-रिक्शा 10,000
पंजीकृत ई-रिक्शा 3,000
अवैध (बिना रजिस्ट्रेशन) 7,000
जून में कार्रवाई 200 ई-रिक्शों पर
एआरटीओ को नोटिस अप्रैल में मिला
हादसे के बाद पहचान असंभव, रिकॉर्ड नदारद
स्टैंड की व्यवस्था नहीं
रूट प्लान असफल, सिर्फ कुछ दिन चला

इस समस्या का कब होगा निस्तारण

- सात हजार ई-रिक्शा बिना लाइसेंस और रजिस्ट्रेशन के चलेंगे या कार्रवाई भी होगी।
- जब नियम तोड़े जाते हैं, तो अफसरों की जिम्मेदारी क्यों तय नहीं होती है।
- अगर अवैध ई-रिक्शा से हादसा होता है तो जवाबदेही किसकी होगी।
- प्रशासन सिर्फ नोटिस थमाकर चुप बैठ जाता है, अफसरों पर कार्रवाई क्यों नहीं करता है।

अवैध रूप से संचालित हो रहे ई-रिक्शा पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। जून में करीब 200 ई-रिक्शा पर कार्रवाई की गई है। इसके बाद ई-रिक्शा के पंजीकरण में तेजी आई है। जल्द ही सभी ई-रिक्शा का पंजीकरण करवा दिया जाएगा।

- प्रदीप कुमार, एआरटीओ।

महाभारत काल के वो हथियार जो आज की आधुनिक मिसाइल्स से भी अत्यधिक विनाशक थे। ऐसे कौन-कौन से प्रमुख

महाभारत केवल एक युद्ध नहीं था, बल्कि वह एक ऐसा महासंग्राम था जिसमें धर्म, अधर्म, राजनीति, नीति-अनीति, और सबसे महत्वपूर्ण — दिव्य अस्त्रों की शक्ति की परीक्षा हुई थी। उस काल में युद्ध केवल तलवारों और बाणों से नहीं लड़ा जाता था, बल्कि ऐसे दिव्य अस्त्रों का प्रयोग होता था, जो मंत्रों और तप के बल पर प्राप्त किए जाते थे। ये अस्त्र अत्यंत विनाशकारी थे और इनमें ब्रह्मांड को प्रभावित करने की क्षमता थी। आइए विस्तार से जानते हैं महाभारत काल के सबसे खतरनाक और दिव्य अस्त्रों के बारे में — कौन से अस्त्र किसके पास थे, उन्हें कैसे प्राप्त किया गया, और उन्होंने किस पर इनका प्रयोग किया।

1. ब्रह्मास्त्र

ब्रह्मास्त्र सबसे प्रसिद्ध और शक्तिशाली अस्त्रों में से एक था। यह ब्रह्मा जी का दिव्य अस्त्र था। इसे छोड़ने के बाद कोई भी अस्तित्व सुरक्षित नहीं रह सकता था — भूमि, जल, वायु, आकाश सब नष्ट हो सकते थे। इसकी मारक क्षमता इतनी थी कि यदि दो ब्रह्मास्त्र आपस में टकरा जाएं तो पूरी पृथ्वी का विनाश संभव है।

किसके पास था: अर्जुन, अश्वत्थामा, कर्ण

कैसे मिला: यह अस्त्र वेदों और मंत्रों के गहन अध्ययन व तप से प्राप्त किया जाता था। अर्जुन को यह अस्त्र भगवान शिव की कृपा से और उनके निर्देश पर महर्षि व्यास तथा अन्य गुरुओं से प्राप्त हुआ। अश्वत्थामा को यह अस्त्र अपने पिता द्रोणाचार्य से प्राप्त हुआ था। कर्ण ने भी परशुराम से इसे प्राप्त किया।

कब प्रयोग हुआ: युद्ध के अंतिम चरण में, जब अश्वत्थामा ने घटोत्कच की मृत्यु के बाद पांडवों को मारने के लिए इसे छोड़ दिया, परंतु अर्जुन ने भी प्रत्युत्तर में ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया। तब ऋषि व्यास प्रकट हुए और उन्होंने दोनों को उसे वापस लेने को कहा, अर्जुन ने तो ब्रह्मास्त्र वापस ले लिया लेकिन अश्वत्थामा न कर सका। उसने ब्रह्मास्त्र को उत्तरा के गर्भ में पल रहे अभिमन्यु के पुत्र पर निर्देशित कर दिया। फलस्वरूप परीक्षित मरा, लेकिन बाद में भगवान श्रीकृष्ण ने उसे पुनः जीवन दिया।

2. पाशुपतास्त्र

यह भगवान शिव का सबसे प्रलयंकारी अस्त्र माना जाता है। यह अस्त्र इतना शक्तिशाली था कि इसे केवल चरम स्थिति में ही प्रयोग किया जा सकता था, अन्यथा सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश कर सकता था। इस अस्त्र को छोड़ने से पहले साधक को पूर्ण संयम, तप और भक्ति का पालन करना होता था।

किसके पास था: केवल अर्जुन

कैसे मिला: अर्जुन ने कठोर तप करके भगवान शिव को प्रसन्न किया था। तब शिव जी ने स्वयं अर्जुन की परीक्षा लेने के लिए किरात रूप में आकर युद्ध किया। अर्जुन ने अपने पराक्रम और भक्ति से शिव को प्रसन्न किया और उन्हें पाशुपतास्त्र प्रदान किया।

कब प्रयोग हुआ: महाभारत युद्ध में अर्जुन ने इसे प्रयोग में नहीं लिया, क्योंकि इसका प्रयोग केवल आपात स्थिति में किया जा सकता था और इससे बड़े स्तर पर हानि हो सकती थी।

3. नारायणास्त्र

यह अस्त्र भगवान विष्णु से संबंधित था और इसका प्रयोग केवल एक बार किया जा सकता था। यह अस्त्र मन की भावना के अनुसार स्वयं कार्य करता था। यदि शत्रु समर्पण कर दे तो यह अस्त्र उसे क्षमा कर देता था, लेकिन यदि प्रतिरोध करे, तो वह अस्त्र उसे निश्चित रूप से भस्म कर देता था।

किसके पास था: अश्वत्थामा

कैसे मिला: अश्वत्थामा को यह अस्त्र भगवान विष्णु के ध्यान से और अपने पिता द्रोणाचार्य से मंत्रों द्वारा प्राप्त हुआ था।

श्रावण वन सोमवार व्रत आज

हिंदू धर्म में भगवान शिव को सृष्टि के संहारक और कल्याणकारी देव के रूप में पूजा जाता है। शिवभक्तों के लिए श्रावण मास अत्यंत शुभ और फलदायी माना गया है। यह महीना पूरी तरह भगवान शिव को समर्पित होता है और माना जाता है कि इस दौरान शिवजी पृथ्वी पर निवास करते हैं। ऐसे में भक्तों की प्रार्थनाओं का प्रभाव भी शीघ्र दिखाई देता है। सोमवार भगवान शिव का वार है और सावन शिव का महीना, इसलिए इस महीने के सोमवार विशेष रूप से पूजनीय माने जाते हैं। इन सोमवारों को सावन सोमवारी कहा जाता है। इस दिन श्रद्धालु शिवजी का व्रत रखते हैं, उपवास करते हैं, शिवलिंग पर जल, दूध, बेलपत्र, धतूरा आदि अर्पित करते हैं और शिव चालीसा, रुद्राष्टक या महामृत्युंजय जाप का पाठ करते हैं।

सावन 2025 में कब से कब तक रहेगा सावन?

==========

इस वर्ष सावन का महीना 11 जुलाई 2025 से शुरू होकर 9 अगस्त 2025 तक चलेगा। इस दौरान कुल चार सोमवार आएंगे। सावन का समापन रक्षाबंधन पर्व के साथ होगा, जो भाई-बहन के रिश्ते का प्रतीक है, जो इस बार 9 अगस्त को मनाया जाएगा। वही श्रावण का पहला सोमवार का व्रत 14 जुलाई को रखा जायेगा।

सावन सोमवार की तिथियां

==========

पहला सोमवार- 14 जुलाई 2025
दूसरा सोमवार- 21 जुलाई 2025
तीसरा सोमवार- 28 जुलाई 2025
चौथा सोमवार- 4 अगस्त 2025

पहले सावन सोमवार पर शुभ मुहूर्त

==========

ब्रह्म मुहूर्तः सुबह 4:16 से 5:04 बजे तक
अभिजित मुहूर्त- दोपहर 11:59 बजे से 12:55 बजे तक
अमृत काल- रात 11:21 बजे से 12:55 बजे तक, जुलाई 15
पूजा का सर्वश्रेष्ठ समय- दोपहर 11:38 बजे से 12:32 बजे तक

ऐसी मान्यता है कि जो भक्त पूरे सावन मास के सभी सोमवारों का व्रत नहीं कर सकते, वे कम से कम पहले और अंतिम सोमवार का व्रत अवश्य करें। यह भी उतना ही पुण्यदायी होता है और शिव कृपा प्राप्त होती है।

सावन पहला सोमवार पूजा विधि

==========

इस दिन आप ब्रह्म मुहूर्त में उठकर निमित्त क्रिया के बाद स्नान करें। इसके बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

अब आप पूजा स्थान को गंगाजल छिड़कर पवित्र कर लीजिए। इसके बाद ईशान कोण में एक वेदी बनाएं।

फिर उसमें भगवान शिव की प्रतिमा या शिवलिंग विराजमान करें। अब आप गंगा जल और पंचामृत से भोलेनाथ का अभिषेक करिए।

अब आप शिवलिंग को बेलपत्र, फूल और सफेद चंदन के लेप से सजाएं। फिर आर 'ॐ नमः शिवाय' का जाप करें या महामृत्युंजय मंत्र का 108 बार भी जाप कर सकते हैं।

वहीं, जो लोग व्रत हैं, वो सोमवार व्रत कथा भी पढ़ सकते हैं। अंत में आप भगवान से पूजा में हुई गलती के लिए क्षमायाचना करिए।

सावन सोमवार का आप व्रत हों या न सात्विक भोजन ही करें। तामसिक भोजन न करें. साथ ही आप किसी के साथ गलत व्यवहार न करें।

विश्वास, विचार और उनका प्रभाव

हम अपनी मान्यताओं, विचारों और राय के प्रति अपने जीवन में बहुत आश्वस्त हैं। हम कहते हैं कि चीजें ऐसी ही होती हैं। लेकिन क्या हमने कभी जांच की है कि क्या इनमें से कोई भी सच है? फिर क्यों हम इतने आश्वस्त हैं? हम कैसे जानते हैं कि हम जो सोचते हैं वह सच है? सही हो या ग़लत, हर कोई समान रूप से निश्चिंत है। हम कभी भी अपनी सोच पर संदेह नहीं करते।

हम इस बात को लेकर आश्वस्त हैं कि क्या खाना है, क्या पीना है, कैसे व्यवहार करना है, कौन सी चिकित्सा काम करेगी, हमारे बच्चों के लिए सबसे अच्छा क्या है, हमारे जीवन में भगवान की क्या भूमिका है...

यहाँ बिना परखे असीमित सूची है। मान्यताएं मजबूत हैं. लेकिन क्या हम कह सकते हैं कि विश्वास के पीछे का प्रयोग भी उतना ही मजबूत है? और इस निश्चितता का परिणाम क्या है? जीवन के कुछ हिस्से कभी सुलझते क्यों नहीं दिखते। हमारी क्षमता का हमें कभी भी पूरी तरह से एहसास नहीं होता है। फिर हम इसका श्रेय भगवान, भाग्य, वास्तु या सितारों को देते हैं। हम यह नहीं देखते कि हमारे विचार और विश्वास ही हमारे जीवन के प्रमुख प्रेरक हैं।

जब तक वे विचार वैसे ही बने रहेंगे, हमारा जीवन सदा वैसा ही रहेगा - वही समस्याएँ, वही निराशाएँ, वही आकांक्षाएँ और आशा और निराशा का

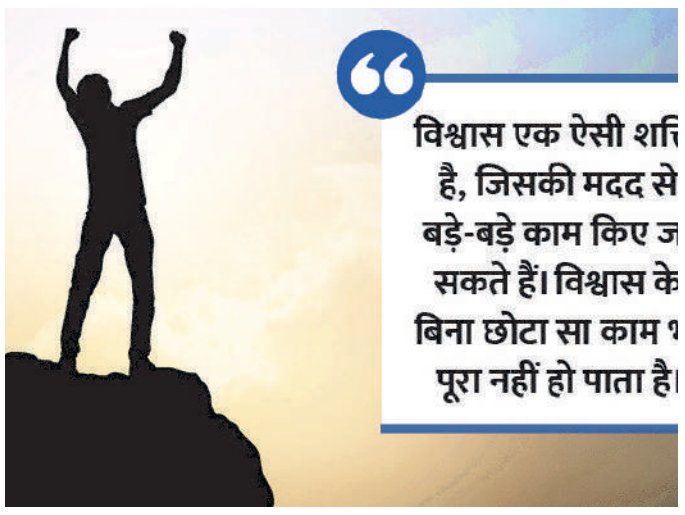

वही चक्र। क्या माता-पिता अपने बच्चों को देखने और उनके साथ व्यवहार करने के तरीके की समीक्षा करते हैं? क्या व्यवसायी लोग अपने व्यवसाय करने के तरीके की समीक्षा करते हैं? क्या शिक्षक अधिक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाते हैं? यदि वे ऐसा नहीं करते, तो वे भिन्न परिणामों की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? सब कुछ वैसे ही चलता रहेगा.

हमारा जीवन न केवल हमारे विचारों से निर्मित होता है, बल्कि इसकी व्याख्या भी हमारे विचारों से ही होती है। एक ही घटना एक के लिए आनंद और दूसरे के लिए दुखद है। एक के लिए गिलास आधा भरा है, दूसरे के लिए आधा खाली है। किसी व्यक्ति के लिए जीवन आनंदमय है। दूसरे के लिए वही जीवन भयानक है. यह सब हमारे विचारों से निर्मित होता है। इसलिए हमारे विचारों की जांच समयानुसार होनी ही चाहिये, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां चीजें सुखद परिणाम देतीं नहीं दिखतीं।

पता लगाएँ कि क्या हमारे विचार हमारे जीवन में लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं या प्रगति में बाधक बन रहे हैं? किसी भी प्रकार का असंतोष, हताशा या चिड़चिड़ापन यह दर्शाता है कि हमें चीजों को देखने के तरीके की दोबारा जांच करने की आवश्यकता है, पर ऐसा करना सरल नहीं है. लेकिन यह हमारे प्रति एक प्रकार की निष्पक्षता और ईमानदारी है, जो हमारे सपनों के जीवन को उजागर करेगी। हम पीड़ित होने की भावना खो देंगे और जीवन में एक शक्तिशाली खिलाड़ी बन जाएंगे।

हीं है उनके प्रति हमारी कोई जिम्मेदारी भी नहीं है। इसलिए यदि मनुष्य का चित्त किसी कार्य में व्यस्त रहे तो व्यर्थ की चिन्ताओं का जन्म ही नहीं होता।

बुद्धिमान व्यक्ति उन चीजों के लिए शोक नहीं करता जो उस के पास नहीं हैं या उसके अधिकार क्षेत्र में नहीं आतीं हैं। बल्कि उन चीजों के लिए खुश रहता है जो उस के पास आज मौजूद हैं। ध्यान रहे कि समय/वक्त की धारा में अच्छे अच्छों को मजबूर होते देखा गया है। यदि कर सकें तो किसी का भला करें अन्यथा दुःख लेते और देते हुए तो हजारों को हम देखतें ही हैं। जब हमारे मन में विश्वास होता है तो दूसरा हमें हमारे समान विश्वसनीय लगता है। जैसे ही हमारा विश्वास कम हुआ तभी दरवाजे/तालों का जन्म/अविष्कार हुआ। और जब विश्वास बिल्कुल ही खत्म हो गया तो सीसीटीवी कैमरे का जन्म हुआ। वास्तव में परिक्षाएं हमें परखने के लिए आतीं हैं। धैर्यता के साथ इसे समझें और आवश्यक कदम उठाएं। यही परिस्थितियों का महत्व है जो हमें कदम दर कदम उठना/गिरना और साथ-साथ सम्भलना सिखातीं हैं।

जिन स्थितियों पर हमारा कोई काबू ही नहीं है उनके प्रति हमारी कोई जिम्मेदारी भी नहीं है। इसलिए यदि मनुष्य का चित्त किसी कार्य में व्यस्त रहे तो व्यर्थ की चिन्ताओं का जन्म ही नहीं होता।

बुद्धिमान व्यक्ति उन चीजों के लिए शोक नहीं करता जो उस के पास नहीं हैं या उसके अधिकार क्षेत्र में नहीं आतीं हैं। बल्कि उन चीजों के लिए खुश रहता है जो उस के पास आज मौजूद हैं। ध्यान रहे कि समय/वक्त की धारा में अच्छे अच्छों को मजबूर होते देखा गया है। यदि कर सकें तो किसी का भला करें अन्यथा दुःख लेते और देते हुए तो हजारों को हम देखतें ही हैं। जब हमारे मन में विश्वास होता है तो दूसरा हमें हमारे समान विश्वसनीय लगता है। जैसे ही हमारा विश्वास कम हुआ तभी दरवाजे/तालों का जन्म/अविष्कार हुआ। और जब विश्वास बिल्कुल ही खत्म हो गया तो सीसीटीवी कैमरे का जन्म हुआ। वास्तव में परिक्षाएं हमें परखने के लिए आतीं हैं। धैर्यता के साथ इसे समझें और आवश्यक कदम उठाएं। यही परिस्थितियों का महत्व है जो हमें कदम दर कदम उठना/गिरना और साथ-साथ सम्भलना सिखातीं हैं।

16 सिद्धियाँ विवरण1. वाक सिद्धि : - जो भी वचन बोले जाए वे व्यवहार में पूर्ण हो, वह वचन

1. वाक सिद्धि : -

जो भी वचन बोले जाए वे व्यवहार में पूर्ण हो, वह वचन कभी व्यर्थ न जाये, प्रत्येक शब्द का महत्वपूर्ण अर्थ हो, वाक सिद्धि युक्त व्यक्ति में श्राप अरु वरदान देने की क्षमता होती हैं.

2. दिव्य दृष्टि सिद्धिः-

दिव्यदृष्टि का तात्पर्य हैं कि जिस व्यक्ति के सम्बन्ध में भी चिन्तन किया जाये, उसका भूत, भविष्य और वर्तमान एकदम सामने आ जाये, आगे क्या कार्य करना हैं, कौन सी घटनाएं घटित होने वाली हैं, इसका ज्ञान होने पर व्यक्ति दिव्यदृष्टियुक्त महापुरुष बन जाता हैं.

3. प्रज्ञा सिद्धि : -

प्रज्ञा का तात्पर्य यह हें की मेधा अर्थात स्मरणशक्ति, बुद्धि, ज्ञान इत्यादि ! ज्ञान के सम्बंधित सारे विषयों को जो अपनी बुद्धि में समेट लेता हें वह प्रज्ञावान कहलाता हें ! जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बंधित ज्ञान के साथ-साथ भीतर एक चेतनापुंज जाग्रत रहता हें.

4. दूरश्रवण सिद्धि :-

इसका तात्पर्य यह हैं की भूतकाल में घटित कोई भी घटना, वार्तालाप को पुनः सुनने की क्षमता.

5. जलगमन सिद्धिः-

यह सिद्धि निश्चय ही महत्वपूर्ण हैं, इस सिद्धि को प्राप्त योगी जल, नदी, समुद्र पर इस तरह विचरण करता हैं मानों धरती पर गमन कर रहा हो.

6. वायुगमन सिद्धि :-

इसका तात्पर्य हैं अपने शरीर को सूक्ष्मरूप में परिवर्तित कर एक लोक से दूसरे लोक में गमन कर सकता हैं, एक स्थान से दूसरे स्थान पर सहज तत्काल जा सकता हैं.

7. अदृश्यकरण सिद्धि :-

अपने स्थूलशरीर को सूक्ष्मरूप में परिवर्तित कर अपने आप को अदृश्य कर देना ! जिससे स्वयं की इच्छा बिना दूसरा उसे देख ही नहीं पाता हैं.

8. विषोका सिद्धि :-

इसका तात्पर्य हैं कि अनेक रूपों में अपने आपको परिवर्तित कर लेना ! एक स्थान पर अलग रूप हैं, दूसरे स्थान पर अलग रूप हैं.

9. देवक्रियानुदर्शन सिद्धि :-

इस क्रिया का पूर्ण ज्ञान होने पर विभिन्न देवताओं का साहचर्य प्राप्त कर सकता हैं ! उन्हें पूर्ण रूप से अनुकूल बनाकर उचित सहयोग लिया जा सकता हैं.

10. कायाकल्प सिद्धिः-

कायाकल्प का तात्पर्य हैं शरीर परिवर्तन ! समय के प्रभाव से देह जर्जर हो जाती हैं, लेकिन कायाकल्प कला से युक्त व्यक्ति सदैव रोगमुक्त और यौवनवान ही बना रहता हैं.

11. सम्मोहन सिद्धि :-

सम्मोहन का तात्पर्य हैं कि सभी को अपने अनुकूल बनाने की क्रिया ! इस कला को पूर्ण व्यक्ति मनुष्य तो क्या, पशु-पक्षी, प्रकृति को भी

अपने अनुकूल बना लेता हैं.

12. गुरुत्व सिद्धिः-

गुरुत्व का तात्पर्य हैं गरिमावान ! जिस व्यक्ति में गरिमा होती हैं, ज्ञान का भंडार होता हैं, और देने की क्षमता होती हैं, उसे गुरु कहा जाता हैं ! और भगवन कृष्ण को तो जगद्गुरु कहा गया हैं.

13. पूर्ण पुरुषत्व सिद्धिः-

इसका तात्पर्य हैं अद्वितीय पराक्रम और निडर, एवं बलवान होना ! श्रीकृष्ण में यह गुण बाल्यकाल से ही विद्यमान था ! जिस के कारन से उन्होंने ब्रजभूमि में राक्षसों का संहार किया ! तदनंतर कंस का संहार करते हुए पुरे जीवन शत्रुओं का संहार कर आर्यभूमि में पुनः धर्म की स्थापना की.

14. सर्वगुण संपन्न सिद्धिः-

जितने भी संसार में उदात्त गुण होते हैं, सभी कुछ उस व्यक्ति में समाहित होते हैं, जैसे – दया, दृढ़ता, प्रखरता, ओज, बल, तेजस्विता, इत्यादि ! इन्हीं गुणों के कारण वह सारे विश्व में श्रेष्ठतम व अद्वितीय मन जाता हैं, और इसी प्रकार यह विशिष्ट कार्य करके संसार में लोकहित एवं जनकल्याण करता हैं.

15. इच्छा मृत्यु सिद्धिः-

इन कलाओं से पूर्ण व्यक्ति कालजयी होता हैं, काल का उस पर किसी प्रकार का कोई बंधन नहीं रहता, वह जब चाहे अपने शरीर का त्याग कर नया शरीर धारण कर सकता हैं.

16. अनुर्मि सिद्धिः-

अनुर्मि का अर्थ हैं. जिस पर भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी और भावना-दुर्भावना का कोई प्रभाव न हो.

घर पर बनायें कफ सिरप।

बदलते मौसम में सेहत का विशेष ध्यान रखना पड़ता है, क्योंकि इस मौसम में सर्दी-जुकाम, खांसी, गले की खराश आदि समस्याएँ होने का खतरा बना रहता है. बहुत लोग सर्दी जुकाम हो जाने पर एंटी एंटीबायोटिक्स दवाओं का सेवन करते है पर हम आपको बता दे की ये आपकी सेहत पर बहुत बुरा असर डालती है, इसलिए इन दवाओं को लेने से अच्छा है की आप घर पर सर्दी-जुकाम को ठीक करने के लिए आयुर्वेदिक सिरप का इस्तेमाल करे. आप इसे घर पर ही बना सकते है. आज हम आपको घर पर ही कफ सिरप बनाने के तरीके के बारे में बताने जा रहे है.

आवश्यक सामग्री

10-12 तुलसी के पत्ते, 3-4 लौंग, 2 चम्मच शहद , चुटकीभर सेंधा नमक, सोंठ और दालचीनी पाउडर, 2-3 काली मिर्च

बनाने का तरीका

कफ सिरप बनाने के लिए सबसे पहले तुलसी के थोड़े से पत्तो को लेकर धो ले, अब इसमें लौंग, सेंधा नमक, काली मिर्च, सोंठ और दालचीनी पाउडर मिला दे, अब इन सभी को एक साथ मिलाकर अच्छे से पीस लें. अब गैस पर एक बर्तन में एक गिलास पानी डालकर चढ़ा दे, जब ये पानी उबलने लगे तो इसमें तुलसी के पेस्ट डाल दे.जब पानी उबलते उबलते आधा रह जाएं तो इसे आंच से उतार ले.जब ये पानी ठंडा हो जाये तो इसमें शहद मिला दे. सिरप तैयार है. अब इसे एक कांच की शीशी में भरकर रख लें. सर्दी-जुकाम, गले में खराश होने पर इसका सेवन करें।

दिल्ली में इमारत गिरने के मामले में लापरवाहों पर आएगी 'शामत', जानें पुलिस ने क्या उठाया कदम?

हादसे में जान गंवाने वालों में बिल्डिंग मालिक अब्दुल मतलूब (50) उनकी पत्नी राबिया (46) बेटे जावेद (23) और अब्दुल्ला (15) बेटी जुबिया (27) और दो साल की पोती फौजिया शामिल हैं। सभी के शव मलबे से निकालकर जीटीबी अस्पताल भेजे गए। वहीं जनता कॉलोनी में शनिवार सुबह जो हादसा हुआ था। वहां अभी बहुत मलबा पड़ा हुआ है।

नई दिल्ली। दिल्ली के वेलकम इलाके में शनिवार सुबह चार मंजिला इमारत गिरने से एक ही परिवार के छह सदस्यों की मौत हो गई, जबकि आठ लोग घायल हो गए। हादसे के बाद दिल्ली पुलिस ने लापरवाही का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस के मुताबिक बिल्डिंग गिरने की जांच कई पहलुओं से की जा रही है। दिल्ली पुलिस ने बताया कि लापरवाही के तहत भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर लिया गया है। हादसे की वजह पता लगाने के लिए कई जांच टीमें बनाई गई हैं।

मलबे से निकाले गए शव, मृतकों में मासूम बच्ची भी शामिल

हादसे में जान गंवाने वालों में बिल्डिंग मालिक अब्दुल मतलूब (50), उनकी पत्नी राबिया (46), बेटे जावेद (23) और अब्दुल्ला (15), बेटी जुबिया (27) और दो साल की पोती फौजिया शामिल हैं। सभी के शव मलबे से निकालकर जीटीबी अस्पताल भेजे गए। वहीं, जनता कॉलोनी में शनिवार सुबह जो हादसा हुआ था। वहां अभी बहुत मलबा पड़ा हुआ है। रविवार की सुबह के वक़्त निगम कर्मचारियों ने हाथ से थोड़ा मलबा उठाया था। हादसे में क्षतिग्रस्त हुए खंभे को बीएसईएस ने बदल दिया है।

परिवार हाल ही में इस बिल्डिंग में शिफ्ट हुआ था

बताया गया है कि मृतक परिवार ड्राई क्लीनिंग का काम करता था और कुछ महीने पहले गौतमपुरी स्थित उनके पुराने घर में आग लग गई थी। इसके बाद ही वे इस 20 साल पुरानी इमारत में शिफ्ट हुए थे। हादसे से इलाके में शोक की लहर है।

आठ लोग घायल, समय रहते बचाई गई जान

हादसे में मतलूब के बेटे परवेज (32), नावेद (19), परवेज की पत्नी सीजा और उनका एक साल का बेटा अहमद भी घायल हुए हैं। इसके अलावा पास में रहने वाले चार अन्य लोग भी मलबे में दबने से जख्मी हुए हैं। सभी घायलों का इलाज अस्पताल में चल रहा है।

पुलिस ने दर्ज किया FIR, कई टीमें जांच में जुटीं

दिल्ली पुलिस ने बताया कि लापरवाही के तहत

भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर लिया गया है। हादसे की वजह पता लगाने के लिए कई जांच टीमें बनाई गई हैं। पुलिस अफसरों के मुताबिक बिल्डिंग की स्थिति, निर्माण सामग्री और मालिक की जिम्मेदारी समेत हर पहलू से जांच होगी।

फायर ब्रिगेड और NDRF ने चलाया रेस्क्यू ऑपरेशन

सुबह-सुबह हादसा होते ही इलाके के लोग, जो मॉर्निंग वॉक पर निकले थे, सबसे पहले मदद के लिए दौड़े। इसके बाद फायर ब्रिगेड की सात गाड़ियां और NDRF की टीम मौके पर पहुंची। मलबा हटाने और दबे लोगों को बाहर निकालने के लिए कई घंटे तक रेस्क्यू ऑपरेशन चला।

ग्राउंड फ्लोर पर था आंगनवाड़ी, हादसे के वक्त बंद था

गनीमत रही कि बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर चल रहा आंगनवाड़ी सेंटर हादसे के वक्त बंद था, वरना मृतकों की संख्या और बढ़ सकती थी। फिलहाल इलाके में बिल्डिंग सुरक्षा को लेकर लोग डरे हुए हैं।

हादसे की जांच जारी, जिम्मेदारों पर होगी कार्रवाई

पुलिस ने कहा है कि हादसे के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल इलाके के अन्य पुराने भवनों की भी जांच शुरू कर दी गई है ताकि इस तरह के हादसों को रोका जा सके।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने राज्यसभा में नामांकित दो सांसदों से मिलकर दिल्लीवासियों की ओर से उनका अभिनंदन किया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने आज सांय पार्टी प्रतिनिधिमंडल के साथ भारत की राष्ट्रपति द्रोपदी मुरमु द्वारा राज्यसभा में नामांकित दो सांसदों पूर्व विदेश सेवा अधिकारी हर्षवर्धन श्रंगला एवं इतिहासकार डा. मीनाक्षी जैन से मिलकर दिल्लीवासियों की ओर से उनका अभिनंदन किया।

श्रंगला का अभिनंदन करने वाले प्रतिनिधिमंडल में वीरेन्द्र सचदेवा के साथ सांसद कमलजीत सहरावत, विधायक कैलाश गहलोत एवं अनिल शर्मा शामिल थे।

इतिहासकार डा. मीनाक्षी जैन का अभिनंदन करने वाले ग्रुप में वीरेन्द्र सचदेवा के साथ पूर्व अध्यक्ष एवं विधायक सतीश उपाध्याय और सांसद कमलजीत सहरावत एवं बाँसुरी स्वराज शामिल थे।

दिल्ली के नालों में गिरकर कैसे मर रहे बच्चे, जिम्मेदार कौन? प्रशासन, सरकार या कोई और...

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में खुले नालों में गिरने से बच्चों की मौत के मामलों में पुलिस की लापरवाही सामने आई है। अक्सर नामजद एफआईआर दर्ज नहीं होने से जांच शिथिल पड़ जाती है और जिम्मेदार अधिकारी बच जाते हैं। पीड़ित परिवारों को मुआवजा मिलने में भी दिक्कत आती है। कई मामलों में जैसे किराड़ी में नसरीन की मौत वर्षों बाद भी एफआईआर की कॉपी तक नहीं मिली।

दिल्ली। उत्तर-पश्चिमी जिले के रामगढ़ गांव में गत रविवार को खुले नाले में गिरने से चार साल के बच्चे की मौत पर पुलिस ने लापरवाही का मामला दर्ज किया है। लेकिन किसके विरुद्ध, यह एफआईआर में नहीं है। यही अक्सर होता है। इस तरह के मामलों में इसी वजह से जांच भी नाले में गाद की तरह जम जाती है। पुलिस कहती है कि जांच के बाद हम संबंधित विभाग या अधिकारी के खिलाफ नामजद एफआईआर करेंगे, लेकिन ऐसा कम ही मामलों में देखा जाता है। पीड़ित परिवारों का कहना है कि नामजद एफआईआर नहीं होने के कारण जांच भी शिथिल पड़ जाती है। पुलिस आखिर तक यह पता नहीं लगा पाती है कि लापरवाही का जिम्मेदार अधिकारी कौन है। यही वजह है कि ऐसे मामलों में सजा सुनने को कम ही मिलते हैं।

केस-1 : चार साल में एफआइआर की कापी तक नहीं मिली

9 सितंबर 2021 किराड़ी के रमेश एन्क्लेव से गुजर रहे सिंचाई व बाढ़ नियंत्रण विभाग के नाले में डूबकर सात वर्षीय नसरीन की मौत हो गई थी। नाले की दीवार छोटी होने के कारण बच्ची खेलते हुआ गिर थी। सिंचाई व बाढ़ नियंत्रण विभाग की लापरवाही से यह हादसा हुआ था।

करीब चार वर्ष बीत जाने के बाद भी दीवार की ऊंचाई नहीं बढ़ाई। पिता निजाम ने बताया कि आज तक उन्हें एफआईआर की कापी नहीं मिली। एसडीएम रोहिणी की ओर से मुआवजे की रकम के लिए वर्ष 2023 में कागजात जमा कराने के लिए कहा गया था।

उन्होंने कागजात भी जमा कराए। अब अमन विहार थाने से इसपर रिपोर्ट मांगी गई है। अभी तक उन्हें इस मामले में नहीं प्रशासन और नहीं विभाग की ओर से कोई मदद मिली।

केस-2 : 11 महीने बाद भी नहीं मिला इंसाफ

10 अगस्त 2024 रोहिणी सेक्टर-20 स्थित डीडीए के पार्क में बने छठ घाट में वर्षा का पानी भरा हुआ था। आठ वर्षीय तरुण खेलते हुए छठ घाट के अंदर गिर गया। डूबने से उसकी मौत हो गई थी। मृतक अरुण के मामा ने बताया कि पुलिस के अनदेखी के कारण मामला दब गया। पुलिस ने उस समय लापरवाही से मौत का मामला दर्ज किया। जांच के बाद भी संबंधित विभाग के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई। कई बार वे थाने का चक्कर लगाए, लेकिन कुछ हुआ ही नहीं।

इस हादसे के बाद पीड़ित परिवार से न तो किसी विभाग से कोई आया और नहीं प्रशासन की ओर से किसी भी तरह की कोई मदद मिली।

केस-3 : जद्दोजहद के बाद पुलिस ने की नामित एफआइआर

03 मार्च 2024 अलीपुर स्थित मोहम्मद पुर गांव में दिल्ली जलबोर्ड की सीवर लाइन डालने के लिए खोदाई चल रही थी। साइट पर सुरक्षा के कोई इंतजाम नहीं थे।

यहां से पैदल निकलते समय करीब 10 फुट गहरे गड्ढे में रमेश चंद गिर गए, जिससे उनकी मौत हो गई थी। पीड़ित परिवार के काफी जद्दोजहद के बाद दिल्ली पुलिस ने दिल्ली जलबोर्ड के संबंधित ठेकेदार के खिलाफ संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर लिया।

रमेश के भाई ने बताया कि मामला रोहिणी कोर्ट में अभी लंबित है। अभी तक तीन बार वे तारीख पर जा चुके हैं। इनमें से एक ही तारीख पर ठेकेदार आया था। जिसके बाद वह नहीं आया। अभी तक इस मामले में न तो मुआवजा ही मिला और नहीं अभी किसी को सजा हुई है।

केस-4 : बच्चे की चली गई जान, नहीं मिला मुआवजा

21 मार्च 2025 को तीन साल का बच्चा अपनी बड़ी बहन के साथ खजूरी सी ब्लाक में गली में खेल रहा था। बच्चा वाकर चला रहा था। खेलते-खेलते दोनों नाले के पास चले गए।

बच्चा वाकर समेत सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग के नाले में जा गिरा। यह न तो ढंका हुआ था और न ही इसके साथ कोई दीवार थी। नाले में डूबने से बच्चे की मौत हो गई।

हादसे को तीन माह हो चुके हैं, लेकिन पीड़ित परिवार को कोई आर्थिक मदद नहीं मिली। पुलिस भी अभी तक जिम्मेदार अधिकारी का पता नहीं लगा पाई है।

आज भी नाले की दीवार जगह-जगह से टूटी पड़ी है। किसी के साथ भी हादसा हो सकता है।

मुआवजे में दिक्कत आती है

अगर किसी का नाले या गड्ढे में गिरकर मौत हो जाती है तो पीड़ित परिवार को प्रशासन की ओर से 10 लाख रुपये तक के मुआवजे का प्रविधान है। इसके लिए पीड़ित परिवार जरूरी कागजात के साथ एसडीएम कार्यालय में आवेदन कर सकते हैं। कई बार नामजद एफआइआर नहीं होने पर मुआवजे में दिक्कत आती है।

-मनीष वर्मा, एसडीएम, रोहिणी

जिम्मेदार विभाग व अधिकारी बच जाते हैं

दिल्ली पुलिस को जांच के बाद नामदर्ज एफआइआर करनी चाहिए। ऐसा नहीं होने के कारण जिम्मेदार विभाग व अधिकारी बच जाते हैं। ऐसे मामलों में सारा झोल एफआइर का है। मामला कोर्ट में आने के बाद यह तय करने में काफी समय लग जाता है कि जिस नाले या गड्ढे में डूबकर या गिरकर जिनकी मौत हुई है, वह किस विभाग का है। ऐसे में कई बार पीड़ित परिवार मुआवजे से वंचित रह जाते हैं।

- आशकर हुसैन पाशा, वकील, रोहिणी कोर्ट

पल्ला क्षेत्र में यमुना का निरीक्षण किया गया नदी से पानी का सैंपल भी लिया गया

मुख्य संवाददाता

पल्ला क्षेत्र में यमुना का निरीक्षण किया गया, केंद्रीय मंत्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा द्वारा किया गया ।जहाँ से यह नदी हरियाणा से दिल्ली में प्रवेश करती है। विभागीय अधिकारियों के साथ बोट के माध्यम से जलस्तर और तटीय स्थिति का जायज़ा लिया गया। यमुना नदी से पानी का सैंपल भी लिया गया है, ताकि गुणवत्ता की जांच की जा सके। पल्ला क्षेत्र में पानी बिल्कुल साफ़ है, लेकिन जैसे ही यमुना दिल्ली में प्रवेश करती है, उसका रंग गहरा और गंदा हो जाता है। प्रयास है कि दिल्ली में भी यमुना का पानी वैसा ही साफ और स्वच्छ हो सके, जैसा इसकी डाउनस्ट्रीम में है।

दिल्ली सरकार बरसात के मौसम में पूरी तरह से सड़कों पर सक्रिय है। आम आदमी पार्टी केवल 3-4 स्थानों की तस्वीरें दिखाकर पूरे शहर को जलमग्न बताने की कोशिश कर रही है, जबकि दिल्ली एक विशाल नगर है। हर स्थान पर ऐसा दृश्य नहीं है। जहाँ पानी कुछ ही मिनटों में निकल जाए, उसे वॉटर लॉगिंग नहीं कहा जा सकता। जलभराव तब माना जाता है जब पानी 4-5 घंटे तक भी न निकले। अधिकतर स्थानों पर जल निकासी व्यवस्था ठीक से कार्य कर रही है।

दिल्ली में खुशनुमा हुआ वेदर, एनसीआर के कई इलाकों में झमाझम बारिश

दिल्ली-एनसीआर में मौसम ने अचानक करवट बदली जिससे लोगों को गर्मी से राहत मिली। रविवार को राजधानी के कई इलाकों में तेज बारिश हुई जिससे मौसम सुहावना हो गया। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में भी मौसम ऐसा ही बना रहेगा और उमस से राहत मिलेगी। अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

नईदिल्ली। राजधानी को रविवार को पिछले दिन के मुकाबले गर्मी से राहत मिली। दिल्ली-एनसीआर में मौसम अचानक बदल गया है। शहर के कई इलाकों में तेज बारिश शुरू हो गई है।

बता दें कि इस दौरान दिल्ली में औसतन 12.9 मिमी बारिश दर्ज की गई। इससे मौसम सुहावना हो गया। मौसम विभाग के अनुसार, अगले कुछ दिनों तक मौसम ऐसा ही बना रहेगा। इससे उमस से राहत बरकरार रहेगी। मौसम विभाग के अनुसार, रविवार को आसमान में आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

अगले दिनों के मौसम का हाल

उल्लेखनीय है कि सोमवार को भी हल्की बारिश हो सकती है। शनिवार सुबह 8:30 बजे से शाम 5:30 बजे के बीच दिल्ली में भारत मंडपम के पास सबसे ज़्यादा 16.4 मिमी बारिश दर्ज की गई। लोधी रोड पर भी 12 मिमी बारिश दर्ज की गई। दिल्ली में अब तक कुल 69.7 मिमी बारिश हो चुकी है, जो सामान्य से थोड़ी कम है।

मानवाधिकार और ग़ज़ा: दो विरोधाभासी कहानियाँ

शम्स आग़ाज़

आज के वैश्विक परिदृश्य में जब मानवता, अधिकारों, न्याय और शांति की बातें होती हैं, तो शब्द तो ज़रूर बोले जाते हैं, लेकिन ज़मीनी हक़ीक़तें इन दावों से पूरी तरह विपरीत और बेहद दर्दनाक दिखाई देती हैं। मानवाधिकारों के पैरोकार संस्थान, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय देश और स्वयं अमेरिका जब ग़ज़ा जैसे भीषण मानवीय संकट पर आपराधिक चुप्पी साधे रहते हैं, तो यह सवाल बार-बार जन्म लेता है,क्या मानवता सिर्फ़ कुछ ख़ास वर्गों या क्षेत्रों तक सीमित है? क्या फ़िलिस्तीन के मासूम बच्चे, बुज़ुर्ग, मजबूर महिलाएँ और निर्दोष युवक इंसान नहीं हैं? अगर वे भी इंसान हैं, तो फिर उन पर टूटने वाले अत्याचारों और बर्बरता पर यह गहरी ख़ामोशी क्यों?

ग़ज़ा में भुखमरी को एक हथियार बनाकर इस्तेमाल किया जा रहा है,एक ऐसा अमानवीय और क्रूर हथकंडा जिसकी मिसाल इतिहास में कम ही मिलती है। इस्राइल और अमेरिका की निर्दयी गठजोड़ ने दुनिया की आंखों के सामने एक ऐसा निर्मम खेल रच रखा है, जिसे अगर आज भी नहीं रोका गया, तो कल का इतिहास हमें माफ़ नहीं करेगा।

ग़ज़ा एक ऐसा क्षेत्र है जिसे आधुनिक दुनिया की सबसे बड़ी खुली जेल कहा जा सकता है। 365 वर्ग किलोमीटर में फैला यह इलाक़ा लगभग 22 लाख से अधिक लोगों का घर है। 2007 के बाद से इस्राइल ने ग़ज़ा का पूरी तरह से ज़मीनी, हवाई और समुद्री नाकाबंदी कर रखी है। खाने-पीने की चीज़ें, दवाइयाँ, ईंधन, निर्माण सामग्री, यहाँ तक कि पीने के पानी तक पर सख़्त पाबंदियाँ हैं। यह सब इसलिए क्योंकि वहाँ एक विशेष सरकार सत्ता में है, लेकिन सज़ा पूरे समाज को दी जा रही है। यह सामूहिक दंड अंतरराष्ट्रीय कानूनों का खुला उल्लंघन है और इस पर दुनिया की चुप्पी इस अपराध में साझेदारी के बराबर है।

मई 2025 में एक नया नाम सामने आया Gaza Humanitarian Foundation (जी एच एफ)। इसे एक जनकल्याणकारी संस्था के रूप में पेश किया गया जो संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी UNRWA की जगह लेगी। UNRWA वही संस्था है जिसने ग़ज़ा में हज़ारों कर्मचारियों के ज़रिए 400 से अधिक राहत केंद्रों से शिक्षा, स्वास्थ्य और भोजन की सुविधाएँ उपलब्ध कराईं। लेकिन इस्राइल और अमेरिका ने UNRWA पर ₹आतंकवाद से संबंध₹ का आरोप लगाकर इसकी फंडिंग बंद करवा दी। GHF का दावा है कि वह निष्पक्ष रूप से ग़ज़ा के लोगों की सेवा कर रहा है, लेकिन इस पर भी सवाल उठ रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र के उपसंस्था UNHCR की रिपोर्ट के अनुसार, जून 2025 के दौरान केवल चार हफ़्तों में 613 फ़िलिस्तीनी युवाओं को इस्राइली गोलीबारी का शिकार होना पड़ा। ये युवा GHF के राहत केंद्रों से भोजन प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे। फायरिंग की घटनाओं में अधिकांश को सीने या सिर में गोली मारी गई, जो जानबूझकर और लक्षित हमलों की ओर इशारा करता है,जो संभावित नरसंहार की आशंका को स्पष्ट करता है। फ़िलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार, इन राहत केंद्रों के आसपास 4000 से अधिक फायरिंग की घटनाएं हो चुकी हैं, जिनमें बच्चों, महिलाओं और विकलांगों तक को निशाना बनाया गया है। ये केंद्र अब ₹मौत के जाल₹ बन चुके हैं, जहाँ जीवन की तलाश में जाने वाला या तो ताबूत में लौटता है या अस्पताल के बिस्तर पर ज़ख़्मी होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की रिपोर्ट के मुताबिक़, ग़ज़ा के लगभग 80% अस्पताल या तो पूरी तरह से तबाह हो चुके हैं या आंशिक रूप से निष्क्रिय हैं। ख़ान यूनुस का नासिर अस्पताल अब एक ₹मेगा ट्रॉमा सेंटर₹ में बदल चुका है जहाँ रोज़ दर्जनों घायलों को लाया जाता है। लेकिन दवाओं की कमी, चिकित्सकीय स्टाफ़ की अनुपलब्धता और लगातार बिजली कटौती ने हालात को असहनीय बना दिया है। अस्पतालों को भी जानबूझकर निशाना बनाया जा रहा है। एम्बुलेंस, डॉक्टर, नर्स कोई भी सुरक्षित नहीं। यह एक साफ़ संदेश है कि मानव जीवन की कोई क़ीमत नहीं है । ये सभी कार्य अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार क़ानूनों, जिनेवा कन्वेंशन और संयुक्त राष्ट्र के मूल सिद्धांतों का खुला उल्लंघन हैं।

GHF ने अपने सभी राहत केंद्र ग़ज़ा के दक्षिण और मध्य क्षेत्रों में खोले हैं, जबकि उत्तरी ग़ज़ा जहाँ सबसे अधिक बमबारी हुई वहाँ कोई भी राहत केंद्र मौजूद नहीं।(यही कारण है कि सवाल उठ रहे हैं) वहाँ के लोग भयंकर भूख, प्यास, बीमारी और डर के साये में जीवन जीने को मजबूर हैं। यह कोई प्रशासनिक असफलता नहीं बल्कि एक सोची-समझी रणनीति है। इससे यह स्पष्ट होता है कि राहत भी एक विशेष नीति और एजेंडे के तहत वितरित की जा रही है, जिसका उद्देश्य जनकल्याण नहीं बल्कि नियंत्रण, निगरानी और दबाव है।

अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ, यू एन आर डब्लू ए , आई सी आर सी और 100 से अधिक अन्य ग़ैर-सरकारी संगठन GHF मॉडल की तीव्र आलोचना कर चुके हैं। उनका कहना है कि यह मॉडल न केवल मानवीय सहायता को राजनीतिक और सैन्य लक्ष्यों के लिए इस्तेमाल करता है, बल्कि उत्तरी ग़ज़ा की आबादी को जानबूझकर सहायता से वंचित करना एक संगठित नीति और सामूहिक सज़ा की रणनीति का हिस्सा है।

इस पूरे संकट के दौरान संयुक्त राष्ट्र, ओ आई सी , यूरोपीय संघ और मानवाधिकार संगठनों की प्रतिक्रिया अत्यंत धीमी, सीमित और प्रभावहीन रही है। कहीं चिंता का इज़हार, कहीं बयान, और कहीं जांच की अपील लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं। अमेरिका, जो GHF का समर्थक और इस्राइल का सबसे बड़ा सहयोगी है, किसी भी अंतरराष्ट्रीय प्रयास को वीटो कर देता है। अन्य पश्चिमी देश या तो चुप हैं या अमेरिका के प्रभाव में हैं । नतीजतन, फ़िलिस्तीनी जनता अकेली, असहाय और लगातार जनसंहार का शिकार बनती जा रही है।

अंतरराष्ट्रीय क़ानूनों के अनुसार, किसी भी युद्ध में नागरिकों को निशाना बनाना, उनके लिए भोजन और दवाओं की पहुँच को बंद करना और उन्हें सामूहिक दंड देना युद्ध अपराध के दायरे में आता है। लेकिन इस्राइल और उसके सहयोगी इन क़ानूनों को अपने हितों के अधीन कर चुके हैं। भोजन, पानी, चिकित्सा सेवाएँ, शिक्षा ये सभी मानवीय अधिकार हैं, जो ग़ज़ा में पूरी तरह से निलंबित हो चुके हैं। यह न सिर्फ़ अंतरराष्ट्रीय क़ानूनों का उल्लंघन है, बल्कि मानवता के अंतःकरण का अपमान भी है।नरसंहार (Genocide) की परिभाषा के अनुसार, जब किसी नस्ल, धर्म या समुदाय को संगठित रूप से समाप्त करने का प्रयास किया जाए, तो वह नरसंहार कहलाता है। ग़ज़ा में जो कुछ हो रहा है, वह इस परिभाषा पर पूरी तरह से खरा उतरता है। फ़िलिस्तीनियों को भोजन से वंचित किया जा रहा है, पानी रोका जा रहा है, उनके बच्चों को शिक्षा से वंचित किया जा रहा है, उनके अस्पताल नष्ट किए जा रहे हैं, और उनकी नस्ल को मिटाने की योजनाबद्ध साज़िश जारी है। अगर यह नरसंहार नहीं है, तो फिर क्या है?अब समय आ गया है कि दुनिया गहरी नींद से जागे। इस्राइल और अमेरिका की आक्रामक नीतियाँ सिर्फ़ ज़ुल्म नहीं, बल्कि मानवता के चेहरे पर एक काला धब्बा हैं। यह मसला सिर्फ़ फ़िलिस्तीनी क़ौम का नहीं, बल्कि पूरी मानवता के ज़मीर का इम्तिहान है। अगर आज दुनिया चुप रही, तो याद रखिए कल कोई और क़ौम, कोई और नस्ल इसी बर्बरता का शिकार हो सकती है। यह घाव सिर्फ़ ग़ज़ा का नहीं, बल्कि मानवता की आत्मा पर लगा एक नासूर है।अब समय आ गया है कि मुस्लिम देश, वैश्विक जमीर, मानवीय कल्याणकारी संगठन और हर वह इंसान, जो अपने सीने में दिल रखता है, इस अत्याचार के ख़िलाफ़ एकजुट होकर शांतिपूर्ण आवाज़ उठाए। अगर हमने आज भी चुप्पी को चुना, तो आने वाला इतिहास हमें कायर, संवेदनहीनऔर राजनीतिक स्वार्थों के ग़ुलाम के रूप में याद रखेगा।

कुछ राजनीतिक दल एक धर्म विशेष के लोगों के तुष्टिकरण की राजनीति करते रहे हैं - *वीरेन्द्र सचदेवा*

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता सरकार कांवड़ यात्रियों के दिल्ली प्रवास के लिए पिछले वर्षो से बेहतर व्यवस्था कर रही है, कांवड़ समितियों को सीधा बैंक फंड देकर उन्हे भी व्यवस्थाएं सुधारने में सहयोग दिया है।

दिल्ली में हर तरफ कांवड़ियों के चलने के लिए विशेष ट्रैक बनाये जा रहे हैं, राह में उनकी यात्रा में असुविधा ना हो इस पर विशेष ध्यान दे रही हैं और उनको मैड़िकल कैम्प तक लगाये जा रहे हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कल रात पूर्वी दिल्ली के शाहदरा क्षेत्र में कांवड़ियों के लिए बनाए विशेष ट्रैक पर लगभग एक किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में शीशे के टुकड़े डले पाये गये जो एक गम्भीर चिंता का विषय है।

दिल्ली पुलिस इसकी जांच कर रही है और शीघ्र सच्चाई सामने आयेगी और ऐसा कुकृत्य करने वाले पकड़े जायेंगे।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की शीशे के छोटे बड़े टुकड़ों का इतने लम्बे कांवड़ ट्रैक पर डाला जाना साफ दर्शाता है की यह आसामाजिक तत्वों की शांति भंग करने की सोची समझी साजिश है।

सचदेवा ने कहा है की कुछ राजनीतिक दल एक धर्म विशेष के लोगों के तुष्टिकरण की राजनीति करते रहे हैं और उनकी इस पर चुप्पी उनकी भूमिका को भी संदिग्ध बना रही है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की भगवान का शुक्र है की कांवड़ का अभी प्रारंभिक दौर है तो कल रात उस कांच बिखरे प्रभावित कांवड़ ट्रैक पर कांवड़ियों की चाल नही थी अन्यथा बड़ा हादसा हो सकता था अथवा उत्पात की स्थिती भी उत्पन्न हो सकती थी।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, द्वारा जनपद में अलग अलग स्थानों पर काँवड़ यात्रा पुलिस सहायता केन्द्र का फीता काटकर उद्घाटन किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, द्वारा जनपद में अलग अलग स्थानों पर काँवड़ यात्रा पुलिस सहायता केन्द्र का फीता काटकर उद्घाटन किया गया तथा कांवडियों पर पुष्प वर्षा कर उन्हे फल इत्यादि वितरित किये गये।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, बदायूँ डॉ0 बृजेश कुमार सिंह द्वारा श्रावण मास एवं काँवड़ यात्रा को सकुशल एवं शान्तिपूर्वक संपन्न कराने के दृष्टिगत थाना उझानी क्षेत्रान्तर्गत बाबूजी कल्यान सिंह चौक, थाना सिविल लाइन क्षेत्रान्तर्गत अवन्ती बाई चौराहा तथा लालपुल तिराहा पर काँवड़ यात्रा पुलिस सहायता केन्द्र का फीता काटकर उद्घाटन किया गया।

राज मार्ग से होकर गुजरते शिव भक्त कांवड़यिों की सहायतार्थ थाना उझानी, सिविल लाइन्स व कोतवाली क्षेत्र में कांवड़ यात्रा पुलिस सहायता केन्द्र / सेवा शिविर का का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर कांवड़ यात्री व गणमान्य लोग मौजूद रहे। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा शिव भक्तों पर श्रद्धा भाव से पुष्प वर्षा करते हुए फल इत्यादि से सेवा की। इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक नगर विजयेन्द्र द्विवेदी, पुलिस उपाक्षीक नगर रजनीश कुमार उपाध्याय, पुलिस उपाधीक्षक उझानी डा0 देवेन्द्र कुमार आदि मौजूद रहे।

बिसौली में कार वर्कशॉप में लगी भीषण आग, कई गाड़ियां चलकर हुई राख आग की लैपटें देख भीड़ हुई एकत्रित, आग लगने की काफी देर बाद पहुंची फायर ब्रिगेड सूचना पर पहुंची बिसौली थाना पुलिस, कई गाड़ियां जलकर हुई राख, सूचना पर एसपी देहात मौके पर, जांच पड़ताल में जुटी पुलिस

बदायूं। पुलिस द्वारा ब्लेड वाले तारों हटवाने के आदेश को ताक में रख दिया गया है, जिस वजह से आये दिन हादसे हो रहे, यह घोड़ा बदायूं के समरेर ब्लॉक में तारों से ज़ख़्मी हुआ, घटना की सूचना पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा ने पूर्व सांसद व मंत्री मेनका गाँधी को दी, मेनका गाँधी ने तत्काल जिलाधिकारी बदायूं से संपर्क किया और घोड़े को रेस्क्यू करवाने के लिए कहा साथ ही ब्लेड वाले तारों को हटवाने के लिए भी कहा, सूचना मिलने के बाद भी कल से आज तक घोड़ा रेस्क्यू नहीं किया गया, घोड़े की तकलीफ देखते हुए विकेंद्र शर्मा ने अपनी गाडी भेजकर घोड़ा रेस्क्यू करवाया। और उसे अपने शेल्टर पर संरक्षित कराया जहाँ उसका उपचार किया जायेगा।आखिर इन पशुओं की जिम्मेदारी किस विभाग की है, कौन जिम्मेदार है इनके लिए.क्या पशु प्रेमी इनके लिए जिम्मेदार है.

बिजली कटौती से ग्रामीण क्षेत्र में हाहाकार, गर्मी में बिलबिला उठे लोग

ग्रामीण क्षेत्र को रात्रि में दी जाती है लाइट दिन में नहीं दी जाती है लाइट : जेई सतीश चंद्र

अमर भास्कर संवाददाता

बिनावर: शहरों और गांवों में अघोषित बिजली कटौती से हाहाकार मचा है। लोग गर्मी में परेशान हैं और पानी की कमी का सामना कर रहे हैं।

मामला जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र का है जहां दिन शनिवार की रात्रि लगभग 11:00 से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को विद्युत आपूर्ति अगले दिन रविवार की शाम 5:00 बजे तक न मिलने के कारण ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है।

जिसको लेकरशहर और गांवों में की जा रही अघोषित बिजली कटौती से हाहाकार मचा है। शेड्यूल के मुताबिक रात और दिन में बिजली न मिलने से लोग परेशान हैं और गुस्से में हैं। भीषण गर्मी में बेतहाशा बिजली कटौती से हाहाकार मचा है। आम जनजीवन बुरी तरह अस्तव्यस्त हो गया है। यहां तक कि लोगों को पीने का पानी तक समय से उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। शनिवार की रात्रि भर बिजली कटौती होती रही और रात को ग्रामीण क्षेत्र में कई फीडरों में रात लगभग 11 बजे फिर से कटौती हो गई।

1. कुछ ग्रामीणों ने बताया कि बिजली विभाग के अधिकारी उनकी शिकायतों को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं।

2. बिजली की कटौती के कारण, ग्रामीण आर्थिक रूप से भी प्रभावित हो रहे हैं, क्योंकि वे अपने काम समय पर नहीं कर पा रहे हैं।

3. 24 घंटे से बिजली न होने के कारण, ग्रामीण अपने घरों में पानी भरने, खाना पकाने, और अन्य दैनिक कार्यों को करने में असमर्थ हैं।

4. बिजली न होने से, पानी की मोटरें नहीं चल पा रही हैं, जिससे पानी की कमी हो रही है।

5. ग्रामीणों को खाना पकाने के लिए लकड़ी या अन्य ईंधन का उपयोग करना पड़ रहा है, जिससे पर्यावरण को भी नुकसान हो रहा है।

6. बिजली न होने से, बच्चों की पढ़ाई में भी बाधा आ रही है, खासकर उन घरों में जहां बिजली से चलने वाले उपकरण जैसे कि पंखे और कूलर नहीं हैं।

इस संबंध में बिनावर विद्युत अवर अभियंता सतीश चंद्र का कहना है कि बिजली न आने की जानकारी लाइनमैन से लें और रही बात बिजली की तो वह ग्रामीण क्षेत्र को रात्रि में दी जाती है दिन में नहीं दी जाती है।

इस संबंध में बिनावर विद्युत उपकेंद्र एस एच ओ बेदराम का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्र की लाइट चलाने के लिए क्या हम कस्बा बिनावर की लाइट बंद कर दें।

इस संबंध में विद्युत उपकेंद्र बिनावर के एस डी ओ बिनावर अमर सिंह का कहना है कि इस तरह का सरकार द्वारा कोई भी रूल्स नहीं बनाया है। चाहे दिन हो या रात अगर विद्युत उपकेंद्र पर लाइट आ रही है तो सभी ग्रामीण क्षेत्र को दी जाएगी। इस तरह से जेई सतीश चंद्र का कहना गलत है कि ग्रामीण क्षेत्र को दिन में लाइट नहीं दी जाती है रात में दी जाती है।

श्रीहित रासमण्डल में भक्तिमती रसिक सिद्ध संत ऊषा बहिनजी का त्रिदिवसीय जन्म शताब्दी महोत्सव 28 जुलाई से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। अखिल भारतीय निर्मोही बड़ा अखाड़ा (श्रीहित रासमंडल) में भक्तिमती रसिक सिद्ध संत ऊषा बहिनजी (बोबो) का त्रिदिवसीय जन्म शताब्दी महोत्सव 28 से 30 जुलाई 2025 पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।

जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि श्रीहित बड़ा रासमंडल के अध्यक्ष श्रीमहंत लाड़िली शरण महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित होने वाले इस महोत्सव के अंतर्गत 28 से 29 जुलाई पर्यन्त प्रातः 9 से 10 बजे तक संतप्रवर बिहारीदास भक्तमाली महाराज के द्वारा भक्तिमती संत ऊषा बहिनजी का जीवन चरित्र व पद गायन किया जाएगा।इसके अलावा सायं 04:30 से 07:30 बजे तक प्रख्यात रासाचार्य स्वामी पुलिन बिहारी शर्मा के निर्देशन में श्रीसखाजी द्वारा प्रदत्त लीला पर आधारित रासलीला की प्रस्तुति दी जाएगी।

उन्होंने बताया कि 30 जुलाई को प्रातः 08 बजे से संत ऊषा बहिनजी के चित्रपट का पूजन-अर्चन व पद गायन होगा।तत्पश्चात 09 बजे से वृहद सन्त-विद्वत सम्मेलन का आयोजन होगा।जिसमें कई प्रख्यात संत, विद्वान और धर्माचार्य आदि भाग लेंगे।

श्रीपरशुराम शोभायात्रा समिति ने किया डॉ. गोपाल चतुर्वेदी का सम्मान

परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन। श्रीपरशुराम शोभायात्रा समिति के द्वारा नगर के प्रख्यात साहित्यकार, अध्यात्मविद्, पत्रकार एवं समाजसेवी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, एडवोकेट का उनके द्वारा की गई अविस्मरणीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।साथ ही उन्हें ₹विप्र गौरव सम्मान₹ से अलंकृत किया गया।उन्हें यह सम्मान श्रीपरशुराम शोभायात्रा समिति के मुख्य संयोजक पण्डित आशीष गौतम (चिंटू), एडवोकेट और समिति के अध्यक्ष पण्डित धर्मेंद्र गौतम (लीला) ने संयुक्त रूप से प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके प्रदान किया।साथ ही प्रभु से उनके स्वस्थ, उज्ज्वल व सुखद जीवन की मंगल कामना की।

इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा के जिलाध्यक्ष इंजीनियर राजकुमार शर्मा, सुभाष गौड़ (लाला पहलवान), पण्डित सत्यभान शर्मा, पण्डित चन्द्रलाल शर्मा (गुरूजी), पार्षद राधाकृष्ण पाठक, संत रामदास महाराज, प्रमुख समाजसेवी विष्णु शर्मा, डॉ. केशवाचार्य महाराज, पण्डित योगेश द्विवेदी, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य आनंद बल्लभ गोस्वामी, दिनेश शर्मा फलाहारी, प्रमोद गौतम, ईश्वरचंद्र रावत, महेश भारद्वाज आदि के अलावा विप्र समाज के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

आज सुबह 5 :00 बजे के करीब मंगोलपुरी फ्लावर के ऊपर तेज रफ्तार ट्रक वाले ने एक बाइक सवार को टक्कर मारी इसके बाद बाइक उसके परिजनों से हॉस्पिटल लेकर गए अंबेडकर में तो उन्होंने उसे मृत्यु घोषित कर दिया ट्रक और बेसन वालों का दिल्ली के अंदर रफ्तार का कर हमने का नाम नहीं ले रहा आए दिन ऐसे एक्सीडेंट देखने को मिल रहे हैं

घटना आज सुबह 4 .30 बजे की है।मंगोलपुरी से दीपाली चौक फ्लाई ओवर के ऊपर जाते वक्त ट्रक की टक्कर से बुलट चालक शत्रुघन नामक व्यक्ति की मौके पर हुई मौत मौजूदा लोगों ने कहा ट्रक चालक ने टक्कर मारकने के बाद मृतक शत्रुघन की बुलट को ट्रक के पीछे लाकर खड़ा कर दिया। जिससे एक्सीडेंट का एंगल ही चेंज हो जाए और ट्रक चालक साफ साफ बच जाए।

ट्रंप के टैरिफ वार पर जग हंसाई- दुनियाँ से दुश्मनी की नौबत आई ?- नोबेल शांति पुरस्कार पाने की चांस घटाई ?

ट्रंप ने अमेरिकी फर्स्ट के लिए कमर कसी- दुनियाँ के देशों की व्यापार नीति फंसी- ब्रिक्स देशों, यूरोपीय यूनियन, अफ्रीकी देशों, ग्लोबल साउथ, छटनी के लिए घेराबंदी कसी-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ जानती है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा अमेरिकी फर्स्ट, टैरिफ, मेक अमेरिका ग्रेट अगेन, गैरकानूनी अप्रवासियों का मुद्दा सहित अनेको वादे किए थे जिन्हें पूरा करने के लिए वह हद से अधिक स्पीड से भिड़ गए हैं, परंतु में जल्दबाजी से कोई भी काम करना हानिकारक हो सकता है, इसपर भारत में कई कहावतें हैं, जैसे जल्दबाजी का काम शैतानी कम, धैर्य रखो सहित अनेकों कहावतें हैं। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि ट्रंप जब से चुनकर आए हैं, अपने चुनावी वादे बहुत जल्दबाज़ी से लागू करने उमड़ पड़े हैं, जबकि मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं के किसी भी काम, वादों, उम्मीदों को पूरा करने धैर्य से व संकल्प के साथ रणनीतिक रूप से काम करने कीजरूरत है, ताकि उसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम देखने को मिले। मेरे विचार में शायद ट्रंप साहब इस जल्दबाजी में ही काम कर रहे हैं, जिसका सटीक उदाहरण यह है कि जिस तरह वह निर्णय लेकर फिर उन्हें खारिज करना, या उन्हेंएक्सटेंशन देना एक बारगेनिंग नीति की और बढ़ रहे हैं, अफ्रीकी पांच देशों के के साथ सम्मेलन में व्यवहार, अनेक आर्थिक मजबूत देशों से व्यवहार सहित अनेक मुद्दों पर दबावतंत्र व दादागिरी का आभास हो रहा है, कि पूरी दुनियाँ से एक तरह से दुश्मनी की ओर पग बढ़ा रहे हैं। क्योंकि वह अपने घरेलू यूरोपीय यूनियन पर भी टैरिफ लगाकर, चीन पर 145 पर्सेंट टैक्स लगाकर फिर पीछे हटना, सभी को टैरिफ का अल्टीमेटम देकर दबाव बनाना उचित नहीं है, इस बात का संयुक्त वक्तव्य ब्रिक्स सम्मेलन में भी दिया गया था। चूँकि ट्रंप जब से राष्ट्रपति बने हैं अपनी नीतियों, बयानों से सुर्खियों में रहे हैं, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ट्रंप के टैरिफ वार पर जग हंसाई- दुनियाँ से दुश्मनी की नौबत आई ?-नोबेल शांति पुरस्कार पाने की चांस घटाई ?साथियों बात अगर हम 12 जुलाई 2025 को मेक्सिको व यूरोपीय यूनियन पर 30 पेर्सेंट टैरिफ़ 1 अगस्त 2025 से लागू करने की घोषणा करने की करें तो, उन्होंने इस संबंध में मैक्सिको और यूरोपीय संघ को लिखे पत्रों को अपने सोशल मीडिया हैंडल से शेयर करके जानकारी दी।ट्रंप के इस कदम से ट्रेड वॉर के और तीव्र होने की संभावना बढ़ गई है, खासकर ऐसे समय में जब यूरोपीय संघ अपने सहयोगी अमेरिका के साथ एक व्यापक व्यापार समझौते पर काम कर रहा है। 27 सदस्यीय यूरोपीय संघ को अब अमेरिकी बाजारों में भारी बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है, ट्रंप की यह घोषणा इस सप्ताह की शुरुआत में जापान, साउथ कोरिया, कनाडा और ब्राजील से आने वाले सामानों पर टैरिफ में की गई बढ़ोतरी के बाद आई है।उन्होंने इन देशों से तांबे के आयात पर 50 प्रतिशत का भारी टैरिफ लगाया है।यूरोपियन यूनियन कमीशन की प्रेसिडेंट ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के फैसले पर कहा, 'यूरोपीय संघ के निर्यात पर 30 परसेंट टैरिफ अटलांटिक के दोनों ओर के व्यवसायों, उपभोक्ताओं और मरीजों को नुकसान पहुंचाएगा।हम 1 अगस्त तक समझौते की दिशा में काम करना जारी रखेंगे, साथ ही, हम 30 पेर्सेंट टैरिफ के इस फैसले पर उचित प्रक्रियात्मक कदम उठाने और यूरोपीय संघ के हितों की रक्षा के लिए तैयार हैं।इस चिट्ठी में कहा गया है कि मजबूत संबंधों के बावजूद, अमेरिका ने मैक्सिको के 'फेंटेनल संकट' से निपटने के लिए उस पर टैरिफ लगाया है, इसके बारे में कहा गया कि यह आंशिक तौर पर मैक्सिको की तरफ से कार्टेल्स को रोकने में असफलता के कारण है, ट्रंप

के अनुसार, मेक्सिको मुझे बॉर्डर सुरक्षित करने में मदद कर रहा है, लेकिन इस देश ने जो किया है वह काफी नहीं है, मेक्सिको ने अभी तक उन कार्टेल्स को नहीं रोका है जो पूरे उत्तरी अमेरिका को नार्को-तस्करी के मैदान में बदलने की कोशिश कर रहे हैं. जाहिर है, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने मैक्सिको और यूरोपियन यूनियन (ईयू) पर 30 फीसदी तक टैरिफ लगाने का ऐलान कर दिया है, इन देशों पर टैरिफ एक अगस्त से लागू हो जाएगा, इससे पहले ट्रंप ने अमेरिका के सात छोटे व्यापारिक साझेदारों को टैरिफ की चिट्ठी भेजी है जिसमें फिलीपींस, ब्रुनेई, मोल्दोवा, अल्जीरिया, लीबिया, इराक और श्रीलंका जैसे देश शामिल हैं।

साथियों बात अगर हम ब्राजील में दो दिवसीय ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के संयुक्त वक्तव्य पर ट्रंप के नाराजगी वाले बयान की करें तो, एक संयुक्त वक्तव्य में पीएमसहित ब्रिक्स नेताओं ने कहा कि हम एकतरफा टैरिफ और गैर-टैरिफ उपायों के बढ़ने पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हैं, जो व्यापार को विकृत करते हैं और डब्ल्यूटीओ के नियमों के अनुरूप नहीं हैं। बयान में "वैश्विक व्यापार में टैरिफ के बढ़ते उपयोग" का भी उल्लेख किया गया। हालांकि इस दौरान नाम नहीं लिया गया, लेकिन सभी जानते हैं कि बात अमेरिका की हो रही है।इसके अलावा ब्रिक्स के साझा बयान में चेतावनी दी गई कि टैरिफ के निरंतर 'अंधाधुंध' उपयोग से वैश्विक व्यापार कम हो सकता है। इसके अलावा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो सकती है, तथा अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक और व्यापारिक गतिविधियों में अनिश्चितता पैदा हो सकती है, जिससे मौजूदा आर्थिक असमानताएं और बढ़ सकती हैं। तेहरान अब इस संगठन का पूर्ण सदस्य है और यह अपरिहार्य था कि संयुक्त वक्तव्य में इजरायल के साथ सैन्य संघर्ष और अमेरिका द्वारा उसके परमाणु प्रतिष्ठानों पर बमबारी का उल्लेख किया गया। अब सवाल ये हैं कि आखिर क्यों ट्रंप ब्रिक्स को निशाना क्यों बना रहा है। इसको लेकर पश्चिम के अर्थशास्त्री और नीति विश्लेषक चाहे जो भी कहें, ऐसा प्रतीत होता है कि यह गुट अपने समर्थक जुटा रहा है और अमेरिका तथा अन्य पारंपरिक शक्तियों के लिए चुनौती के रूप में उभर रहा है। उदाहरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए पसंदीदा मुद्रा के रूप में डॉलर को हटाने की बात करने को बल1 दे रहा है।इसके अलावा नव-विकसित, विकासशील और अल्प-विकसित अर्थव्यवस्थाओं पर इसके बढ़ते प्रभाव के कारण अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के लिए सौदे करते समय शर्तें तय करना कठिन हो गया है। ब्रिक्स की स्थापना 2009 में हुई थी, इथियोपिया, संयुक्त अरब अमीरात और ईरान तथा 2025 में इंडोनेशिया भी इसमें शामिल होंगे। 6 महीने पहले ब्रिक्स करेंसी को लेकर जब समूह के देशों ने बड़ा ऐलान किया था, और डॉलर को चुनौती देने की बात कही थी, तो उस दौरान भी ट्रंप ने गुस्सा जाहिर किया था। ट्रंप ने कहा था कि ऐसे देशों पर 100 फीसदी टैरिफ लगाया जाएगा। एक तरफ ट्रंप धमकियां दे रहे हैं तो दूसरी ओर उनकी धमकियों से ब्रिक्स देशों के बीच संबंध और ज्यादा मजबूत होते नजर आ रहे हैं।

साथियों बात अगर हम अमेरिकी विदेश विभाग के 1300 से अधिक कर्मचारियों की छटनी की करें तो, अमेरिका में, संघीय कर्मचारियों की संख्या में कटौती करने के ट्रम्प प्रशासन के प्रयासों के तहत, विदेश विभाग के 1,000 से ज़्यादा कर्मचारियों को नौकरी से निकाल दिया गया है। स्थानीय मीडिया के अनुसार, अनैच्छिक रूप से की गई इस छंटनी में 1,107 सिविल सेवा और 246 विदेश सेवा के कर्मचारी शामिल हैं।इसमें यह भी कहा गया है कि अमेरिकी शरणार्थी प्रवेश कार्यालय के लगभग सभी सिविल सेवा कर्मचारियों की छंटनी कर दी गई है। संघीय सरकार के व्यापक पुनर्गठन प्रयास के तहत, इस साल की शुरुआत में 1,500 से ज़्यादा विदेश विभाग के कर्मचारियों ने स्वेच्छा से नौकरी छोड़ दी थी। यह छंटनी सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले के कुछ ही दिनों बाद हुई है जिसमें कहा गया था कि ट्रम्प प्रशासन की संघीय कर्मचारियों की संख्या में कटौती की योजना आगे बढ़ सकती है।अमेरिका में संघीय सरकार में छंटनी को सुप्रीम कोर्ट में भी चुनौती दी गई थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने भी छंटनी जारी रखने के पक्ष में फैसला सुनाया। अमेरिकी विदेश विभाग के उप सचिव ने कहा कि जिन कर्मचारियों की छंटनी की जाएगी, उन्हें जल्द ही सूचित कर दिया जाएगा।अभी यह स्पष्ट नहीं है कि विदेश मंत्रालय से कितने लोगों को निकाला जाएगा। विदेश मंत्रालय ने मई में कांग्रेस को छंटनी और पुनर्गठन के बारे में सूचित किया था। विदेश मंत्रालय ने यह भी कहा कि पिछली सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों में कटौती की जाएगी।

साथियों बात अगर हम अफ्रीकी देशों के तीन दिवसीय शिखर सम्मेलन में बैठक में ट्रंप द्वारा व्यवहार प्रिंसिपल का रोल अदा करने की करें तो, राष्ट्रपति ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में अफ्रीका के 5 देशों के राष्ट्र-प्रमुखों के साथ तीन दिनों का शिखर सम्मेलन शुरु किया। ये 5 देश हैं, गैबॉन गिनी-बिसाऊ लाइबेरिया, मॉरिटानिया और सेनेगल। 9 जुलाई को इस मीटिंग में राष्ट्रपति ट्रम्प किसी स्कूली बच्चों की क्लास में बैठे प्रिंसिपल की तरह बर्ताव करते रहे। उन्होंने सबसे पहले मॉरिटानिया के प्रेसिडेंट को अपनी बात रखने का मौका दिया। पर उनका बयान शुरु होने के थोड़ी देर बाद ही राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप बेचैन हो गए। राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने हाथों से इशारा करके मॉरिटानिया के प्रेसिडेंट को अपनी बात जल्द खत्म करने का संकेत दिया। पर इसके बाद भी मॉरिटानिया के प्रेसिडेंट अपने देश कीसमस्याओं के बारे में बताते रहे। शायद वो अमेरिका से कुछ मदद चाहते होंगे। और तब राष्ट्रपति ट्रम्प ने अपना सिर हिलाते हुए हाथों से दूसरी बार इशारा किया और इस बार उनकी झुंझलाहट देखकर मॉरिटानिया के प्रेसिडेंट अचानक खामोश हो गए। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प किस तरह ग्लोबल साउथ के साथ भेदभाव करते हैं। जबकि हमारे पीएम इन्हीं देशों की मदद के लिए हमेशा खड़े रहते हैं, उनके सुख-दुख का ख्याल करते हैं और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर ग्लोबल साउथ के उन मुद्दों को भी उठाते हैं, जिसे पश्चिमी देश आजतक अनदेखा करते आए हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ट्रंप के टैरिफ वार पर जग हंसाई- दुनियाँ से दुश्मनी की नौबत आई ?-नोबेल शांति पुरस्कार पाने की चांस घटाई ?ट्रंप जब से राष्ट्रपति बने हैं, अपनी नीतियों व बयानों से सुर्खियों में रहे है

नें अमेरिकी फर्स्ट के लिए कमर कसी- दुनियाँ के देशों की व्यापार नीति फंसी-ब्रिक्स देशों, यूरोपीय यूनियन, अफ्रीकी देशों, ग्लोबल साउथ, छटनी के लिए घेराबंदी कसी मेरे विचार से सबसे कठिन स्थिति होगा

फॉक्सवेगन वरटस ऑटोमेटिक को है खरीदना, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद जाएगी इतनी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस प्लान फॉक्सवेगन की ओर से मिड साइज सेडान कार के तौर पर Volkswagen Virtus को ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस कार को ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Volkswagen की ओर से भारतीय बाजार में सेडार का सेगमेंट में बिक्री के लिए Virtus को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली इस मिड साइज सेडान कार के ऑटोमैट्रिक बेस वेरिएंट को अगर खरीदने के लिए दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट की जाती है तो हर महीने कितने रुपये की EMI देनी होगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Volkswagen Virtus Highline AT Price

Volkswagen की ओर से Virtus के बेस वेरिएंट के तौर पर Highline AT को ऑफर किया जाता है। कंपनी इस मिड साइज सेडान कार के ऑटोमैटिक बेस वेरिएंट को 14.88 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 14.88 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 1.55 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 37 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा इस पर करीब 30 हजार रुपये का टीसीएस और अन्य चार्ज भी देने होंगे। जिसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 16.99 लाख रुपये हो जाती है।

दो लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Volkswagen Virtus के बेस वेरिएंट Highline AT को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 14.99 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 14.99 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 24126 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 14.99 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 24126 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Volkswagen Virtus के बेस वेरिएंट Highline AT के लिए करीब 5.27 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 22.26 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Volkswagen की ओर से Virtus को मिड साइज सेडान कार सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Skoda Slavia, Hyundai Verna, Honda City जैसी कारों के साथ होता है।

जुलाई 2025 में होंडा की कारों को खरीदने पर मिलेगा लाखों रुपये का डिस्काउंट , जानें किस पर होगी कितनी बचत

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख कार और एसयूवी ऑफर करने वाली जापानी कंपनी Honda Cars की ओर से July 2025 में अपनी कार और एसयूवी पर हजारों रुपये के डिस-काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। कंपनी की ओर से किस कार और एसयूवी को खरीदने पर कितना कैश डिस-काउंट एव सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट बोनस के तौर पर डिस-काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नईदिल्ली। भारतीय बाजार में जापानी वाहन निर्माता Honda Cars की ओर से एसयूवी से लेकर सेडान सेगमेंट में कई कारों को ऑफर किया जाता है। अगर आप July 2025 में होंडा की कार खरीदने का मन बना रहे हैं, तो निर्माता की ओर से इस महीने अपनी कारों और एसयूवी पर किस तरह के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

Honda Amaze पर क्या है ऑफर

होंडा की ओर से July 2025 में अपनी कॉम्पैक्ट सेडान कार Honda Amaze पर हजारों रुपये के डिस्काउंट ऑफर दिए जा रहे हैं। निर्माता की ओर से इस महीने इस गाड़ी को खरीदने पर अधिकतम 57200 रुपये के ऑफर मिल रहे हैं। होंडा की ओर से यह ऑफर इसकी दूसरी जेनरेशन के बचे हुए स्टॉक पर दिया जा रहा है। वहीं तीसरी जेनरेशन अमेज पर सिर्फ कॉर्पोरेट और मौजूदा होंडा ग्राहकों के लिए ही ऑफर्स को दिया जा रहा है। Honda Amaze की दूसरी जेनरेशन की एक्स शोरूम कीमत 7.62 लाख और तीसरी जेनरेशन की एक्स शोरूम कीमत 8.10 लाख रुपये से शुरू हो जाती है।

Honda City भी होगी बचत

होंडा की ओर से मिड साइज सेडान के तौर पर सिटी को ऑफर किया जाता है। July 2025 के दौरान इस कार पर भी कंपनी की ओर से डिस्काउंट ऑफर किए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इस महीने सिटी को खरीदने पर 107300 रुपये का अधिकतम फायदा लिया जा सकता है। यह ऑफर इसके सामान्य मॉडल पर दिया जा रहा है। वहीं सिटी के हाइब्रिड वर्जन Honda City e:HEV पर इस महीने किसी भी तरह के ऑफर नहीं दिए जा रहे हैं। Honda City की एक्स शोरूम कीमत 12.38 लाख रुपये से हो जाती है और इसके हाइब्रिड वर्जन की एक्स शोरूम कीमत 19.90 लाख रुपये से शुरू होती है।

Honda Elevate पर सबसे ज्यादा बचत

होंडा की ओर से साल 2023 में ही Elevate को भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया था। जिसके बाद से ही कंपनी को इस एसयूवी के लिए बेहतरीन प्रतिक्रिया मिल रही है। July 2025 के दौरान अगर आप इस एसयूवी को खरीदने का मन बना रहे हैं, तो इस महीने में इस एसयूवी कंपनी की ओर से अधिकतम 120100 रुपये का डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। इस एसयूवी की कीमत की शुरूआत 11.91 लाख रुपये से हो जाती है।

महंगा हो गया टाटा टिआगो को खरीदना, बुक करवाने से पहले जान लें कितनी बढ़ गई कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सबसे सस-ती गाड़ी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Tata Tiago की कीमतों को बढ़ा दिया गया है। बढ़ोतरी के बाद अब इसकी नई कीमत क या हो गई है। आइए जानते हैं।

नईदिल्ली। भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता Tata Motors की ओर से अपनी हैचबैक कार की कीमत में बढ़ोतरी की गई है। निर्माता की ओर से Tata Tiago की कीमत में कितनी बढ़ोतरी की गई है। अब इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है। किस वेरिएंट की कीमत को कितना बढ़ाया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महंगी हुई टाटा टिआगो

टाटा मोटर्स की ओर से हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Tata Tiago की कीमत में बढ़ोतरी कर दी गई है। निर्माता की ओर से इस हैचबैक कार के सभी वेरिएंट्स की कीमतों में बढ़ोतरी नहीं की गई है।

किन वेरिएंट्स की कीमत बढ़ी

जानकारी के मुताबिक निर्माता की ओर से इसके बेस वेरिएंट की कीमत में कोई बदलाव नहीं किया गया है। इसके अलावा बाकी सभी वेरिएंट्स की कीमत में 10 हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। जिन वेरिएंट्स की कीमत में कोई बदलाव नहीं हुआ है उनमें XE और iCNG शामिल हैं। इनके अलावा जिन वेरिएंट्स की कीमत बढ़ाई गई हैं उनमें Petrol- XM, XZ+, XZA और CNG में XM, XZ, XZA शामिल हैं।

कुछ वेरिएंट्स की कीमत पांच हजार रुपये तक बढ़ी

कुछ वेरिएंट्स की कीमत में पांच हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। इनमें Petrol- XT, XTA और CNG के XT, XTA शामिल हैं।

कितनी हुई कीमत

कीमतों में बढ़ोतरी के बाद अब Tata Tiago की एक्स शोरूम कीमत पांच लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 8.55 लाख रुपये तक है।

किनसे है मुकाबला

Tata Tiago को भारतीय बाजार में एंट्री लेवल हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में टाटा टियागो का सीधा मुकाबला Maruti Wagon R, Maruti Celerio, Maruti S Presso, Renault Kwid, Hyundai Grand Nios i10 जैसी कारों के साथ होता है। वहीं कीमत के मामले में इसे Renault Kiger,

कर रहे हैं टाटा हैरियर ईवी को खरीदने की तैयारी, जान लें कब से शुरू होगी एसयूवी की डिलीवरी

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जून 2025 में ही Tata Harrier EV को लॉन-च किया गया है। अगर आप भी इस एसयूवी को खरीदने का मन बना रहे हैं तो इसकी डिलीवरी को कब से शुरू करने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Tata Motors की ओर से जून 2025 में ही Tata Harrier EV को लॉन्च किया गया है। निर्माता इस एसयूवी के लिए बुकिंग शुरू कर चुकी है। अगर आप भी इसे बुक करवाने के बाद डिलीवरी का इंतजार कर रहे हैं तो टाटा की ओर से इसकी डिलीवरी को कब से शुरू किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

कब से शुरू होगी डिलीवरी

Tata Harrier EV के लिए बुकिंग को भी कुछ समय पहले ही शुरू किया गया है। इसके बाद गाड़ी की डिलीवरी भी जल्द शुरू की जाएगी। निर्माता की ओर से जानकारी दी गई है कि वह जुलाई 2025 से एसयूवी की डिलीवरी को शुरू कर देगी।

जून में हुई थी लॉन-च

टाटा की ओर से हैरियर ईवी को तीन जून 2025 को ही लॉन्च किया गया है। निर्माता की ओर से लॉन्च के कुछ समय बाद इसकी बुकिंग को शुरू किया गया है। बुकिंग शुरू होने के 24 घंटे में ही इसके लिए 10 हजार से ज्यादा बुकिंग टाटा मोटर्स को मिल चुकी हैं।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से इलेक्ट्रिक एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें शॉर्क फिन एंटीना, बॉडी कलर्ड बंपर, एलईडी बाई-प्रोजेक्टर हेडलैंप, इंटीग्रेटिड स्पॉयलर, एलईडी डीआरएल, सनरूफ, फ्रंट फॉग लैंप, 26.03 सेमी डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, लेदरेट अपहोल्स्ट्री, एडजस्टेबल ड्राइवर सीट, ड्यूल जोन एसी, एयर प्यूरीफायर, ऑटो हेडलैंप, क्रूज कंट्रोल, इलेक्ट्रिक टेलगेट ओपनिंग, फॉलो मी हेडलैंप, फ्रंट आर्मरेस्ट, पावर विंडो, पुश बटन स्टॉर्ट/स्टॉप, स्मार्ट की, रेन सेंसिंग वाइपर, रियर एसी वेंट, रियर वाइपर और वाशर, स्टेयरिंग माउंटिड कंट्रोल्स, वेंटिलेटिड सीट्स, वायरलेस चार्जर, एबीएस, ईबीडी, चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, सीएससी, सात एयरबैग, ईपीबी, ऑटो होल्ड, ईएसपी, हेडलैंप लेवलिंग, एचडीसी, एचएचसी, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, पंचर रिपेयर किट, पार्किंग सेंसर, टीपीएमएस, वायरलेस एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, 31.24 सेमी इंफोटेनमेंट सिस्टम, छह स्पीकर, चार ट्वीटर ऑडियो सिस्टम जैसे कई फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है रेंज

इसमें 75 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। 627 किलोमीटर की एमआईडीसी रेंज मिलती है। रियल वर्ल्ड रेंज करीब 480 से 505 किलोमीटर तक है। इसके साथ दी गई पीएमएसएम मोटर से इसे 238 पीएस की पावर और 315 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। एसयूवी में ईको, सिटी और स्पोर्ट ड्राइविंग मोड्स के साथ नॉर्मल, वेट और रफ टैरेन जैसे कई मोड्स को भी दिया गया है। एसयूवी को रियर व्हील ड्राइव के साथ ही क्वाड व्हील ड्राइव के विकल्प के साथ भी ऑफर किया जा रहा है।

कितनी है कीमत

टाटा मोटर्स की ओर से हैरियर ईवी की एक्स शोरूम कीमत 21.49 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 30.23 लाख रुपये है।

किनसे है मुकाबला

टाटा की हैरियर ईवी का बाजार में सीधा मुकाबला Hyundai Creta Electric के साथ होता है। इसके अलावा इसे BYD Atto 3 से भी चुनौती मिलती है।

किआ केरेन क्लेविस ईवी में मिल सकते हैं ये 10 बेहतरीन फीचर्स, 15 जुलाई को हो रही लॉन्च की तैयारी

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में किआ मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल द ही Kia Carens Clavis EV को लॉन-च करने की तैयारी की जा रही है। इस इलेक ट्रिक एमपीवी में किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। किस कीमत पर इसे लॉन-च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नईदिल ली। भारतीय बाजार में किआ मोटर्स की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी से लेकर प्रीमियम एमपीवी सेगमेंट तक कई बेहतरीन वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से जल्द ही इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में Kia Carens Clavis EV को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इसमें किस तरह के फीचर्स दिए जा सकते हैं। किस कीमत पर इसे लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

15 जुलाई को लॉन्च होगी Kia Carens Clavis EV

किआ मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में 15 जुलाई 2025 को नई गाड़ी के तौर पर Kia Carens Clavis EV को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी को इसके ICE वेरिएंट के डिजाइन की तरह ही रखा जाएगा।

कैसे होंगे फीचर्स

निर्माता की ओर से इसमें भी कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाएगा।

इसमें ICE वेरिएंट की तरह ही कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जाएगा। इन फीचर्स में 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम और डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर शामिल होगा।

इसके अलावा इसके ड्राइवर और को-ड्राइवर की सीट पर वेंटिलेटिड सीट्स का फीचर भी दिया जाएगा। जिससे गर्मी के समय काफी राहत मिलेगी।

तीसरे फीचर के तौर पर इसमें पैनोरमिक सनरूफ भी मिलेगा। यह फीचर भारतीयों को अपनी गाड़ी में काफी ज्यादा पसंद आता है। इसलिए Kia Carens Clavis EV में भी इसे दिया जाएगा।

बेहतरीन म्यूजिक सिस्टम के साथ किआ अपनी नई ईवी को लॉन्च करेगी। इसमें Bose का आठ स्पीकर वाला ऑडियो सिस्टम दिया जाएगा।

एंबिएंट लाइट्स भी भारतीयों को अपनी गाड़ी में काफी पसंद आती है। इसलिए किआ की ओर से नई ईवी के तौर पर लॉन्च की जाने वाली कैरेंस क्लाविस में भी इस फीचर को दिया जाएगा।

ऑटो एसी भी किआ कैरेंस क्वालिस की ईवी में दिया जाएगा। इस फीचर को किआ की ओर से इसके ICE वर्जन में भी ऑफर किया जा रहा है।

ऑटो एसी के अलावा इसमें एयर प्यूरीफायर जैसे फीचर को भी दिया जाएगा। यह फीचर किआ की ओर से अपनी कई कारों में ऑफर किया जाता है। जिसमें Kia Carens Clavis भी शामिल है।

किआ की ओर से क्लाविस में पावर्ड ड्राइवर सीट भी दी जाती है। उम्मीद है कि इस फीचर को भी किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस ईवी में दिया जाएगा।

360 डिग्री कैमरे जैसे फीचर्स के कारण ट्रैफिक में भी गाड़ी को निकालना काफी आसान हो जाता है। इस फीचर को भी कैरेंस क्लाविस ईवी में दिया जाएगा।

बेहतरीन फीचर्स के अलावा भी किआ की ओर से अपनी कारों में सुरक्षा का काफी ध्यान रखा जाता है। ऐसे में किआ की ओर से सेफ्टी के लिए Level-2 ADAS को भी नई ईवी में ऑफर किया जाएगा।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से इसके लॉन्च के समय ही कीमत की सही जानकारी दी जाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस ईवी की एक्स शोरूम कीमत 15 से 20 लाख रुपये के बीच शुरू की जाएगी। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 22 से 25 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

भारत में परिवार नियोजन: युगल-केंद्रित रणनीतियों की आवश्यकता

विजय गर्ग

भारत हाल के वर्षों में अपनी कुल प्रजनन दर को कम करने में सक्षम है। लेकिन इतनी अच्छी खबर यह नहीं है कि कुल प्रजनन दर (टीएफआर) या एक महिला के औसत बच्चों की औसत संख्या और कुल वांछित प्रजनन दर के बीच एक बड़ा अंतर अभी भी मौजूद है या क्या दर हो सकती है यदि सभी अवांछित गर्भधारण हो सकते हैं टल और महिलाओं को उन बच्चों की संख्या हो सकती है जो वे चाहते थे। 2025 के संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष और सरकारी सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में तीन महिलाओं में से एक (36 प्रतिशत) ने अवांछित गर्भधारण का अनुभव किया।

बिहार, देश के शीर्ष तीन उच्च प्रजनन राज्यों में से एक है, एक प्रमुख उदाहरण है जहां टीएफआर 3 से नीचे आ गया है, लेकिन पीडब्ल्यूऐफआर2.2 है, यह दर्शाता है कि इनमें से कई जन्म अनपेक्षित हैं। स्वास्थ्य और गर्भनिरोधक सेवाओं तक खराब पहुंच के अलावा, गहराई से आरोपित पितृसत्तात्मक मानदंडों ने महिलाओं को नियोजन परिवारों में आने वाली समस्याओं को बढ़ा दिया है।

हालांकि, कुछ जिलों ने दिखाया है कि इन बाधाओं को दूर किया जा सकता है। ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को समुदायों के साथ काम करने और परिवार नियोजन पर काम करने वाले पटना स्थित गैर-सरकारी संगठन जननी द्वारा परिवार नियोजन सेवाओं के बारे में सलाह देने के लिए प्रशिक्षण और प्रेरित करके 10 वर्षों में लगभग 14 मिलियन अवांछित गर्भधारण से बचा गया। इस रणनीति के काम करने का एक कारण यह था कि जोड़ों को केवल एफपी प्रेरक के रूप में तैनात करने की जिद थी। पत्नी को प्रशिक्षित करके, यह महिलाओं को अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलने और उन्हें बदलने वाले एजेंट बनने के लिए सशक्त बनाने में सक्षम था।

पति-पत्नी टीम द्वारा परिवार नियोजन के बारे में भ्रांतियों को संबोधित करने में सफलता प्रत्येक साथी की अच्छी तरह से परिभाषित भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के कारण थी। उदाहरण के लिए, जब पत्नी ने महिलाओं की देखभाल की, तो उसका पति पुरुषों को सलाह देने का प्रभारी था। अंतर्गर्भाशयी उपकरणों (आईयूडी) और मौखिक गोलियों के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करने के साथ, दंपति ने गर्भवती महिलाओं को पोषण और बाल रिक्ति के बारे में सलाह दी। इससे भी महत्वपूर्ण बात, उन्होंने महिला के स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने समझाया कि एक महिला को परिवार नियोजन का बोझ उठाने वाला नहीं होना चाहिए और ट्यूबल लिगेशन से गुजरने के लिए मजबूर होना चाहिए। उन्होंने पुरुषों को नो-स्केलपेल नसबंदी (एनएसवी) के विकल्प के बारे में शिक्षित किया, जो ट्यूबल लिगेशन की तुलना में तेज था और किसी सर्जरी की आवश्यकता नहीं थी। परिवार के आकार को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली सास को भी बोर्ड में लाया गया था।

भारत में 44 प्रतिशत जिलों को ध्यान में रखते हुए 18 साल की उम्र से पहले शादी करने वाली महिलाओं का एक उच्च प्रतिशत बताया गया है, शायद इस 'गर्भनिरोधक जोड़ी' टीम की रणनीति को किशोरों तक भी पहुंचने के लिए ट्वीक किया जा सकता है। यूएनएफपीए की 2025 स्टेट ऑफ द वर्ल्ड पॉपुलेशन रिपोर्ट, रियल फर्टिलिटी क्राइसिस के अनुसार, दूसरे, भारत में 15-19 वर्ष की आयु की 14.1 प्रतिशत प्रति 1000 महिलाओं पर किशोर प्रजनन दर अधिक रहती है। उच्च किशोर गर्भधारण वाले देश के 118 जिलों में से, बिहार 19 के साथ सूची में सबसे ऊपर है। राज्य में 23.39 मिलियन किशोर हैं, जिनकी आबादी 28.2 प्रतिशत है। चिंताजनक रूप से, उनमें से कई में सटीक यौन और प्रजनन स्वास्थ्य (SRH) जानकारी नहीं है। जनसंख्या परिषद के एक अध्ययन में पाया गया कि बिहार के 38 में से 36 जिलों में साक्षात्कार किए गए 10,400 किशोरों में से केवल 44 प्रतिशत लड़कियों की उम्र 13-14 और 13-14 वर्ष की आयु के 56 प्रतिशत लड़कों को पता था कि एक महिला चुंबन या गले लगाने के बाद गर्भवती नहीं हो सकती है और 10 प्रतिशत को पता था कि एक महिला पहले सेक्स पर गर्भवती हो सकती है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि 14.1 प्रतिशत अविवाहित किशोर लड़के और 6.3 प्रतिशत अविवाहित किशोर लड़कियों ने विवाह पूर्व यौन संबंध बनाए थे, और उनमें से 22 प्रतिशत लड़के और 28.5 प्रतिशत लड़कियों ने 15 से पहले विवाह पूर्व यौन संबंध बनाए थे। इसके अलावा, एक रोमांटिक साथी के साथ यौन संबंधों में किशोरों का एक बड़ा हिस्सा असुरक्षित यौन संबंध में लगा हुआ था। सूचित विकल्प बनाने में लैंगिक समानता एक बड़ी भूमिका निभाती है। यदि भारत को परिवार नियोजन 2030 और सभी हाशिए पर पड़े समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं और किशोरों को समान गर्भनिरोधक विकल्प प्रदान करने के सतत विकास लक्ष्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करना है, तो उसे अपने प्रयासों में तेजी लानी चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

बैक्टीरिया कैसे बढ़ते हैं: विकासवादी अंतर संक्रमण से निपटने के नए तरीकों की ओर इशारा करते हैं

विजय गर्ग

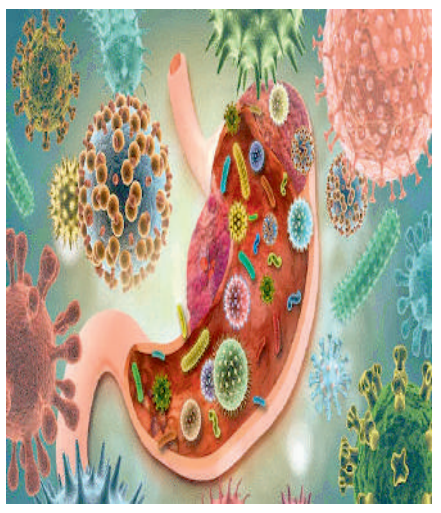

खोज एंटीबायोटिक प्रतिरोध के खिलाफ लड़ाई में नए दृष्टिकोणों का मार्गदर्शन करने में मदद करने का वादा करती है

अपने विभाग के सहयोगियों के साथ-साथ इंस्टीट्यूट नेशनल डी ला रेचरचे साइंटिफिक और इंडियाना यूनिवर्सिटी के सहयोगियों के साथ, ब्रून की शोध टीम ने बैक्टीरिया के विकास को ट्रैक करने के लिए उन्नत माइक्रोस्कोपी तकनीकों और फ्लोरोसेंट जांच का उपयोग किया।

परिणाम दीवार बढ़ाव पैटर्न में एक अप्रत्याशित विविधता को प्रकट करते हैं, जो पेप्टिडोग्लाइकन संश्लेषण पर केंद्रित है - पेनिसिलिन सहित एंटीबायोटिक दवाओं के कई वर्गों का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य।

अध्ययन के वरिष्ठ लेखक ब्रून ने कहा, ₹जो एक अपेक्षाकृत समान प्रक्रिया के रूप में माना जाता था, वह वास्तव में बहुत अधिक परिवर्तनशील प्रतीत होती है, यहां तक कि बहुत बारीकी से संबंधित प्रजातियों के बीच भी।₹ ₹यह परिवर्तनशीलता नाजुकता के नए बिंदुओं का प्रतिनिधित्व कर सकती है जिसका उपयोग नई एंटीबायोटिक दवाओं को विकसित करने के लिए किया जा सकता है।₹

अध्ययन कौलोबैक्टेरेसी परिवार पर केंद्रित था। शोधकर्ताओं ने कॉलोबैक्टर क्रेसेन्टस की तुलना एक मॉडल जीव से की, जिसमें एस्टिकैकॉलिस एक्सेंट्रिकस, एक संबंधित प्रजाति है। जबकि पूर्व केंद्र से द्विदिश रूप से अपनी दीवार को बढ़ाता है, बाद वाला ऐसा केवल एक सेल पोल की ओर करता है। यह परिवर्तन एंटीबायोटिक दवाओं के एक क्लासिक लक्ष्य पीवीपी2 एंजाइम के स्थानांतरण से जुड़ा हुआ है।

लेकिन यह सब नहीं है। ब्रून की लैब में पोस्टडॉक की सह-पहली लेखक मैरी डेलाबी ने बताया, ₹यह निकटता से संबंधित प्रजातियों के बीच इस अप्रत्याशित विकासवादी विविधता को देखते हुए था कि हमें परीक्षण करने का विचार था कि क्या पर्यावरण मोड भी पर्यावरण के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

उन्होंने कहा, ₹और वास्तव में, लेख प्रस्तुत करने के बाद से हमने जो नया डेटा प्राप्त किया है, उससे पता चलता है कि ये तंत्र न केवल आनुवंशिकी द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, वे पर्यावरणीय स्थितियों में भी समायोजित कर सकते हैं।

इससे पता चलता है कि विकास का अध्ययन सिर्फ बैक्टीरिया के इतिहास को फिर से बनाने का काम नहीं करता है। यह परिवर्तनशीलता के छोटे ज्ञात रूपों को भी प्रकट कर सकता है, जो बेहतर समझ और संभावित रूप से एंटीबायोटिक प्रतिरोध का मुकाबला करने के लिए उपयोगी है।

बर्न की टीम की टिप्पणियों से पता चलता है कि कुछ बैक्टीरिया वर्तमान उपचारों की कार्रवाई को जटिल बनाते हुए, संदर्भ के अनुसार अपने विकास को सक्रिय रूप से संशोधित कर सकते हैं। इस प्लास्टिसिटी को ध्यान में रखते हुए, शोधकर्ताओं को विभिन्न वातावरणों में बैक्टीरिया को लक्षित करने के लिए बेहतर अनुकूलित रणनीतियों के विकास में योगदान करने की उम्मीद है।

ब्रून ने कहा, हमें बैक्टीरियल वॉल सिंथेसिस को एक निश्चित, सार्वभौमिक लक्ष्य के रूप में सोचना बंद करने की जरूरत है । ₹यह एक अधिक गतिशील प्रक्रिया है जितना हमने सोचा था, विकास और पर्यावरण से प्रभावित है। यह अहसास नए उपचारों के विकास के लिए हमारे दृष्टिकोण को समृद्ध कर सकता है।

आभासी दुनिया के वास्तविक जोखिम

विजय गर्ग

दुनिया भर में सोशल मीडिया मंचों का उपयोग लगातार बढ़ रहा है, लेकिन इसके असर से उपजे हालात चिंता भी बढ़ा रहे हैं। हालांकि दरवाजे पर पहुंच चुके इस जोखिम को लेकर सचेत रहने की बातें भी खूब होती रही हैं, लेकिन इसके बढ़ते दायरे की जटिलता और ज्यादा गहराती जा रही है।। । एक ओर इसने सूचना तक पहुंच का दायरा बढ़ाया है, वहीं दूसरी ओर नई चुनौतियां भी पेश की हैं, जो अब सीधे हमारे समाज पर प्रभाव डाल रही हैं। आज के तकनीकी दौर में में लगभग हर हाथ में स्मार्टफोन है। अगर परिवार में पांच सदस्य हैं, तो घर में तीन या चार स्मार्टफोन भी होते हैं। इस बात की भी पूरी संभावना है कि स्मार्टफोन का इस्तेमाल करने वाले लगभग सभी लोगों का खाता किसी न किसी सोशल वेबसाइट पर होगा ही, जहां वे घंटों अपना समय बिताते हैं। जिस सोशल मीडिया को अभिव्यक्ति, जानकारी साझा करने और नवाचार का अहम मंच समझा गया, वह आज कई तरह की परेशानियों की वजह भी बन रहा है। सोशल मीडिया के जरिए अफवाह फैला कर सामाजिक सदभाव बिगाड़ने और सकारात्मक सोच को संकीर्ण करने के किए जा रहे हैं। सामाजिक और धार्मिक स्वार्थ साथ राजनीतिक स्वार्थ के लिए भी इस मंच पर भ्रामक जानकारियां परोसी जा हैं। । तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रयास पेश किया जा रहा है। अलग-अलग मंचों के लगातार उपयोग और उसमें खोए रहने की वजह से लोगों सोचने का दायरा संकुचित होता जा रहा है। युवा और वरिष्ठ नागरिक ही नहीं, बल्कि बच्चे भी अब सोशल मीडिया की लत के शिकार हो रहे हैं। सच यह आज की दुनिया में सोशल मीडिया हमारी संस्कृति, अर्थव्यवस्था और लोगों के समग्र दृष्टिकोण को प्रभावित करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। इसमें दोराय नहीं कि यह मंच लोगों विचारों का आदान-प्रदान करने, सलाह लेने और मार्गदर्शन के लिए एक साथ जोड़ता है। सोशल मीडिया ने संचार बाधाओं को हटा दिया है और सभी के लिए अपनी बात रखने का द्वार खोल दिया है। इसके जरिए अपनी बात ज्यादा से ज्यादा लोगों तक आसानी से से पहुंचाना संभव है। वाट्सएप और इस जैसे कुछ मंच संवाद का माध्यम बन गए हैं। वर्ष 2016 के और इसने दुनिया भर के लाखों बाद से सोशल मीडिया के उपयोग उपयोगकर्ताओं को एक साथ जोड़ा है। रूप से वृद्धि में अप्रत्याशित रूप से आज यह माध्यम हमारे जीवन एक बड़ी भूमिका निभा रहा है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग की वजह से इसकी कीमत भी चुकानी पड़ रही है। समाज पर सोशल मीडिया के प्रभावों के बारे में कई तर्क-वितर्क प्रस्तुत किए गए हैं। कुछ लोगों का मानना है कि यह एक वरदान है, जबकि कुछ लोग महसूस करते हैं कि यह एक अभिशाप है। आज हर उम्र के लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं। इसके कुछ फायदे हैं, तो नुकसान भी हैं। यह मंच एक तरह से दूर रह रहे लोगों को एक दूसरे के पास जरूर ले आया है, लेकिन करीबियों को दूर कर दिया है। युवाओं पर तो 'सोशल नेटवर्किंग' का नशा सा हो गया है। विविध मंचों पर दिन में कई बार अपनी टिप्पणियां या तस्वीरें देखना, घंटों तक दोस्तों के साथ बातें करना जैसी आदतों ने युवा

पीढ़ी को काफी हद तक प्रभावित किया है रोजाना बहुत देर तक फेसबुक, इंस्टाग्राम और एक्स जैसे मंचों पर समय बिताने से न केवल उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है, बल्कि कुछ नया करने की उनकी रचनात्मक क्षमता भी धीरे-धीरे कम या खत्म हो रही है। यह ज्यादा चिंताजनक पहलू है।

आधुनिक तकनीक के प्रवाह में इस माध्यम का अतिशय उपयोग युवाओं के उर्वर वैचारिक पक्ष को कुंद करने का जरिया बन गया है जब युवा

सोशल मीडिया पर अनुचित सामग्री देखते हैं, तो उन्हें अवसाद, चिंता, निराशा, और आत्मविश्वास की कमी जैसी मानसिक समस्याएं हो सकती हैं। इस तरह की सामग्री से युवाओं के सामाजिक स्तर और व्यक्तित्व पर भी असर पड़ सकता है। इसे जटिल बनाने की पृष्ठभूमि भी है। सोशल मीडिया के ! प्रभाव से आजकल पैसे कमाना भी सामान्य हो गया है।।

पढ़ाई और मेहनत के महत्त्व को समझने की बजाय युवा आसान रास्ते की तलाश में आज की युवा 1 युवा पीढ़ी का दोष यह नहीं है कि वे गलत दिशा में जा रहे हैं, असल समस्या है कि सोशल मीडिया ने उनकी सोच पर गहरी छाप छोड़ी है। यह प्रवृत्ति न केवल व्यक्तिगत रूप से उन्हें नुकसान पहुंचा रही है, बल्कि देश के समग्र विकास को भी पीछे धकेल रही ₹भी पीछे धकेल रही है। हालांकि इंटरनेट के मंचों का उपयोग वास्तविकता से अलग भी हो सकता है। अधिकांश लोग सोशल मीडिया पर अपने जीवन की सफलताओं, खुशियों । और उत्सवों को साझा करते हैं। यह आभासी दुनिया का निर्माण अलग होती है। है जब युवा इस तरह की करता है, जो वास्तविक जीवन से सामग्री देखते हैं, बेहतर जीवन उन्हें यह लगता है कि बाकी सभी लोग उनके मुकाबले । अपने जीवन की तुलना इन आभासी छवियों करने लगते हैं और यह समझ नहीं पाते कि जो वे देख रहे हैं, वह केवल जीवन के अच्छे हिस्से का प्रदर्शन है। यह असमानता की भावना उन्हें मानसिक और भावनात्मक रूप से परेशान करती है, जिससे तनाव बढ़ता है सोशल मीडिया ने भले ही लोगों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम किया हो, लेकिन इसके दुष्प्रभाव भी व्यापक हैं।

इस सबका परिणाम यह हो रहा है कि अब वास्तविक सामाजिक संबंधों की जगह आभासी संबंधों ने ले ली है। पहले जहां लोग अपने परिवार और मित्रों से व्यक्तिगत रूप से मिलते थे, अब उनकी बातचीत सोशल मीडिया मंचों तक सीमित हो गई है। युवा अब वास्तविक संबंधों को समय नहीं दे पा रहे हैं। वे आभासी दुनिया में इतने खो जाते हैं कि उनके पास अपने आसपास लोगों के साथ वास्तविक जुड़ाव का समय नहीं रहता। यह भावनात्मक दूरी अकेलेपन और अवसाद का एक प्रमुख कारण बनती है। यह सच है कि किसी भी चीज के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रभाव होते हैं सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है, आज हर व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता और उसे हजारों लोगों तक पहुंचा सकता है। इससे हमारे समाज में कई बदलाव आए हैं, जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में देखे जा सकते हैं, लेकिन सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने इसे एक खतरनाक उपकरण के रूप में भी स्थापित कर दिया है, जो वास्तव में चिंता का विषय है। ऐसे में इसे नियंत्रित या इसका उपयोग कम करने की आवश्यकता लगातार महसूस की जा रही है।

इसके सामाजिक प्रभावों के मद्देनजर अब आवश्यक है कि निजता के अधिकार का उल्लंघन न हो और सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए जरूरी कदम उठाए जाएं, ताकि भविष्य में इसके दुष्प्रभावों से बचा जा सके। इसके लिए खासकर युवाओं को जागरूक करने की जरूरत है, ताकि वे अनावश्यक रूप से आभासी दुनिया में खोए न रहें और वास्तविकता से रूबरू हों। वैसे भी सोशल मीडिया के फायदे तभी सही मायने में मिल सकते हैं, जब इसका उपयोग संतुलित और उद्देश्यपूर्ण तरीके से किया जाए।

बुजुर्गों को बोझ समझने की बढ़ती प्रवृत्ति

जिन चौखटों पर कभी मां-बाप की आहटें जीवन को सुकून देती थीं। जहां उनके साये में पीढ़ियां संवरती थीं, आज वही चौखटें बुजुर्गों के लिए अजनबी हो गई हैं। अपने ही घर के दरवाजों से अब उन्हें धक्के मारकर बाहर निकाला जा रहा है। यह कोई भावुक या कोरी कल्पना नहीं, बल्कि वर्तमान का शर्मनाक यथार्थ है।

हाल ही में मुंबई में एक कैंसर पीड़ित 70 वर्षीय वृद्धा को उसके ही पोते ने 'आरे कालोनी' के जंगल में छोड़ दिया। पुलिस को वह महिला कचरे के ढेर पर पड़ी मिली, बदहवास, भूखी और अपनी आखिरी सांसें लेती हुई। पुलिस ने 'माता-पिता तथा वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम' के तहत आरोपी पोते को गिरफ्तार किया। यह अकेली घटना नहीं है जो हमें झकझोरती हो। पुणे में एक बेटे ने अपने वृद्ध पिता को घर से बाहर निकाल दिया, पालघर 'बेटों ने अपने ही बुजुर्ग माता-पिता को पीटकर संपत्ति हड़प ली। ये घटनाएं अब अपवाद नहीं रहीं।

भारत में वरिष्ठ नागरिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। देश की जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा बुजुर्गों का है, और वर्ष 2050 तक यह अनुपात 17 प्रतिशत तक पहुंचने की संभावना है। यानी हर छठा भारतीय बुजुर्ग होगा, पर क्या बुजुर्ग को सम्मान से जीने का हक मिलेगा ?

वृद्धाश्रम भरते जा रहे हैं, वहीं बेटों के घरों में खालीपन है। आधुनिकता के नाम पर यह कैसा आत्महीन समाज बन रहा है जो अनुभव, ममता और त्याग को बोझ मानने लगा है ? यह केवल पारिवारिक रिश्तों की टूटन नहीं, हमारी सामूहिक चेतना की गिरावट है। जिस भारत को हम विकसित कहने लगे हैं, वहां तकनीक की रोशनी तो है, पर संवेदनाओं का अंधकार भी गहराता जा रहा है। अब हम एक ऐसे यंत्रवत समाज की ओर बढ़ रहे हैं, जहां संवेदना केवल पाठ्यक्रमों और स्मारकों में मिलेगी।

बुजुर्गों की यह स्थिति अचानक नहीं हुई है। यह उस सांस्कृतिक पतन की परिणति है, जहां 'स्वतंत्रता' के नाम पर 'सामूहिक जिम्मेदारी' को तिलांजलि दे दी गई। पहले संयुक्त परिवार थे - अनेक दिल, एक घर एकल परिवारों में कमरे हैं, अपनापन नहीं। स्मार्टफोन की रोशनी है, लेकिन मां की आंखों की झिलमिलाहट कहीं खो गई है। जो दादी कहानियां सुनाती थीं, वे अब एकांत में आंसू पोछ रही हैं। यह केवल बुजुर्गों की नहीं, हमारी सामाजिक चेतना की पराजय है।

समझना होगा कि 'विकास' केवल जीडीपी नहीं, मानवीय गरिमा में निहित है। हमें उन धूल भरी चौखटों की ओर फिर से लौटना होगा, जहां मां की थाली में सबसे बड़ा रोटी का टुकड़ा बापू के हिस्से आता था, और दादी की हंसी सबसे सस्ती दवा थी। अब समय आ गया है। कि हम 'बड़ों के सम्मान' को फिर से जीवंत व्यवहार बनाएं। वरना एक दिन हमारे बच्चे भी हमें उसी जंगल में छोड़ आएंगे, जहां आज हम अपने माता-पिता को बेबस छोड़ते देख रहे हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

क्या मस्तिष्क की चोट और आपराधिक व्यवहार के बीच कोई संबंध है?

विजय गर्ग

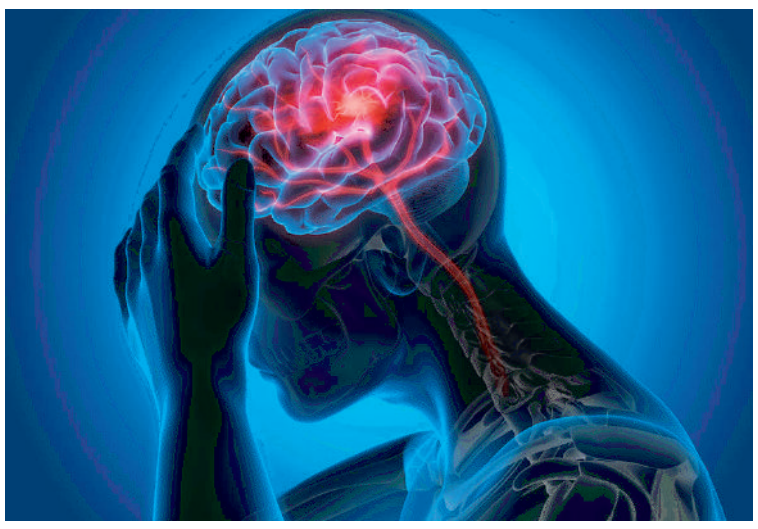

मस्तिष्क की चोट और आपराधिक व्यवहार के बीच की कड़ी को समझने के लिए,

शोधकर्ताओं ने उन लोगों के मस्तिष्क स्कैन को देखा, जिन्होंने स्ट्रोक, ट्यूमर या दर्दनाक मस्तिष्क की चोट से मस्तिष्क की चोटों को बनाए रखने के बाद अपराध करना शुरू कर दिया। उन्होंने इसकी तुलना 17 मामलों के साथ मस्तिष्क स्कैन से की, जिसमें अन्य न्यूरोलॉजिकल लक्षणों वाले 706 व्यक्तियों जैसे स्मृति हानि या अवसाद शामिल हैं। उन्होंने जो पाया वह हड़ताली था। शोधकर्ताओं ने पाया कि दाईं ओर एक विशिष्ट मस्तिष्क मार्ग पर चोट, जिसे अनसिनेट फासिकुलस कहा जाता है, आपराधिक व्यवहार वाले लोगों में आम था। हिंसक अपराध करने वाले लोगों में भी ये पैटर्न देखने को मिला.

मस्तिष्क का यह हिस्सा, अशुद्ध फासिकुलस, एक सफेद पदार्थ मार्ग है जो भावनाओं और निर्णय लेने को नियंत्रित करने वाले क्षेत्रों को जोड़ने वाले केबल के रूप में कार्य करता है। जब वह संबंध दाईं ओर बाधित होता है, तो किसी व्यक्ति की भावनाओं को विनियमित करने और नैतिक विकल्प बनाने की क्षमता गंभीर रूप से ख़राब हो सकती है,₹ क्रिस्टोफर एम। कोलोराडो स्कूल ऑफ मेडिसिन विश्वविद्यालय में न्यूरोलॉजी के प्रोफेसर एमेरिटस और अध्ययन के सह-लेखकों में से एक, फिली ने एक बयान में कहा।

हालांकि यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि मस्तिष्क की चोट से स्मृति या मोटर फ़ंक्शन में समस्याएं हो सकती हैं, लेकिन आपराधिक जैसे सामाजिक व्यवहारों का मार्गदर्शन करने में मस्तिष्क की भूमिका अधिक विवादास्पद है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल में न्यूरोलॉजी के सहायक प्रोफेसर और अध्ययन के प्रमुख लेखक यशायाह क्लेटेनिक ने कहा, यह क्षमता और स्वतंत्र इच्छा के बारे में जटिल सवाल उठाता है ।

क्लेटेनिक ने कहा कि कोलोराडो स्कूल ऑफ मेडिसिन विश्वविद्यालय में व्यवहार न्यूरोलॉजी प्रशिक्षण में काम करते समय, उन्हें उन रोगियों का मूल्यांकन करने का अवसर मिला, जिन्होंने मस्तिष्क ट्यूमर या अपक्षयी बीमारियों की शुरुआत के साथ हिंसा के कार्य करना शुरू किया।

क्लेटेनिक ने कहा, ₹इन नैदानिक मामलों ने नैतिक निर्णय लेने के मस्तिष्क के आधार पर मेरी जिज्ञासा को प्रेरित किया और मुझे ब्रिघम और महिला अस्पताल और हार्वर्ड मेडिकल स्कूल में सेंटर फॉर ब्रेन सर्किट थेरेप्यूटिक्स में नए नेटवर्क-आधारित न्यूरोइमेजिंग तकनीक सीखने के लिए प्रेरित किया।

निष्कर्षों की पुष्टि करने के लिए, शोधकर्ताओं ने मस्तिष्क क्षेत्रों को आपस में जोड़ने के तरीके के विस्तृत मानचित्र का उपयोग करते हुए एक पूर्ण कनेक्टोम विश्लेषण किया। विश्लेषण से पता चला है कि सही अचेतन फासीकुलस आपराधिक व्यवहार के लिए सबसे सुसंगत लिंक के साथ तंत्रिका मार्ग था।

यह केवल मस्तिष्क की क्षति नहीं थी; यह इस मार्ग के स्थान पर क्षति थी। हमारी खोज से पता चलता है कि यह विशिष्ट संबंध व्यवहार को विनियमित करने में एक अनूठी भूमिका निभा सकता है,₹ फिली ने कहा। क्या मस्तिष्क की चोट और आपराधिक व्यवहार के बीच कोई संबंध है?

विशिष्ट मार्ग मस्तिष्क क्षेत्रों को इनाम-आधारित निर्णय लेने से जुड़े उन लोगों के साथ जोड़ता है जो भावनाओं को संसाधित करते हैं। हालांकि, जब यह लिंक क्षतिग्रस्त हो जाता है, विशेष रूप से दाईं ओर, तो इससे आवेगों को नियंत्रित करने, परिणामों की आशंका, या सहानुभूति महसूस करने में कठिनाई हो सकती है, जो सभी हानिकारक या आपराधिक कार्यों में योगदान कर सकते हैं।

शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि इस प्रकार के मस्तिष्क की चोट से हर कोई हिंसक नहीं होता है। हालांकि, इस पथ को नुकसान चोट के बाद आपराधिक व्यवहार की नई शुरुआत में एक भूमिका निभा सकता है। ₹इस काम में दवा और कानून दोनों के लिए वास्तविक दुनिया के निहितार्थ हो सकते हैं। डॉक्टर जोखिम वाले रोगियों की बेहतर पहचान करने और प्रभावी शुरुआती हस्तक्षेप प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं। और अदालतों को आपराधिक जिम्मेदारी का मूल्यांकन करते समय मस्तिष्क क्षति पर विचार करने की आवश्यकता हो सकती है,₹ फिल्मी ने कहा।

क्लेटेनिक ने यह भी कहा कि इस अध्ययन के निष्कर्ष महत्वपूर्ण नैतिक प्रश्न उठा सकते हैं। ₹क्या मस्तिष्क में चोट का कारक होना चाहिए कि हम आपराधिक व्यवहार को कैसे आंकते हैं? विज्ञान में कारण को उसी तरह से परिभाषित नहीं किया गया है जैसे कानून की नजर में क्षमता। फिर भी, हमारे निष्कर्ष उपयोगी डेटा प्रदान करते हैं जो इस चर्चा को सूचित करने में मदद कर सकते हैं और मस्तिष्क द्वारा सामाजिक व्यवहार की मध्यस्थता कैसे की जाती है, इसके बारे में हमारे बढ़ते ज्ञान में योगदान कर सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

राज्यसभा में मीनाक्षी जैन का चयन: संस्कृति और विद्वत्ता को सम्मान

भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को स्वदेशी दृष्टिकोण से पुनर्जनन देने वाली एक प्रख्यात इतिहासकार, जिन्होंने अपने गहन शोध और तथ्यपरक लेखन से भारतीय इतिहास लेखन को नया आयाम दिया, वह हैं डॉ. मीनाक्षी जैन। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संविधान के अनुच्छेद 80(1)(क) के खंड (3) के तहत उन्हें राज्यसभा के लिए नामित कर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। यह प्रावधान राष्ट्रपति को कला, साहित्य, विज्ञान और सामाजिक सेवा जैसे क्षेत्रों में असाधारण योगदान देने वाले व्यक्तियों को उच्च सदन में नामित करने की शक्ति प्रदान करता है। मीनाक्षी जैन के साथ-साथ वरिष्ठ सरकारी वकील उज्ज्वल देवराव निकम, केरल के सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद् सी. सदानंदन मास्ते, और पूर्व विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला को भी इस सम्मान के लिए चुना गया है। यह नामांकन पूर्व में नामित सदस्यों की सेवानिवृत्ति से खाली हुई सीटों को भरने के लिए किया गया है। मीनाक्षी जैन का यह चयन न केवल उनके व्यक्तिगत योगदान को सम्मानित करता है, बल्कि भारतीय इतिहास और संस्कृति को वैश्विक मंच पर सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मीनाक्षी जैन ने भारतीय इतिहास लेखन को एक ऐसी दृष्टि प्रदान की है, जो औपनिवेशिक और एकांगी दृष्टिकोण से परे जाकर भारतीय सभ्यता के गौरव को पुन:स्थापित करती है। दिल्ली विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में पीएचडी प्राप्त करने वाली मीनाक्षी जैन ने गार्गी कॉलेज में इतिहास की सहायक और बाद में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर), नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी, और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं। 2020 में भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया, जो उनके शोध और सांस्कृतिक योगदान का सर्वोच्च सम्मान है। उनका शोध मध्यकालीन और औपनिवेशिक भारत पर केंद्रित रहा है, जिसमें धार्मिक-सांस्कृतिक विकास और सामाजिक परिवर्तनों का गहन विश्लेषण शामिल है।

उनकी लेखन शैली तथ्यों, पुरातात्विक साक्ष्यों और ऐतिहासिक दस्तावेजों पर आधारित है, जो भारतीय इतिहास को एक स्वदेशी परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत करती है। उनकी पुस्तक राम और अयोध्या (2013), अयोध्या विवाद के ऐतिहासिक और पुरातात्विक पहलुओं को उजागर करती है। यह पुस्तक श्रीराम के ऐतिहासिक अस्तित्व और अयोध्या के धार्मिक महत्व को प्रमाणों के साथ प्रस्तुत करती है, जो इस जटिल मुद्दे पर तथ्यपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करती है। उनकी एक अन्य कृति, राम के लिए संघर्ष: अयोध्या में मंदिर का मामला (2017), अयोध्या विवाद से जुड़े दस्तावेजों और अदालती साक्ष्यों का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक शोधकर्ताओं और सामान्य पाठकों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है।

देवताओं का पलायन और मंदिरों का पुनर्जन्म (2019), भारतीय मंदिरों के विध्वंस, मूर्तियों की चोरी और उनके पुनर्निर्माण की कहानी को बयान करती है। यह पुस्तक मंदिरों के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को रेखांकित करती है, साथ ही यह दर्शाती है कि कैसे श्रद्धालुओं ने हर संकट में अपनी आस्था को संरक्षित किया। मीनाक्षी जैन ने मंदिर महात्म्य, शिलालेखों, वंशावलियों और विदेशी यात्रियों के लेखों का उपयोग कर इस पुस्तक में भारतीय संस्कृति की निरंतरता को जीवंत किया है।

उनकी पुस्तक सती: ईसाई प्रचारक, बैपटिस्ट मिशनरी और उपनिवेशकालीन विमर्श में बदलाव (2016) सती प्रथा के औपनिवेशिक काल में विकास और इसके पीछे की धार्मिक व राजनीतिक गतिशीलता का विश्लेषण करती है। यह पुस्तक औपनिवेशिक दृष्टिकोण और भारतीय समाज के बीच टकराव को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

मीनाक्षी जैन ने समानांतर रास्ते: हिन्दू-मुस्लिम संबंधों पर निबंध (2010) में 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान हिन्दू-मुस्लिम संबंधों की जटिलताओं को उजागर किया। यह पुस्तक सामाजिक और सांस्कृतिक अंतर्क्रियाओं के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने दि इंडिया दे सॉ नामक तीन खंडों वाली पुस्तक का संपादन किया, जो विदेशी यात्रियों के दृष्टिकोण से भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक छवि को प्रस्तुत करती है। यह कार्य भारत को वैश्विक संदर्भ में समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है।

डॉ. मीनाक्षी जैन ने भारतीय सभ्यता की मूर्ति पूजा और मंदिर परंपराओं पर गहन और प्रेरक व्याख्यान देकर अपनी विद्वता का लोहा मनवाया है। उनके एक व्याख्यान में मूर्ति पूजा की उत्पत्ति और इसके सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित किया गया, जिसमें मध्य प्रदेश, राजस्थान और मथुरा जैसे क्षेत्रों से पहली शताब्दी ईसा पूर्व के पुरातात्विक साक्ष्यों को प्रस्तुत कर भारतीय सभ्यता की प्राचीनता और गहराई को उजागर किया। उनके दूसरे व्याख्यान में मल्तान से केरल तक आस्था के प्रतीकों को संरक्षित करने के ऐतिहासिक प्रयासों की जीवंत कहानी बयान की गई, जो श्रद्धालुओं की दृढ़ता और सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाती है। ये व्याख्यान भारतीय संस्कृति की लचीलापन और अटूट भावना को शक्तिशाली ढंग से प्रदर्शित करते हैं।

मीनाक्षी जैन का राज्यसभा के लिए नामांकन उनके अकादमिक और सांस्कृतिक योगदान का सम्मान है। उनके साथ नामित अन्य व्यक्तियों—उज्ज्वल देवराव निकम, जिन्होंने 26/11 मुंबई आतंकी हमले जैसे हाई-प्रोफाइल मामलों में अभियोजन पक्ष का नेतृत्व किया; सी. सदानंदन मास्ते, जिन्होंने केरल के वंचित समुदायों के उत्थान के लिए शिक्षा और सामाजिक सेवा में योगदान दिया; और हर्षवर्धन श्रृंगला, जिन्होंने अपनी कूटनीतिक सेवाओं से भारत की वैश्विक छवि को मजबूत किया—ने अपने-अपने क्षेत्रों में असाधारण कार्य किया है। ये नामांकन संविधान के अनुच्छेद 80(1)(क) के तहत किए गए हैं, जो राष्ट्रपति को 12 व्यक्तियों को मनोनीत करने का अधिकार देता है। यह प्रक्रिया उन सीटों को भरने के लिए है, जो पूर्व में नामित सदस्यों की सेवानिवृत्ति के कारण खाली हुई थीं।

मीनाक्षी जैन की राज्यसभा में उपस्थिति भारतीय इतिहास, संस्कृति और शिक्षा से संबंधित नीतिगत चर्चाओं को नई गहराई प्रदान करेगी। उनकी विद्वता और तथ्यपरक दृष्टिकोण संसद में उन मुद्दों पर संतुलित विमर्श को बढ़ावा देगा, जो भारतीय सभ्यता के गौरव को पुनर्जनन देने से जुड़े हैं। उनका शोध आधारित दृष्टिकोण शिक्षा, संस्कृति और पुरातत्व के क्षेत्र में नीति निर्माण में एक नया आयाम जोड़ेगा। अन्य नामित व्यक्तियों के साथ मिलकर, वह संसद में एक ऐसा मंच तैयार करेंगी, जो भारत के बौद्धिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को समृद्ध करेगा।

मीनाक्षी जैन का यह सफर—एक इतिहासकार से लेकर संसद के उच्च सदन तक—भारत की सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत को महत्व देने का प्रतीक है। उनकी पुस्तकें, व्याख्यान और शोध कार्य भारतीय इतिहास को एक नई दृष्टि से देखने की प्रेरणा देते हैं। यह नामांकन भारतीय समाज को यह संदेश देता है कि तथ्यपूर्ण और स्वदेशी दृष्टिकोण को अपनाकर हम अपनी सभ्यता के गौरव को पुन:स्थापित कर सकते हैं। मीनाक्षी जैन की उपस्थिति राज्यसभा में निश्चित रूप से भारतीय नीतियों और विमर्श को एक नई दिशा देगी, जो आने वाले वर्षों में देश के सांस्कृतिक और बौद्धिक परिदृश्य को और समृद्ध करेगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बुलेट ट्रेन के बाद अब बुलेट इंटरनेट: जापान की तकनीक और नवाचार !

जापान, पूर्वी एशिया में स्थित एक द्वीपसमूह देश है, जो प्रशांत महासागर में स्थित है । यह देश 6,852 द्वीपों से मिलकर बना है, जिनमें होक्काइडो, होंशू, शिकोकू, क्यूशू और ओकिनावा मुख्य द्वीप हैं ।अपनी शक्तिशाली अर्थव्यवस्था, उन्नत प्रौद्योगिकी व नवाचारों, दुनिया के सबसे बड़े वाहन निर्माताओं में से एक, और जिसकी ट्रेनें दुनिया में सबसे सटीक समय पर चलने वाली मानी जाती है तथा जो अपनी अद्वितीय व अनूठी संस्कृति के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध रहा है; ऑटोमोबाइल, रोबोटिक्स,इलेक्ट्रॉनिक्स, विनिर्माण, और शिक्षा के क्षेत्र में जापान आज एक वैश्विक नेता है। हाल ही में जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंफॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशंस टेक्नोलॉजी (एनआईसीटी) के रिसर्चर्स ने 1.02 पेटाबिट्स(पेटाबाइट) प्रति सेकेंड की अविश्वसनीय इंटरनेट स्पीड हासिल करके विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया है,जो अपने आप में एक मिसाल है ।जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इन्फॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी (एनआइसीटी) ने सुमितोमो इलेक्ट्रिक और यूरोपीय पार्टनर के साथ मिलकर यह रिकॉर्ड बनाने वाली उपलब्धि हासिल की है। उनके यूनिक 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर केबल ने 1,808 किलोमीटर से ज्यादा की दमदार स्पीड से डाटा ट्रांसमिट किया, जो कि करीब लंदन से रोम की दूरी के बराबर है। एक रिपोर्ट के अनुसार, 1.02 मिलियन गीगाबाइट (जीबी) डाटा एक सेकंड में डाउनलोड किया गया है। यह स्पीड इतनी ज्यादा है कि इसके बारे में सोच पाना भी मुश्किल है। जापान की इस तकनीक को वैश्विक रूप से डाटा ट्रांसफर, स्ट्रीमिंग और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में एक उज्जवल भविष्य के रूप में देखा जा रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि जापान की लेटेस्ट इंटरनेट नेटवर्क की स्पीड 1.02 पेटाबाइट पर सेकंड है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह करीब 10 लाख जीबी पर सेकेंड के बराबर है। यह इंटरनेट स्पीड इतनी फास्ट है कि इस स्पीड का इस्तेमाल करके कुछ ही सेकंड्स में फिल्म ही नहीं, बल्कि पूरी की पूरी लाइब्रेरी तक डाउनलोड की जा सकती है। वास्तव में, जापान की यह उपलब्धि डेटा ट्रांसमिशन तकनीक में एक महत्वपूर्ण व बड़ा कदम है ।जापान की यह स्पीड अमेरिका की एवरेज इंटरनेट स्पीड से 3.5 गुना है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पीड अमेरिका के औसत इंटरनेट कनेक्शन से 35 लाख गुना ज्यादा है। भारत की औसत इंटरनेट गति से यह 1.6 करोड़ गुना तेज बताई जा रही है। रिसर्चर्स के अनुसार इतनी स्पीड से 1.27 लाख साल की म्यूजिक लाइब्रेरी या एक साथ 1 करोड़ 8K वीडियो भी स्ट्रीम किए जा सकते हैं ।यानी 10 लाख GB प्रति सेकेंड के हिसाब से यह स्पीड मिलेगी,जो अपने आप में एक रिकॉर्ड है। आज भारत जैसे देश में बफरिंग, नेटवर्क डाउन और स्लो इंटरनेट एक बड़ी समस्या है, ऐसे में जापान द्वारा हाइ स्पीड इंटरनेट तकनीक का विकास आने वाले समय में 6G नेटवर्क, क्लाउड सिस्टम्स, अंडरसी डेटा केबल्स और एआई जैसे उभरते क्षेत्रों में नई क्रांति लेकर आएगा।

बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि जापान ने सिंगल कोर के बजाय 19 कोर ऑप्टिकल फाइबर सिस्टम व उन्नत एम्प्लीफायर तकनीक की मदद से इतनी तेज इंटरनेट स्पीड को हासिल करने में सफलता मिली है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन स्पेशल केबल का इस्तेमाल कर शोधकर्ताओं की टीम ने बिना किसी स्पीड लॉस के 1800 किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तक भारी मात्रा में डेटा भेजने में सक्षम रही है। उन्होंने ट्रांसमीटर, रिसीवर और लूपिंग सर्किट के सेटअप का उपयोग किया जिससे डेटा फुल पॉवर से फ्लो रखने में मदद मिली ।इस ऐतिहासिक उपलब्धि का अर्थ है कि एक सेकंड में 10,000 से अधिक 4K फिल्में डाउनलोड की जा सकती हैं। गौरतलब है कि मार्च 2024 में भी जापान ने ही 402 टेराबिट्स प्रति सेकंड (यानी 50,250 जीबीपीएस) की स्पीड का रिकॉर्ड बनाया था, लेकिन इस बार नई तकनीक ने इस आंकड़े को दोगुना से अधिक कर दिया। कहना ग़लत नहीं होगा कि जैसे-जैसे एआइ, 8K स्ट्रीमिंग, क्लाउड गेमिंग और ऑगमेंटेड रियलिटी जैसे सेक्टर आगे बढ़ेंगे, ऐसे ब्रेकथ्रू तकनीकों की जरूरत और भी बढ़ेगी। वास्तव में यह तकनीक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआइ), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आइओटी) और वैश्विक डिजिटलीकरण की बढ़ती मांगों को पूरा करने में मदद करेगी। ज्यादा तेज इंटरनेट, ज्यादा तेज विकास भी लेकर आएगा। स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थ केयर और ऑनलाइन शिक्षा जैसे क्षेत्रों में बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। गौरतलब है कि इंटरनेट की स्पीड के मामले में भारत टॉप-10 के देशों में भी शामिल नहीं है। यहां पर मोबाइल इंटरनेट स्पीड 100.78 एमबीपीएस है। जबकि, एवरेज ब्रॉडबैंड स्पीड 63.55 एमबीपीएस है। वास्तव में यह स्पीड विश्व के बाकी देशों के मुकाबले काफी कम है। पाठकों को बताता चलूं कि दुबई इंटरनेट की स्पीड के मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर, तथा हॉन्गकॉन्ग तीसरे नंबर पर, फ्रांस चौथे नंबर पर तथा आइसलैंड पांचवें नंबर पर आता है, जहां इंटरनेट की स्पीड क्रमश: 318.63 एमबीपीएस, 312.60 एमबीपीएस, 308.01एमबीपीएस तथा 306.22एमबीपीएस है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि जापान ने अपने तकनीकी नवाचार से ग्लोबल डिजिटल डिफरेंस को भी उजागर किया है। आज एआइ का दौर है, दुनिया में ज्यादातर कामकाज इंटरनेट, तकनीक से किए जा रहे हैं ।आने वाले समय में इंटरनेट व तकनीक का उपयोग निश्चित ही और अधिक बढ़ेगा, ऐसे में जापान की इंटरनेट स्पीड से जापान के साथ ही साथ दुनिया के अन्य देशों को भी इसके लाभ मिल सकेंगे। आने वाले समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, 6जी नेटवर्क, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी उभरती तकनीकों के लिए अत्यधिक डाटा ट्रांसमिशन की जरूरत होगी। जापान की यह तकनीक इन जरूरतों को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हालांकि, यह तकनीक अभी प्रयोगशाला तक ही सीमित है, और इसे आम उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने में वक्त लगेगा, लेकिन भविष्य की इंटरनेट कनेक्टिविटी के लिहाज से यह एक मजबूत नींव तो रखती ही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इतनी तेज इंटरनेट स्पीड को अपनाने में भी मनुष्य को अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। मसलन, इस तकनीक को आम जनता तक पहुंचाने के लिए भारी निवेश की जरूरत होगी। सच तो यह है कि इसके लिए मल्टी-कोर फाइबर और नए हार्डवेयर की जरूरत है। साथ ही, इसे किफायती और स्टेबल बनाना भी एक बड़ी चुनौती है ।जापान की यह उपलब्धि हमें भी अपनी इंटरनेट गति को बढ़ाने की जरूरत की याद दिलाती है। आज भारत लगातार डिजिटाइजेशन की ओर बढ़ रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि 1 जुलाई, 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरु किए गए डिजिटल इंडिया का उद्देश्य डिजिटल बुनियादी ढाँचे को बढ़ाना, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना और तकनीक के माध्यम से सरकारी सेवाओं में सुधार करना है। यह पहल विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ाने, कैशलेस लेनदेन को प्रोत्साहित करने और बेहतर पारदर्शिता और दक्षता के लिए ई-गवर्नेंस सुनिश्चित करने पर केंद्रित है, लेकिन आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में उतनी इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है, जितनी की होनी चाहिए। आज भी भारतीय ग्रामीण व दूर-दराज के क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी और 5जी नेटवर्क का विस्तार काफी चुनौतियों से भरा है। इंटरनेट शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आर्थिक विकास के लिए नए अवसर खोल सकता है। डिजिटल इंडिया रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहा है और शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल अंतर को पाट रहा है । इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने से अनेक प्रकार के अवसर देश में पैदा होंगे। स्मार्ट सिटी, टेलीमेडिसिन और ऑनलाइन शिक्षा पद्धति जैसी पहलें तेज और विश्वसनीय इंटरनेट के बगैर अधूरी हैं। इंटरनेट स्पीड बढ़ेगी तो डिजिटल इंडिया को गति मिलेगी और डिजिटल इंडिया से रोज़गार के अवसर बढ़ने, अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने और बुनियादी ढाँचे के आधुनिकीकरण की उम्मीद है ।सच तो यह है कि तेज़ इंटरनेट स्पीड के कई फायदे हैं, जिनमें बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव, बढ़ी हुई उत्पादकता, बेहतर ऑनलाइन गेमिंग और स्ट्रीमिंग, और बेहतर दूरस्थ कार्य और संचार आदि शामिल हैं। अंत में यही कहूंगा कि आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे में निवेश बढ़ाएं और तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में अनुसंधान व विकास को प्रोत्साहित करें ।हाई-स्पीड इंटरनेट नेटवर्क की मौजूदगी सभी की उत्पादकता बढ़ा सकती है ।सुचारु इंटरनेट कनेक्शन से कार्य कुशलता भी बढ़ती है, क्योंकि सभी कार्य आसानी से और तेज़ी से किए जा सकते हैं। न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी, व्यावसायिक पहुँच बढ़ाने के लिए हाई-स्पीड इंटरनेट ज़रूरी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इस डिजिटल युग में, इंटरनेट लगभग सभी के लिए एक बुनियादी ज़रूरत बन गया है ।उत्पादकता बढ़ाने के अलावा, हाई-स्पीड इंटरनेट नेटवर्क विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार विकास को भी बढ़ावा देते हैं। अत: इस क्रम में हमें जरूरत इस बात की है कि हम वैश्विक सहयोग को मजबूत करें, ताकि हम भी जापान जैसी तकनीकी क्रांति का हिस्सा बन सकें और अपने देश को लगातार ऊंचाइयों व उन्नयन की ओर अग्रसर कर सकें।

(दक्ष प्रजापति जयंती विशेष) प्रेरणा के प्रतीक: प्रजापति समाज के साहित्यिक रत्न

डॉ. सत्यवान सौरभ और प्रियंका सौरभ, प्रजापति समाज के ऐसे साहित्यिक रत्न हैं जिन्होंने लेखनी के माध्यम से समाज, संवेदना और चेतना को नई दिशा दी है। गाँव की मिट्टी से निकली उनकी रचनाएं आज राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हैं। सत्यवान जहाँ पशु चिकित्सक होते हुए भी कविता, निबंध, बाल साहित्य और लोक भाषा में रचनात्मक हस्तक्षेप करते हैं, वहीं प्रियंका शिक्षा विभाग में प्रवक्ता होते हुए नारी विमर्श, सामाजिक न्याय और बच्चों की दुनिया को शब्द देती हैं। यह लेखक दंपती नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा हैं – ग्रामीण चेतना से वैश्विक संवाद तक की यात्रा के प्रतीक। डॉ. सत्यवान सौरभ और प्रियंका सौरभ, प्रजापति समाज के गौरव हैं, जो साहित्य, शिक्षा और पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं। इनकी लेखनी गाँव की मिट्टी से निकलकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँची है। दोनों लेखक हिंदी और अंग्रेज़ी में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों पर दैनिक संपादकीय लेख लिखते हैं, जो देश-विदेश के हज़ारों समाचार पत्रों और पोर्टलों में नियमित प्रकाशित होते हैं।

✍ हंसराज वर्मा

हर समाज में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो न केवल अपनी प्रतिभा से पहचान बनाते हैं, बल्कि पूरे समुदाय की सोच, संस्कृति और सम्मान को नई ऊँचाइयों तक ले जाते हैं। प्रजापति समाज के ऐसे ही दो अनमोल रत्न हैं – डॉ. सत्यवान सौरभ और प्रियंका सौरभ, जो लेखनी, विद्वता और सामाजिक चेतना के समन्वय से एक मिसाल बन चुके हैं।

शुरुआत गाँव से, उड़ान वैश्विक मंच तक

डॉ. सत्यवान सौरभ हरियाणा के भिवानी जिले के सिवानी उपमंडल के गाँव बड़वा से संबंध रखते हैं। उनके पिता श्री रामकुमार गैदर, पेशे से एक किसान हैं – जिनकी मेहनत, ईमानदारी और मूल्यों ने सत्यवान सौरभ को जड़ों से जोड़कर रखा। पशु चिकित्सक होने के साथ-साथ वे राजनीति विज्ञान में डॉक्टरेट (PhD) हैं, और उनका साहित्यिक रुझान समाज की समस्याओं, ग्रामीण जीवन और संवेदनाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।

वहीं प्रियंका सौरभ हिसार जिले के गाँव आर्यनगर की बेटी हैं। उनके पिता श्री सुमेर सिंह उब्बा, एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (तहसीलदार) हैं। प्रियंका न केवल हरियाणा शिक्षा विभाग में राजनीति विज्ञान की प्रवक्ता हैं, बल्कि स्वयं भी डॉक्टरेट शोध कर रही हैं। उनकी लेखनी में नारीवाद, सामाजिक बदलाव और शिक्षा का गहरा समावेश है।

साहित्यिक सफर और रचनात्मक उपलब्धियाँ

डॉ. सत्यवान सौरभ और प्रियंका सौरभ दोनों मिलकर आज की पीढ़ी के सबसे प्रेरणादायक लेखक दंपती बन चुके हैं।

डॉ. सत्यवान सौरभ की अब तक 15 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें कविता, बाल साहित्य, निबंध और लघुकथाएँ प्रमुख हैं।

प्रियंका सौरभ की 10 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें 'दीमक लगे गुलाब', 'चूल्हे से चाँद तक', 'निर्भयाएँ' जैसी कृतियाँ नारी-समाज के यथार्थ को उकेरती हैं।

दोनों की कई पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं और शैक्षणिक व साहित्यिक मंचों पर चर्चित भी हो चुकी हैं।

रचनाओं में समाज की सच्चाई और संवेदना

डॉ. सत्यवान की रचनाएँ जैसे 'कुदरत की पीर', 'कहता है कुरुक्षेत्र' या 'चुप्पी' — समाज की जटिलताओं, पर्यावरणीय संकट और मौन में छिपे प्रतिरोध को उजागर करती हैं। उनका बाल साहित्य भी बच्चों के मानसिक और नैतिक विकास पर केंद्रित है।

प्रियंका सौरभ की 'निर्भयाएँ' आज के भारत की स्त्रियों की आवाज़ बन चुकी है। उनके लेखनों में स्त्री चेतना, शिक्षा की शक्ति और सामाजिक बदलाव की लहर स्पष्ट रूप से महसूस की जा सकती है।

एक साथ दो कलम – समाज के लिए संकल्प

इस लेखक दंपती की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे दोनों व्यक्तिगत रूप से सक्षम और सशक्त हैं, परंतु जब वे साथ लिखते हैं या किसी मुद्दे पर मिलकर कार्य करते हैं, तो एक साझा दृष्टिकोण सामने आता है – जो संवेदनशील भी है और प्रगतिशील भी। वे न केवल साहित्य सृजन करते हैं, बल्कि युवाओं, ग्रामीणों और विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर व्याख्यान, कार्यशाला और सामाजिक गतिविधियों में भाग भी लेते हैं।

प्रेरणा का स्रोत – उनके अपने समाज के लिए

प्रजापति समाज, जो पारंपरिक रूप से कुम्हार, कारीगर और शिल्प पर आधारित रहा है, आज शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बना रहा है। डॉ. सत्यवान और प्रियंका सौरभ जैसे व्यक्तित्व इस परिवर्तन के वाहक बन चुके हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया कि अगर संकल्प हो, तो कोई भी पृष्ठभूमि रचनात्मकता के आकाश को छूने में बाधा नहीं बन सकती।

नवाचार और भविष्य की दृष्टि

आज जब साहित्य डिजिटल दौर में प्रवेश कर चुका है, तब यह लेखक युगल अपनी रचनाओं को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स, ऑडियो बुक्स, और शोध आधारित लेखन के ज़रिए नई पीढ़ी तक पहुँचा रहा है। उन्होंने न केवल अपनी पुस्तकों के माध्यम से, बल्कि शिक्षण और शोध द्वारा भी समाज को समृद्ध किया है।

गर्व और गौरव का विषय

डॉ. सत्यवान सौरभ और प्रियंका सौरभ की जीवन यात्रा, संघर्ष, शिक्षा और साहित्यिक योगदान — न केवल प्रजापति समाज के लिए, बल्कि पूरे हरियाणा और देश के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं। इनकी कलम से निकले शब्द सृजन, संघर्ष और सच्चाई के रंगों में डूबे हैं।

वे न केवल लेखक हैं, बल्कि समाज के प्रतिबद्ध प्रहरी हैं, जिन्होंने लेखनी को बदलाव का माध्यम बना दिया है। भविष्य की पीढ़ी उन्हें न केवल एक सफल लेखक दंपती के रूप में देखेगी, बल्कि एक ऐसे आदर्श के रूप में याद करेगी, जिसने समाज को आत्मचिंतन और आत्मनिर्माण का अवसर दिया।

"पीछे नहीं, बराबरी में: केरल के स्कूलों की नई बैठने की व्यवस्था एक क्रांतिकारी कदम"

(लेखिका: प्रियंका सौरभ)

भारत के शिक्षा तंत्र में दशकों से एक अदृश्य रेखा बनी रही है — आगे की बेंच और पीछे की बेंच। जहाँ आगे की बेंच पर बैठने वाले छात्र अक्सर ₹मेधावी₹ माने जाते हैं, वहीं पीछे की बेंच को उपेक्षा और उपहास का प्रतीक समझा जाता है। लेकिन केरल के सरकारी स्कूलों में हाल ही में जो बदलाव लाया गया है, वह इस मानसिकता को जँड से चुनौती देता है। अब वहां ₹बैक बेंचर्स₹ नाम की कोई चीज़ नहीं है।

केरल के स्कूलों में अब छात्रों को गोल घेरे में या यू-शेप में बैठाया जा रहा है, जिससे हर बच्चा शिक्षक के सामने होता है, न कोई आगे, न कोई पीछे। यह केवल एक बैठने की शैली नहीं, बल्कि एक वैचारिक क्रांति है — यह इस सोच को तोड़ता है कि सीखने का अधिकार कुछ बच्चों तक सीमित है।

इस बदलाव का उद्देश्य स्पष्ट है: बराबरी, भागीदारी और समावेशिता। हर बच्चा अब शिक्षक से आँख मिलाकर संवाद कर सकता है, अपने सवाल पूछ सकता है और खुद को महत्वपूर्ण महसूस कर सकता है।

बताया जाता है कि यह नई व्यवस्था एक फिल्म में दिखाई गई कल्पना से प्रेरित है। कभी-कभी सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि बदलाव की प्रेरणा भी बन जाता है। जिस तरह ₹तारे ज़मीन पर₹ ने विशेष बच्चों को लेकर दृष्टिकोण बदला, वैसे ही इस फिल्म ने शिक्षा व्यवस्था पर सोचने को मजबूर किया। केरल ने उस कल्पना को ज़मीन पर उतारा — और यही वह दृष्टिकोण है जो भारत के शिक्षा क्षेत्र में एक नयी रोशनी बन सकता है।

शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं, वह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। एक बच्चा जो हमेशा पीछे बैठाया जाता है, उसके आत्मविश्वास पर इसका असर पड़ता है। उसे लगता है कि वह ₹कमतर₹ है, ₹गैर ज़रूरी₹ है। लेकिन जब वही बच्चा शिक्षक के सामने बैठता है, चर्चा का हिस्सा बनता है, तो उसके भीतर एक नयी ऊर्जा जन्म लेती है।

नई बैठने की व्यवस्था केवल छात्रों के लिए नहीं, शिक्षकों के लिए भी एक चुनौती और अवसर दोनों है। अब शिक्षक को केवल सामने खड़े होकर भाषण देने वाला नहीं, बल्कि बातचीत और सहभागिता में विश्वास रखने वाला मार्गदर्शक बनना होगा। यह ₹एकतरफा शिक्षा₹ को ₹दो तरफा संवाद₹ में बदलता है।

यह नई व्यवस्था शिक्षा में लोकतंत्र लाने की शुरुआत है। जहाँ सभी बच्चों को समान दृष्टि से देखा जाता है। यह भारत के संविधान की उस मूल भावना के अनुरूप है, जो समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की बात करता है।

भारत में शिक्षा को लेकर अक्सर यह शिकायत रहती है कि कक्षा का वातावरण असमानता को बढ़ावा देता है। कुछ बच्चों को ही शिक्षक का ध्यान मिलता है, जबकि अन्य बच्चे पीछे छूट जाते हैं। केरल की यह पहल इस असंतुलन को खत्म करने का प्रयास है। जब हर बच्चा एक जैसे स्थान पर बैठेगा, तो शिक्षक की दृष्टि और संवाद में भी समता आएगी।

शिक्षा के समाजशास्त्र के नजरिए से देखें तो यह व्यवस्था वर्ग, जाति और आर्थिक स्थिति से जुड़ी भेदभावपूर्ण मानसिकता को भी चुनौती देती है। पिछली पंक्तियों में अक्सर वे बच्चे बैठते थे जो या तो सामाजिक रूप से दबे हुए होते थे या जिनका आत्मविश्वास कम होता था। अब जब वे केंद्र में होंगे, तो उनके आत्म-सम्मान में वृद्धि होगी।

केरल का यह प्रयोग इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह केवल नीति-निर्माताओं द्वारा ऊपर से थोपा गया बदलाव नहीं है, बल्कि शिक्षकों, छात्रों और स्कूल प्रशासन की सामूहिक सोच और सहमति से उपजा विचार है। यह समावेशी शिक्षा के वैश्विक सिद्धांतों के अनुकूल है, जिसमें हर बच्चे को समान अवसर देना प्राथमिकता है।

नई व्यवस्था बच्चों को पारंपरिक अनुशासन की जज़गह से निकालती है और उन्हें संवाद, सहयोग और सहभागिता की दुनिया में लाती है। यह शिक्षण पद्धति को अधिक संवादात्मक, जीवंत और व्यावहारिक बनाती है।

इस मॉडल का एक मनोवैज्ञानिक पहलू भी है: जब बच्चा खुद को महत्वपूर्ण महसूस करता है, तो उसकी सीखने की क्षमता बढ़ जाती है। आत्म-सम्मान, आत्म-विश्वास और कक्षा में सक्रियता आपस में जुड़े हुए हैं। इसलिए यह व्यवस्था केवल बैठने की शैली नहीं, बल्कि सीखने की संस्कृति में बदलाव है।

व्यवहारिक दृष्टि से यह व्यवस्था आसान नहीं है। देश के अधिकांश स्कूलों में कक्षाएं छोटी हैं, छात्र संख्या अधिक है और फर्नीचर सीमित। लेकिन यह असंभव भी नहीं है। यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति हो और शिक्षक समुदाय इस दिशा में तैयार हो, तो यह मॉडल अन्य राज्यों में भी अपनाया जा सकता है।

देशभर में शिक्षा बजट का एक हिस्सा कक्षा के पुनर्गठन में लगाया जाए तो यह केवल भौतिक परिवर्तन नहीं, मानसिक और शैक्षणिक बदलाव भी लेकर आएगा। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण, स्कूलों की संरचना और पाठ्यचर्या में भी सुधार जरूरी है।

निजी स्कूलों को भी इस पहल से सीख लेनी चाहिए। अक्सर निजी स्कूल केवल रैंकिंग और परीक्षा परिणामों पर ध्यान देते हैं, लेकिन समावेशी, संवेदनशील और संवाद आधारित शिक्षा की ज़रूरत उन्हें भी है। अगर वे वास्तव में छात्रों का सम्पूर्ण विकास चाहते हैं, तो इस मॉडल को अपनाना न केवल उचित होगा बल्कि ज़रूरी भी।

माता-पिता, अभिभावकों और समाज को भी इस पहल का स्वागत करना चाहिए। उन्हें यह समझना होगा कि शिक्षा केवल अंक लाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि एक सामाजिक, मानसिक और नैतिक विकास की प्रक्रिया है। जब बच्चा बराबरी में बैठेगा, सुनेगा और सुनेगा जाएगा, तभी वह एक जिम्मेदार नागरिक बनेगा।

यह व्यवस्था उस सोच को भी चुनौती देती है कि शिक्षक सर्वोपरि है और छात्र केवल एक श्रोता। अब शिक्षक और छात्र दोनों संवाद के भागीदार हैं। यह आधुनिक शिक्षा की मूल भावना है, जहाँ शिक्षा 'सत्ता' नहीं बल्कि 'साझेदारी' है।

केरल का यह प्रयोग भारत की शिक्षा नीति 2020 के विजन के भी अनुरूप है, जो रटंत विद्या से हटकर सोचने, संवाद करने और रचनात्मक बनने पर बल देती है। जब छात्र संवाद के केंद्र में होंगे, तो उनकी सोचने की क्षमता और आत्म-अभिव्यक्ति का स्तर भी बढ़ेगा।

इसके दूरगामी प्रभाव होंगे। एक ऐसा बच्चा जो आज अपने शिक्षक से बिना डरे बात कर पा रहा है, कल समाज में भी अपनी बात कहने का साहस रखेगा। वह सिर्फ नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने वाला बन सकता है।

शिक्षा को लेकर हमारे समाज में अक्सर एक डर का माहौल बना रहता है — परीक्षा का डर, अंक का डर, असफलता का डर। लेकिन जब कक्षा का वातावरण सहभागी और संवादात्मक होता है, तो ये डर धीरे-धीरे खत्म होते हैं। यही डर-मुक्त शिक्षा की दिशा में एक बड़ा कदम है।

संक्षेप में कहें तो केरल के स्कूलों में बैठने की इस नई व्यवस्था ने केवल कुर्सी-मेज़ें नहीं बदली हैं, बल्कि एक पूरी पीढ़ी के सोचने, सीखने और समाज से जुड़ने के तरीके को बदला है। यह परिवर्तन छोटे स्तर पर शुरू हुआ है, लेकिन इसके परिणाम बहुत बड़े हो सकते हैं।

आशा है कि भारत के अन्य राज्य भी इस प्रयोग से प्रेरणा लेकर शिक्षा को 'प्रतियोगिता' से निकालकर 'समावेशिता' की ओर ले जाएंगे। जब हर बच्चा केंद्र में होगा, तभी समाज का केंद्र भी न्याय, समानता और सहभागिता पर टिकेगा।

संध्या राणी माझी ओडिशा में सरकारी वाहन चलाने वाली पहली महिला चालक बन गई हैं

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: राज्य में पहली बार किसी महिला सरकारी वाहन चालक ने ओड़िशा में इतिहास रच दिया है। संध्या रानी माझी प्रमुख सचिव परिवहन श्रीमती उषा पाढ़ी का सरकारी वाहन चलाकर ओडिशा में सरकारी वाहन चलाने वाली पहली महिला चालक बन गई हैं। यह उपलब्धि महिला सशक्तिकरण और समावेशन को बढ़ावा देगी।ओडिशा सरकार द्वारा महिला चालकों को इस महिला सुविधा प्रदाता जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित करने की पहल ने अदार की सफलता का मार्ग प्रशस्त किया है।

इस बीच, मयूरभंज की संध्या राणी माझी हाल ही में राज्य की पहली महिला चालक बनीं जिन्हें सरकारी ड्राइवर नियुक्त किया गया है। 44 वर्ष की आयु में पुरुष-प्रधान पेशे में उनका प्रवेश इस बात का प्रतीक और प्रमाण है कि जब महिलाओं, खासकर पारंपरिक रूप से अदृश्य भूमिकाओं में काम करने वाली महिलाओं को अवसर और सम्मान दिया जाता है, तो वे दृढ़ संकल्प और गर्व के साथ शीर्ष पर पहुँचती हैं। अदार हमेशा से रक्षा या नौसेना में अपना करियर बनाना चाहती थीं। लेकिन कुछ असफल प्रयासों के बाद, उन्होंने ड्राइविंग के अपने जुनून को आगे बढ़ाने और इसे अपना करियर बनाने का फैसला किया। हालाँकि, कोई अवसर न मिलने पर, उन्होंने अन्य अंशकालिक नौकरियां करना शुरू कर दिया।

संध्या ने कहा, मेरी शादी 2005 में हुई थी। मेरे पति राम राय माझी, जो खुद भी ड्राइवर हैं, हमेशा मेरे लिए एक सहारा रहे हैं। उन्होंने मुझे ड्राइविंग सीखने में मदद करने के लिए एक सेकंड-हैंड नैनो कार भी खरीदी। दस साल से ज़्यादा समय तक टैक्सी ड्राइवर के रूप में काम करने के बाद, माझी 2023 में जाजपुर के छतिया स्थित एचएमवी प्रशिक्षण केंद्र में शामिल हो गए और उन्हें जापान में ड्राइवर के रूप में शामिल होने का भी मौका मिला। लेकिन पारिवारिक ज़िम्मेदारियों ने उन्हें वहीं रहने के लिए मजबूर कर दिया। बाद में, उन्हें आवास एवं शहरी विकास और परिवहन सचिव उषा पाढ़ी से इस पेशे को चुनने का मौका मिला। उन्होंने बिना सोचे-समझे इसे अपना लिया। हालाँकि, मुझे नहीं पता था कि ऐसा करके मैं सरकारी गाड़ी चलाने वाला पहला सरकारी ड्राइवर बन जाऊँगा। इससे मुझे खुशी होती है। इस नौकरी ने न केवल मुझे अपने जुनून को पूरा करने में मदद की है, बल्कि मुझे आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र बनाया है, अदार कहते हैं।

अदार एक साथ कई काम करने वाले व्यक्ति भी हैं। उनकी ड्यूटी आमतौर पर दोपहर 3 बजे तक खत्म हो जाती है और उसके बाद, वह शाम को एक पार्लर में ब्यूटीशियन का काम करते हैं। उषा पाढ़ी कहती हैं कि संध्या ने एक बड़ा बदलाव लाया है। ड्राइवरों को अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। वे शासन, सेवा वितरण और सार्वजनिक जीवन में एक मौन लेकिन अपरिहार्य भूमिका निभाते हैं। और एडीआर की इस पहल से, हमने न केवल लैंगिक रूढ़िवादिता को तोड़ा है, बल्कि ड्राइवरों को आकांक्षाओं, क्षमताओं और नेतृत्व करने के साहस वाले व्यक्तियों के रूप में भी पहचाना है, सचिव उषा पाढ़ी ने कहा।

उन्होंने आगे कहा कि आवास एवं शहरी विकास विभाग और ओएसआरटीसी के अंतर्गत हमारी बसों में कई महिलाएँ कंडक्टर के रूप में कार्यरत हैं। पाढ़ी ने कहा कि आगामी महिला सुभाक पहल के माध्यम से, वाणिज्य और परिवहन विभाग हर साल 500 महिला ड्राइवरों को प्रशिक्षित करने की योजना बना रहा है, जो उन्हें वित्तीय स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाएगा।

बाबा बर्फानी ग्रुप इंदौर द्वारा अमरनाथ यात्रा के लिए भोले के भक्त रवाना हुए

परिवहन विशेष न्यूज

बाबा बर्फानी ग्रुप द्वारा बाबा भोलेनाथ विन्ध्येवर खाटू श्याम मंदिर मयूर नगर गली नंबर 11 इंदौर से बाबा अमरनाथ यात्रा पर 19 भक्तों का एक जत्था अमरनाथ यात्रा पर रवाना हुए । जिसमें क्षेत्र से संतोष गुर्जर ,राम गुर्जर , भोला यादव , बालेंद्र मिश्रा , राजेश राजपूत , आशीष गुर्जर, ज्ञान सिंह राजपूत, सुशील विजेंद्र पाटिल गुर्जर , आशीष गुर्जर , अजीत अवस्थी , राजेश पटेल, राजेश धापकरी , आनंद मुकाती , रामनिवास मीणा , राधेश्याम पटेल ,आशीष फुलरे , नंदकिशोर गुर्जर , भक्त यात्रा पर गए हैं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भक्तों का स्वागत शिवम जी पंडित मंदिर पुजारी गौरीशंकर मुरलिया , राजकुमार पटेल , दिलीप कुमावत , हरिओम पाटिल ,सुबोध गोलू टाले , कैलाश कमलेश चौधरी , मनोज खोदरे , राजेश गुर्जर , पिंटू गुर्जर , संदीप तले, दिनेश राजपूत ,गोपाल राजपूत ,नरेश पुरोहित , संतोष यादव ,रणजीत राजपूत ,राहुल यादव , पुष्पेंद्र पाठक ,के साथ बड़ी संख्या में सूरज चौहान देवेश गुर्जर और क्षेत्र के सामाजिक बंधु एवं माताएं उपस्थित रहे । भक्तों का स्वागत कर यात्रा को रवाना किया गया । यहां जानकारी समाजिक कार्यकर्ता व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने प्रेस विज्ञप्ति में दी है।

ABVP का सक्रिय सदस्य सौम्याश्री बीसी , उन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया: राजनीति तेज़

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर: बालासोर फ़कीरमोहन स्वायत्त महाविद्यालय के शिक्षा विभागाध्यक्ष (HOD) एक छात्र के साथ अनुचित पक्षपात (feber) करने के नाम पर बार-बार दुर्व्यवहार कर रहे थे। जब यह असहनीय हो गया, तो छात्र ने विरोध किया और कॉलेज प्रशासन को इसकी सूचना दी। दरअसल, सात दिन पहले छात्र ने पुलिस थाने जाकर संबंधित प्रोफेसर के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। हालाँकि, गठित आंतरिक समिति की किसी ने नहीं सुनी। मजबूर होकर, छात्र ने शनिवार को कॉलेज अध्यक्ष के कार्यालय के सामने खुद पर पेट्रोल डालकर आत्महत्या का प्रयास किया। छात्र का शरीर लगभग 90 प्रतिशत जल गया था और गंभीर हालत में उसका भुवनेश्वर एम्स में इलाज चल रहा है। इस घटना में पुलिस ने संबंधित कॉलेज के शिक्षा विभागाध्यक्ष समीर रंजन साहू को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया है। इसी तरह, उच्च शिक्षा विभाग ने कॉलेज के अध्यक्ष दिलीप घोष और प्रोफेसर साहू को निलंबित कर दिया है। उच्च शिक्षा मंत्री सूर्यवंशी सूर्य ने बताया है कि घटना की जाँच के लिए एक संयुक्त सचिव स्तर की समिति गठित की गई है।

फकीर मोहन ऑटोनॉमस कॉलेज में हुई एक चौंकाने वाली घटना ने राज्य की राजनीति में गरमागरम बहस छेड़ दी है। कांग्रेस विधायक सोफिया फिरदौस ने इस घटना को लेकर राज्य सरकार की कड़ी आलोचना की है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य में महिलाएं असुरक्षित हैं, लेकिन सरकार गहरी नींद सो रही है। सोफिया ने कहा, 'इस सरकार पर और कितनी महिलाओं पर अत्याचार होंगे? जब पीड़ितों ने शिकायत की, तो तुरंत कार्रवाई क्यों नहीं की गई?' उन्होंने आगे आरोप लगाया कि भाजपा सरकार ओडिया अस्मिता और महिलाओं की गरिमा की बात करके सत्ता में आई थी, लेकिन महज एक साल में उन्होंने लोगों को धोखा दिया है। सरकार राज्य में महिलाओं की सुरक्षा करने में पूरी तरह विफल रही है। ऐसी घटना की राष्ट्रीय मीडिया में चर्चा हो रही है, जिससे ओडिशा की प्रतिष्ठा धूमिल हो रही है। हमने छात्रा और उसके माता-पिता से मुलाकात की है। छात्रा का शरीर लगभग 95 प्रतिशत जल चुका है। उन्होंने 20 दिन पहले इसकी शिकायत की थी और इस महीने की पहली तारीख को लिखित शिकायत दर्ज कराई थी। लेकिन कॉलेज अध्यक्ष, पुलिस प्रशासन, स्थानीय सांसद ने छात्रा की शिकायत नहीं सुनी। उन्होंने मांग की है कि उच्च शिक्षा मंत्री इस घटना पर तुरंत इस्तीफा दें। राज्य महिला कांग्रेस अध्यक्ष मीनाक्षी बहिनीपति ने भी राज्य में महिलाओं की सुरक्षा पर सवाल उठाए!

विपक्षी नेता नवीन पटनायक ने घटना पर दुख व्यक्त किया और पीड़िता के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। नवीन ने घटना पर रोष व्यक्त करते हुए राज्यपाल से हस्तक्षेप की मांग की है। नवीन पटनायक ने एक साक्षात्कार में कहा, ₹राज्य के एक प्रमुख विश्वविद्यालय की छात्रा द्वारा आत्महत्या करने की घटना बेहद चौंकाने वाली और दुखद है। मैं भगवान जगन्नाथ से उसके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूँ। आरोप है कि एक शिक्षक ने उसे प्रताड़ित किया था। प्राचार्य को लिखे पत्र में, उन्होंने बताया कि उन्होंने पहले भी आत्महत्या करने की कोशिश की थी।

उन्होंने आगे कहा कि छात्रा महीनों से डर और दर्द में जी रही थी। प्राचार्य ने उच्च शिक्षा मंत्री, केंद्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री को सूचित किया। बार-बार शिकायत करने के बावजूद, न्याय नहीं मिला। उन्होंने न्याय की गुहार लगाते हुए कई वरिष्ठ अधिकारियों को टैग किया। अपने अंतिम प्रयास में असफल होने के बाद, उन्होंने प्राचार्य के कक्ष के बाहर आत्महत्या करने का अतिवादी निर्णय लिया। मैं राज्यपाल से हस्तक्षेप करने का अनुरोध करता हूँ। विश्वविद्यालय के कुलपति होने के नाते, उन्हें छात्रा को न्याय दिलाना चाहिए।

इस संबंध में, मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने कहा, सरकार ने बालासोर की घटना को गंभीरता से लिया है। मैं एम्स जा रहा हूँ और स्थिति पर नज़र रखूँगा। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा इस घटना की परिस्थितियों की जाँच के लिए एक समिति का गठन किया गया है। रिपोर्ट आने के बाद कार्रवाई की जाएगी।

सरकार पूरी तरह से सतर्क है। ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। मोहन चरण माझी ने कहा कि सरकार कॉलेजों और तकनीकी संस्थानों में उत्पीड़न और यौन उत्पीड़न को रोकने के लिए सक्रिय कदम उठाने का निर्णय ले रही है।

एफएम ऑटोनॉमस कॉलेज में हुए मामले में, पीड़ित छात्रा सौम्याश्री इंटीग्रेटेड विद्यालय में पढ़ती थी। वह भोगराई क्षेत्र की बेटी है। वह 2021-22 से अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) से जुड़ी थी। उसने मार्शल आर्ट में आत्मरक्षा का प्रशिक्षण लिया था। वह विभिन्न कॉलेजों में जाकर दूसरों को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देती थी। सौम्याश्री विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करती थी। वह हर साल ABVP द्वारा आयोजित प्रतिभा संगम कार्यक्रम में भाग लेती थी। उसने अभिनय में कई पुरस्कार जीते हैं। सौम्याश्री ने खुद पिछले साल यानी 2024 में प्रतिभा संगम कार्यक्रम का आयोजन किया था।

वह पढ़ाई के लिए अपने दोस्तों के साथ एक निजी मेस में रहती थी। वह ABVP की एक सक्रिय कार्यकर्ता थी। वह ABVP के लिए सदस्यों की भर्ती भी कर रही थी।

पीड़ित ABVP की एक सक्रिय सदस्य है। अगर वह अपनी पार्टी का सक्रिय सदस्य है, तो यदि किसी को न्याय नहीं मिल पाता है तो फिर सवाल यह उठता है कि अन्य संगठनों या आम जनता को न्याय कैसे मिलेगा।

झारखंड के खेलकूद मंत्री मिले धोनी से, खेल संभावना एवं विकास की तलाश

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। महेंद्र सिंह धोनी इन दिनों रांची में रह रहे हैं .एक सफल कप्तान होने के साथ क्राउड पुलिंग व्यक्तित्व के मालिक भी है तथा खेल से लेकर सेना से जुड़े रहते हैं .इसमें दो राय नहीं कि वे झारखंड के खेल के अच्छे अभिभावक व मार्गदर्शक भी हो सकते .संभवत इसी तलास में राज्य के मंत्री उनसे मिले .झारखंड के राज्य के पर्यटन, खेलकूद, कला संस्कृति और युवा कार्यविभाग के मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने उनकी तस्वीर साझा की है. उन्होंने इस मुलाकात को बेहद खास बताया है.

मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने कहा धोनी से मिलकर राज्य में खेल का विकास संबंधी बातचीत हुई । उन्होंने कहा कि आने वाले समय में झारखंड को खेल व पर्यटन के क्षेत्र में नई ऊंचाई तक ले जाया जायेगा ।

इस मुलाकात के दौरान झारखंड स्टेट क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय नाथ शाहदेव भी मौजूद थे. मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने मुलाकात के दौरान एमएस धोनी को भगवान बिरसा मुंडा की एक प्रतिमा सप्रेम भेंट की है. उन्होंने धोनी के साथ कुछ तस्वीरें भी सोशल मिडिया पर पोस्ट की है.

हालांकि महेंद्रसिंह धोनी की तरफ से इस मुलाकात या राज्य के पर्यटन और खेलकूद को बढ़ावा देने में उनके संभावित मार्गदर्शन के बाबत कुछ नहीं कहा गया है. दरअसल, महेंद्रसिंह धोनी जब भारतीय क्रिकेट टीम में चयनित हुए थे, तब तत्कालीन राज्य सरकार ने हरमू हाउसिंग कॉलोनी में प्लॉट मुहैया कराया था, जहां उन्होंने शानदार बंगला है तथा निकट अपना फर्महाऊस भी है ।

सांसद जोबा ने सारंडा जंगल में बसे महादेव के श्रावणी मेला का किया उद्घाटन

तीन राज्यों के लोगों का होता है समावेश , दर्जनों ट्रेनें रूकती यहां

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

मनोहरपुर। झारखंड स्थित सिंहभूम की अधिष्ठात्री देवी मां पाउडी के आंगन पोड़ाहाट राज्य (1205-1857) में यह शिवालय सारंडा के मनोरम वादियों को लेकर जितना आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करता उससे कहीं अधिक इसकी ऐतिहासिक धार्मिक महत्व को लेकर लोगों का भावनात्मक संबंध से जुड़ा है जो तीनों सिंहभूम समेत तीन राज्यों मसलन झारखंड ,बंगाल एवं उड़ीसा तक फैला है ।जहां तीन राज्यों से भक्तों का समावेश हर सोमवार को श्रावण देखने मिलता । आज आगामी श्रावण सोमबारी को लेकर पश्चिम सिंहभूम जिला स्थित गोइलकेरा अन्तर्गत महादेवशाल धाम में रविवार को श्रावणी मेले का विधिवत उद्घाटन सिंहभूम की सांसद जोबा माझी ने फीता काटकर किया।उनके उनके साथ आये लोगों ने बाबा के दरबार में मत्था टेका और प्रसाद ग्रहण किया।

बताया जाता है कि महादेवशाल सेवा -पूजा समिति और प्रशासन द्वारा आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। स्थानीय बीडीओ विवेक कुमार और थाना प्रभारी ने समिति के पदाधिकारियों के साथ श्रद्धालुओं तथा भीड़ सुरक्षा मद्देनजर जायजा लिया।

गृहमंत्रालय के निर्देश पर सुरक्षाबलों पर माओवादी हमले केस को एनआईए ने किया टैकअवर

ओडिशा के बांको स्टेन क्वीरी का विस्फोटक झारखंड के तिरिलपोसी में जप्त के समय हुई थी मुठभेड़

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड में भाकपा माओवादियों के द्वारा सुरक्षाबलों पर हमले से जुड़े केस को एनआईए ने झारखंड राज्य सरकार से अपने हाथ में ले लिया है। एनआईए ने इस मामले में एक करोड़ के इनामी भाकपा माओवादी पोलित ब्यूरो सदस्य मिसिर बेसरा, केंद्रीय कमेटी सदस्य पतिराम मांझी उर्फ अनल, असीम मंडल समेत 17 माओवादियों को आरोपी बनाया है।

एनआईए ने बीएनएस, आर्म्स एक्ट, सीएलए 2013 एक्ट व यूएपी एक्ट की संगत धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय ने 25 जून को जरायकेला थाने में दर्ज केस को टेकओवर कर नए सिरे से जांच का आदेश दिया था। भारत सरकार के अवर सचिव विमल कुमार शुक्ला के बयान पर एफआईआर दर्ज की गई है। केस में एनआईए रांची के इंस्पेक्टर रामसुभाग सिंह को मुख्य अनुसंधान पदाधिकारी बनाया गया।

चाईबासा के जरायकेला थाना क्षेत्र के तिरिलपोसी जंगल में प्रतिबंधित माओवादी संगठन के केंद्रीय दस्ता की मौजूदगी की सूचना सुरक्षाबलों को मिली थी। पुलिस को जानकारी मिली थी कि माओवादी पोलित ब्यूरो सदस्य मिसिर बेसरा समेत अन्य माओवादियों का दस्ता पुलिस बलों को टारगेट करने के उदेश्य से जमा है, साथ ही ऑपरेशन के दौरान सुरक्षाबलों को आईईडी के जरिए निशाना बनाया जा सकता है। जानकारी मिलने के बाद 28 मई से ही सीआरपीएफ, कोबरा बटालियन व जगुआर के साथ संयुक्त अभियान शुरू किया गया था। 30 मई को अभियान के क्रम में तिरिलपोसी व उसके सीमावर्ती इलाके में सुरक्षाबलों की टीम पहुंची तो माओवादियों की तरफ से अंधाधुंध फायरिंग होने लगी। सैकड़ों राउंड की फायरिंग के बाद माओवादी जंगल का फायदा उठाकर मौके से भाग गए। तब सर्च के क्रम में चाईबासा पुलिस ने मौके से मोटरोला कंपनी का दो वायरलेस सेट, 155.68 किलोग्राम के प्राइम विस्फोटक समेत अन्य चीजें बरामद की थीं। चाईबासा पुलिस के द्वारा सब इंस्पेक्टर राजेश कुमार यादव के बयान पर प्राथमिकी दर्ज की गई थी। जिसमें अंदेशा जताया गया था कि सुरक्षाबलों को जान माल का नुकसान पहुंचाने के उदेश्य से माओवादियों ने वारदात को अंजाम दिया था। उधर ओडिशा के केवलंग थाना अन्तर्गत बांको स्टोन क्वीरी से भारी मात्रा मे विस्फोटक लदे वाहनको चालक समेत अपहरण माओवादियों ने किया था जिसे झारखंड के गोयलकेरा थाने इलाके में एक माह पूर्व जप्त की गयी थीं । तब सुरक्षा बलों एवं माओवादियों के बीच जोरदार फाइरिंग हुई थी ।सनद रहे कि विस्फोटक सप्लायर श्रवण कुमार अग्रवाल अब जेल में हैं जिस पर भारत सरकार की कई जांच ऐजेन्सियां यहां तक की पोस्तो अफीम खेती विपणन आदि देखने वाली अपने अपने स्तर से जुटी थी ।

मोदी-मोहन और संघ-सत्ता की उलझन में विपक्ष की छटपटाहट

हरीश शिवनानी

एक दशक से दिल्ली की सत्ता से वंचित और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से खुब्नस खाए विपक्षी दलों के मन में एक बार लड्डू फूटने लगे हैं। उन्हें लगने लगा है कि इस बार शायद भाजपा और भारत मोदी मुक्त हो जाएगा। यह लड्डू उनके दिल में फूटा है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत के एक भाषण से,जिसमें उन्होंने 75 वर्ष की आयु में सत्ता छोड़ कर 'बाजू हटने' की बात कही। दिलचस्प यह कि मोदी-खुब्नस में विपक्ष के दल भागवत के भाषण की वास्तविक मीमांसा भी नहीं कर सके कि यह बात भागवत ने किस संदर्भ-प्रसंग और किस भाव से कही थी।

दरअसल भागवत के जिस भाषण पर कॉंग्रेस और शिव सेना और अन्य दल उछल रहे हैं वो भाषण उन्होंने 9 जुलाई को नागपुर में राम जन्मभूमि आंदोलन के प्रेरक दिवंगत मोरोपंत पिंगले पर लिखी पुस्तक 'मोरोपंत पिंगले: द आर्किटेक्ट ऑफ हिंदू रिसर्जेंस' के विमोचन-कार्यक्रम में कही। कार्यक्रम में भागवत ने पिंगले की विनोद-वृति को याद करते हुए कहा, 1993 में संघ की वृंदावन में आयोजित बैठक में हो. वे. शेषाद्री जी ने मोरोपंत जी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर उन्हें सम्मान स्वरूप शॉल ओढ़ाई । इस पर विनोदी स्वभाव के पिंगले ने अपने संबोधन में कहा कि " 75 वर्ष पर आपने सम्मान किया, लेकिन इसका अर्थ मैं जानता हूं। 75 वर्ष की शॉल जब ओढ़ाई जाती है, तब इसका अर्थ यह होता है कि अब आप की आयु हो गई, अब जरा बाजू हो जाओ, हमें करने दो।" भागवत ने यह किस्सा हास-परिहास के अंदाज सुनाया था। न कि किसी नीति के तौर पर। इसमें न तो भागवत के रिटायरमेंट का कोई संकेत है और न ही प्रधानमंत्री मोदी के लिए कोई संदेश। भाजपा के संविधान में पद त्याग करने या रिटायरमेंट की उम्र का कोई नियम नहीं है। ऐसे अनेक दृष्टांत हैं, जब भाजपा के नेताओं ने 75 वर्ष की आयु के बाद पद संभाला है। मोदी के 75 साल की उम्र में रिटायरमेंट को लेकर पहले भी गाहे-बेगाहे राजनीतिक बयानबाजी होती रही है। भाजपा के पहले प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी 2004 में जब पद पर थे तो उनकी उम्र 80 वर्ष और उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी की उम्र 77 वर्ष थी। खुद नरेंद्र मोदी के पहले कार्यकाल में उनके मंत्रिमंडल में उद्योग मंत्री कलराज मिश्र 78 वर्ष के थे। 2021 में केरल विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने पालक्कड़ सीट से 88 साल के टेक्नोक्रेट ई.श्रीधरन को भी मैदान में उतारा था। दूसरी ओर स्वयं कांग्रेस की सर्वोच्च नेता सोनिया गांधी की उम्र 78 और हाल ही राष्ट्रीय जनता दल के पुन: अध्यक्ष चुने गए लालू प्रसाद यादव की उम्र 77 साल है।

उधर, संघ में भी पद छोड़ने की कोई उम्र निर्धारित नहीं है। बालासाहब देवरस, प्रो. राजेंद्र सिंह और के.एस. सुदर्शन 75 वर्ष से अधिक उम्र तक सरसंघचालक रहे। मोहन भागवत भी वर्तमान में दो महीने बाद 75 वर्ष की आयु पूरी कर लेंगे और वे भी पद पर बने रहेंगे। भागवत के इस भाषण और इसके पूर्व भी देश के विपक्षी दल, भाजपा विरोधी बुद्धिजीवी और कांग्रेस इकोसिस्टम के राजनीतिक टिप्पणीकार संघ और मोदी के बीच रिश्तों में खिंचाव को लेकर कपोल-कल्पित और तथ्य-सत्यहीन टिप्पणियों से मोदी और संघ के विरोध तथा 'मोदी-मुक्त भारत' की घोषणा कर चुके हैं। संघ और भाजपा के सम्बंध इतने अटूट हैं कि 1977 में सत्तासीन जनता पार्टी ने जनसंघ के नेताओं से संघ से अपनी सदस्यता समाप्त करने की मांग की लेकिन जनसंघ के नेताओं, जैसे अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी ने इस मांग को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वे संघ को अपनी वैचारिक नींव मानते थे। इस विवाद के बाद जनसंघ ने सत्ता छोड़नी मंजूर की लेकिन संघ से नाता नहीं तोड़ा।

पिछले 35 सालों से बहुमत को तरस रही और गत तीन आम चुनावों में हार से तिलमिलाई कॉंग्रेस मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से सत्ता के लिए बेचैन है। राजनीतिक उच्च परंपराओं और सामाजिक शिष्टाचार को दरकिनार कर इसके नेता विदेशों में जाकर देश और मोदी की निंदा भी करते रहे हैं। कमोबेश यही हाल 'इंडिया' गठबंधन से जुड़े सभी हताश दलों का है।

विपक्ष संघ और भाजपा, मोदी और भागवत के बीच अनबन का नरेशन बनाने की कोशिश में प्रोपेगैंडा फैला रहा है, वे शायद नहीं जानते कि मोदी और भागवत बहुत पुराने दोस्त भी हैं। उनकी दोस्ती हमेशा राजनीति और सत्ता से ऊपर रही है। भागवत के पिता मधुकर राव ने ही मोदी को संघ में प्रशिक्षण दिया था। प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी नागपुर के संघ मुख्यालय भी गए थे, जहाँ मंच पर मोदी और भागवत के बीच की आत्मीयता साफ़ दिखाई दे रही थी। समारोह में मोदी ने संघ के बारे में कहा कि 'यह भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और आधुनिकीकरण का प्रतीक है। यह राष्ट्रीय चेतना को ऊर्जा देता है। संघ मानता है कि मोदी ने संघ के प्रमुख उद्देश्यों, अनुच्छेद 370 हटाने, अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण और समान नागरिक संहिता के स्वप्न को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संबंधों के ऐसी समृद्ध और परिपक्व पृष्ठभूमि के बावजूद विपक्ष और विपक्ष के इकोसिस्टम से जुड़े कथित बुद्धिजीवी और 'राजनीतिक विशेषज्ञ' अगर सितंबर की 11 तारीख को संघ प्रमुख पद से मोहन भागवत और 17 सितंबर को प्रधानमंत्री पद से नरेंद्र मोदी के त्यागपत्र की उम्मीद कर रहे हैं तो यह उनके ख्याली पुलाव और मोदी-मुक्ति की छटपटाहट के सिवाय कुछ नहीं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023